तकरीबन 200 हदीसों का मजमुआ

हदीसों की रौशनी

मौलाना तत्ही [illegible] मद रज़वी बरेलवी

इस्लामी कुतुब ख़ाना
धौंरा ज़िला बरेली (यू.पी.)

إِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ

बेशक अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब अता फरमाता है

पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत "मुहम्मद" मुस्तफ़ा ﷺ के इल्मे ग़ैब, इख़्तियारात, हयात बादे विसाल, सहाबा का इश्क़े रसूल, तबर्रुक, वसीलए अम्बिया व औलिया और फ़ज़ाइले औलिया के बयान व सुबूत में तक़रीबन दो सौ(२००) हदीसौं का मजमूआ

हदीसौं की रौशनी

मुरत्तिब

मौलाना
ततहीर अहमद बरेलवी

नाशिर

इस्लामी कुतुबख़ाना, धौंरा, बरेली

पिन 243204 फोन 2223043, कोड 0581

किताब का नाम	**हदीसों की रौशनी**
उन्वान	अहले सुन्नत के अकाइद की ताईद और हदीसों से उनका सुबूत
मुरत्तिब	**मौलाना ततहीर अहमद बरेलवी**
नाशिर	इस्लामी कुतुबखाना, धौंरा, बरेली , यू०पी०
प्रूफरीडिंग	मौलाना अन्ज़ार आलम, मास्टर मो०आदिल मास्टर मो० इक़रार, मास्टर मो० सईद
कम्पोज़िंग	नूरी कम्प्यूटर, सैलानी, बरेली फोन न० 0581 -2562598 मोबाइलः 9897242545
सने तबाअत	सन २००३ ई
तअदाद	२०००
क़ीमत	**Rs. 100=00**

मिलने के पते :

* कुतुबखाना अमजदिया, मटिया महल, जामा मस्जिद, दिल्ली
* मकतबा रहमानिया रिज़विया, दरगाहे आला हज़रत सौदागरान, बरेली
* क़ाद्रीबुक डिपो, नौमहला मसिजद,बरेली
* क़ाद्री किताब घर, नौमहला मस्जिद, बरेली
* मक्तबए मशरिक़, कांकर टोला, बरेली
* बरकाती बुक डिपो हम्मालीपुरा, कन्नौज यू०पी०
* फय्याजुल हसन बुकसेलर नई सड़क, कानपुर
* रहमानी कुतुबखाना, नाला इस्ट्रीट, मिमयान टोला, बरेली

***

फिहरिस्ते मजामीन

بسم الله الرحمن الرحيم

तमहीदी कलिमात

प्यारे इस्लामी भाइयो! जिस ज़ात ने हर चीज़ को पैदा किया है उसका नाम "अल्लाह" है। वही और सिर्फ वही है सब का ख़ालिक़, मालिक और रोज़ी देने वाला है। उसका कोई शरीक और साझी नहीं। वह बेजोड़ है। सब को उसकी ज़रूरत है। उसको किसी की ज़रूरत नहीं। सब को देता है किसी से लेता नहीं, सब के लिये मौत और फ़ना है वह इससे पाक है, हमेशा से है और हमेशा रहेगा। उसकी हक़ीक़त को कोई जान नहीं सकता। सिर्फ वही इबादत और परस्तिश के ला. .क़ है जो उसके अलावह किसी और की इबादत और पूजा करे वह मुसलमान नहीं है। उसकी मख़लूक़ में इन्सान भी हैं बल्कि इन्सान उसकी अजीब व ग़रीब मख़लूक़ है। इन्सानों की रहनुमाई और हिदायत के लिये उसने कुछ अपने मख़सूस बन्दे हर ज़माने में पैदा फ़रमाये जिन को नबी व रसूल कहते हैं। नबी और रसूलों की गिन्ती एक लाख से भी ज्यादा है। इनमें सब से आख़िरी नबी जिनका लाया हुआ दीन इस्लाम कयामत तक चलेगा। उन का नामे नामी हज़रत "मुहम्मद" हैं। सल्लललाहो अलैहे वसल्लम।

नबियों और रसूलों के लाये हुए दीन पर चलने और दूसरों को चलाने के लिये खुदाये तआला उनकी उम्मतों में कुछ और बन्दे पैदा फरमाता है जिन को औलिया या बुज़ुरगाने दीन कहते हैं।

जिस तरह अल्लाह तआला ने अपनी दूसरी मख़लूकात में सब को एक जैसा नहीं बनाया इसी तरह हज़रात अंबिया व औलिया

को भी आम इंसानों की तरह नहीं बनाया है। इनको बड़ी शान मुक़ाम व मर्तबा अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल व करम से अता फ़रमाया है। मिट्टी भी अल्लाह तआला ने बनाई है और "सोना" भी अल्लाह तआला ने बनाया है। ग़ुलाम भी अल्लाह तआला ने बनाये हैं और आक़ा भी उसी ने बनाये हैं। फ़क़ीर और बादशाह, मंगता और दाता मांगने वाले और देने वाले, पाने वाले और बख़्शने वाले, खाने वाले और खिलाने वाले, मुहताज और मुख़तार सब का बनाने वाला और पैदा करने वाला सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह है।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! जिस तरह मिट्टी और सोने में इतना फर्क़ है कि हिसाब लगाना मुश्किल है, मंगता और दाता में, गुलाम और आक़ा में, फ़क़ीर और बादशाह में मामूली नहीं बड़ा फर्क़ है। इसी तरह अंबिया व औलिया और आम लोगों में भी इतना फ़र्क़ है कि जिस को बयान करना दुशवार है। सही बात यह है कि बनाने वाला सब को अल्लाह तआला है लेकिन उसने अंबिया व औलिया को वह शान व मर्तबा अता फ़रमाया है कि आम लोग अगर मिट्टी हैं तो वह उनके मुक़ाबले में सोने से भी कहीं अशरफ़ व बेहतर हैं। हम गुलाम हैं वह आक़ा, व दाता हम फ़क़ीर हैं वह बादशाह।

कुछ लोग ऐसे ख़्यालात को शिर्क और कुफ़्र और इस्लाम के खिलाफ़ समझते हैं। हांलाँ कि ऐसा अक़ीदा रखना ही इस्लाम है। बल्कि इसी में ईमान का मज़ा है। यह शिर्क और कुफ़्र जब होता जब कि यह कहा जाता कि अल्लाह तआला के दिये बग़ैर उन्हों ने यह मर्तबे खुद हासिल कर लिये हैं। या उन्होंने खुदा से बटवारह कर के पाये हैं और उस के बराबर या साझी और शरीक हो गये हैं। हालाँकि यह सब बातें वह हैं कि इन्हें कोई गंवार से गंवार मुसलमान सोच भी नहीं सकता बल्कि वह उन्हें सुनना भी गवारा नहीं कर सकता।

बात सिर्फ़ यह है कि जिसको जितना दिया सिर्फ़ अल्लाह ही ने दिया अपनी मर्जी और पसंद से दिया उस से कोई ज़बरदस्ती छीन

कर या बाँट कर नहीं ले सकता। हां अपनी मर्ज़ी से जिसको चाहता है जितना चाहता है जो चाहता है अता फरमाता है। यहां तक कि अपने फ़ज़्ल व करम से उस ने अपने कुछ मख़सूस बन्दों को बेमिसल व बेमिसाल बना दिया। मालिक व सरकार बना दिया।ग़ैबदाँ और मुख़्तार बना दिया। और लोगों का इनको आक़ा, दाता, और बादशाह बना दिया। क़ुरआने करीम में खुद इर्शाद फ़रमाता है :

> " तुम फ़रमाओ ऐ अल्लाह! तू ही सारे मुल्क का मालिक जिस को चाहता है अपने मुल्क से अता फ़रमाता है जिस से चाहता है अपना मुल्क छीन लेता है, जिस को चाहता इज़्ज़त देता है और जिस को चाहता है ज़िल्लत देता है। सारी भलाई तेरे क़ब्ज़े में है। तू जो चाहे वह कर सकता है। रात को दिन में दाख़िल फ़रमाता है और दिन को रात में। ज़िन्दे को मुर्दे से लाता है और मुर्दे को जिन्दे से और जिसको चाहता है उस को बेहिसाब अता फ़रमाता है।"

(पारह 3 रुकूअ 10, सूरह आले इम्रान)

खुदाये तआला की मिलकियत की तो यह शान है कि अगर किसी को कुछ देता है तो देने के बाद भी उस का हक़ीक़ी मालिक वही है बल्कि जो चीज़ देता है उस का मालिक वही है और जिस को देता है उस का मालिक भी वही है गोया कि वह मालिकों का भी मालिक है।

इस्लामियात पर नज़र रखने वाले जानते हैं कि एक मुसलमान होने के लिये जिस तरह अल्लाह की इबादत और उसकी पूजा का अक़ीदा रखना ज़रूरीहै इसी तरह अल्लाह वालों से मुहब्बत व अक़ीदत भी ज़रूरी है।

अम्बिया, औलिया और बुज़ुरगाने दीन का इहतराम इन की और हर वह चीज़ जो इनसे निसबत रखे उस की ताज़ीम व तकरीम और पास व अदब ईमान व इस्लाम की जान है। बल्कि ईमान की

हिफ़ाज़त ईमान पर क़ायम रहने और ईमान पर मरने के लिये निहायत ज़रूरी है।

नमाज़, रोज़ा व ज़कात, फ़रायज़ व वाजेबात अहकामे शरअ़ मुसलमान होने के लिये लाज़िम हैं। लेकिन जिनके ज़रिये और वसीले से अल्लाह तआ़ला ने नमाज़ व रोज़ा वग़ैरह दीनी उमूर अता फरमाये हैं इनको भूल जाना,फ़रामोश करना, इनसे अक़ीदत व मुहब्बत न करना बलिक इन की बारगाह में बे अदब हो जाना इन को बड़ा भाई या अपने जैसा इन्सान समझना यक़ीनन इस्लाम दुशमनी और मज़हब से दूरी है।

कभी कभी अम्बियाए किराम या बुज़ुरगाने दीन ने बतौरे आजिज़ी व इन्केसारी खुद अपने बारे में ऐसी बातें भी फरमाई हैं कि हम तुम्हारे भाई हैं या तुम्हारी तरह हैं या तुम भी इन्सान हो और हम भी वग़ैरह तो हमारे लिये हरगिज़ मुनासिब नहीं कि हम भी उनके बारे में वह अल्फ़ाज़ बोलें जो खुद उनहों ने अपने बारे में फरमाये क्योंकि बिला ज़रूरत अपनी शान बयान करना और अपना मुक़ाम बताना अहले फ़ज़्ल व कमाल का तरीक़ा नहीं है।

इस्लाम में तौहीद का मतलब यह नहीं है. कि सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की इबादत करते रहें। इसका ज़िक्र करते रहें और इसी का नाम लेते रहें। बलिक इस्लामी तौहीद यह है कि जिन का ज़िक्र अल्लाह तआ़ला को पसंद है इन का ज़िक्र भी करें और ज़िन से मुहब्बत का उसने हुक्म दिया है उन से मुहब्बत करें और जिन लोगों को मक़ाम व मरतबे उसने अता फ़रमाये हैं उनके मक़ाम व मरतबे पर ईमान लायें।

मख़लूक़ में पहला काफ़िर और ग़ैर मुस्लिम इबलीस शैतान है और वह अल्लाह तआ़ला को न मानने की वजह से काफ़िर नहीं हुआ बल्कि एक अल्लाह वाले यानी हज़रत आदम अलैहिस्सलाम की ताज़ीम न करने की वजह से ख़ारिज अज़ ईमान क़रार दे दिया गया था। उसने तौहीद के मअ़ना सिर्फ अल्लाह तआ़ला की ज़ाहिरी इबादत को

जाना और यह न जाना कि ताज़ीमे आदम का हुक्म भी अल्लाह ने दिया है यानी अगर वह हज़रत आदम की ताज़ीम कर लेता तो यक़ीनन यह खुदाए तआला के हुक्म की बजा आवरी हो जाती और उसी की फ़रमाँबरदारी होती।

आने वाले सफ़हात में आप अहादीसे रसूल सल्लललाहो अलैहे वसल्लम की रोशनी में अम्बियाए किराम और औलियाए एज़ाम की खुदादाद शान व शौकत मुतालआ फरमायेंगे।

आज फ़ितनों और फ़िरक़ों के इस दौर में हर शख़्स की ख़्वाहिश यह रहती है कि मैं बजाये किसी और की बात सुनने के अल्लाह के रसूल पैग़म्बरे इस्लाम सल्लललाहो अलैहे वसल्लम के इर्शादात व फ़रमूदात देखूँ कि आख़िर इस बारे में हुज़ूर ने क्या फ़रमाया है।

आज ऐसे लोगों की तादाद भी काफ़ी है जो अम्बिया और औलिया की शान व मरतबे के क़ायल नहीं। इनके मंसूबात से तबर्रुक इनके यहाँ कोई चीज़ नहीं। ऐसे लोगों की हिदायत और रहनुमाई के लिये मैं ने अहादीस जमा की हैं। मुझ को उम्मीद है कि अहादीस पढ़ कर यक़ीनन वह राहे रास्त पर आ जायेंगे और अम्बिया और औलिये एज़ाम की बारगाहों में बजाये बे अदबी के इन की तारीफ़ व तौसीफ़ के गुन गायेंगे और इनसे मुहब्बत व अक़ीदत को ईमान की जान ख़्याल फ़रमायेंगे।

और अल्लाह ही तौफीक देने वाला है।

ततहीर अहमद बरेलवी

हदीस की तअ़रीफ़ और उस की अहमियत

पैग़म्बरे इस्लाम हज़रत मुहम्मद् मुस्तफ़ा सल्ललल्लाहो अलैहे वसल्लम के क़ौल व फ़िअ़ल और तक़रीर को हदीस कहते हैं। यानी आप जो कुछ फ़रमाते या करते या दूसरे लोग आप की मौजूदगी में कुछ करते या कहते और इस पर आप ख़ामोश रहे इन सब बातों को हदीस कहते हैं।

सहाबए किराम और हज़राते ताबिअ़ीन के अक़वाल व अफ़आल व तक़रीरात को भी उलमा ने हदीस फ़रमाया है।

चूँकि अल्लाह तआ़ला को किसी ने न देखा न ही अल्लाह तआला ने बराहे रास्त किसी से कुछ फ़रमाया बस हुजूर नबी करीम सल्ललल्लाहो अलैहे वसल्लम जो अल्लाह के सच्चे रसूल हैं उन्हों ने जो कुछ फ़रमा दिया उसी को अल्लाह तआ़ला की बात मान लिया गया। गोया कि अल्लाह तआ़ला के मुआ़मिले में आप की ज़ात पर पूरा भरोसा और एतबार और आप की ज़ुबाने पाक और किरदार व तरीक़ए कार का नाम ही इस्लाम व ईमान है और आप की हर बात खुदा की बात है लिहाज़ा हदीस भी कुरआन की तरह बिलवासता कलामे इलाही है।

खुंद खुदाए तआ़ला कुरआने करीम में इर्शाद फ़रमाता है (तरजुमा)" जिसने रसूल की बात मानी, उसने अल्लाह की बात मानी।"

किसी के दिल में किसी की अहमियत व वक़अत व अज़मत जितनी ज्यादा होती है उतनी वह उस की बात को अहमियत देता है और जिस को जिस से जितनी ज़्यादा मुहब्बत व उल्फ़त होती है वह

इतनी ही इसकी फ़रमाँबरदारी और उसके हुक्म की बजा आवरी करता है। गोया कि हुजूर की इत्तबा व पैरवी और आप के बताये हुए रास्ते पर चलने के लिये आप से मुहब्बत व इश्क़ ज़रूरी है।

और जिसको हुजूर से सच्चा इश्क़ और असली मुहब्बत होगी वह आप की नाफ़रमानी कभी नहीं करेगा और वही करेगा जिस से आप राज़ी हैं।

जो लोग ज़ाहिरी नमाज़ रोज़े और अहकामे शरअ के तो क़ायल हैं लेकिन हुजूर से इश्क़ व मुहब्बत की दौलत से इनके दिल ख़ाली हैं वह हरगिज़ राहे रास्त पर नहीं हैं और इन की नमाज़ रोज़े बे रौनक़ रूहानियत से खाली बे दम रिया कारी और दिखावा बन कर रह गये हैं।

और वह लोग जो मुहब्बत व इश्क़ के दावेदार हैं नमाज़ रोज़ा वग़ैरह अहकामे शरअ के पावन्द नहीं हराम व हलाल की तमीज़ नहीं करते, गाने बजाने, तमाशों, फ़िल्मों में रात दिन गुज़ारते हैं, माँ बाप को सताते, लोगों पर जुल्म करते हैं इनके इश्क़ व मुहब्बत व अक़ीदत के दावे सब नाक़ाबिले एतबार हैं। जो सही माना में आशिक़े रसूल होगा वह आप की पैरवी व फ़रमाँबरदारी ज़रूर करेगा और पैरवी व फ़रमाँबरदारी में लुत्फ़ उसी को हासिल होगा जो हुजूर का आशिक़ व दीवाना होगा।

उम्मते मुस्लेमा में हुजूर सल्ललाहे अलैहे वसल्लम के इर्शादात को जमा करने और हदीस की किताबें लिखने का शौक़ अहले इल्म को हर दौर में रहा है। और बेशुमार किताबें इस मुबारक फ़न पर लिखी गई हैं। इन में सब से ज़्यादा मशहूर व मुअतबर किताबें जो आज कल बआसानी कुतुब ख़ानों में दस्तयाब हैं और हर ज़माने में अहले इल्म ने उन को इज़्ज़त व अहमियत दी और इन पर एतबार किया है उनके नाम यह हैं:

"सहीह बुख़ारी, सहीह मुस्लिम जामिअ तिर्मिज़ी,

सुनने अबू दाऊद, सुनने निसाई, सुनने इब्ने माजा, मिश्कातुल मसाबीह। मुअत्ता इमाम मालिक,

आज कल इस्लामी दीनी आलिम बनाये जाने वाले मदरसों के कोर्स में भी यह किताबें दाखिल हैं और सभी मकतबए फ़िक्र के लोग इन्हें पढ़ते और पढ़ाते हैं। *"हदीसों की रोशनी"* नाम की यह किताब जो इस वक्त आप के सामने है मैं ने कोशिश की है कि इस में सारी हदीसें इन्हीं किताबों से जमा की जायें क्योंकि यह किताबें आसानी से मिल जाती हैं और मेरे लिखे हवाले की मदद से हर कम पढ़ा लिखा भी अस्ल किताब में हदीस तलाश कर सकता है। हालाँकि हदीस की मुअतबर मशहूर किताबें और भी हैं मसलन मुस्नद इमाम आज़म अबू हनीफा, मुस्नदे इमाम अहमद इब्ने हंबल, मुसन्नफ अब्दुर रज़्ज़ाक, मुसन्नफ इब्ने अबी शैबा, सुनने दारमी, सुनने दार कुत्नी, सुनन बैहकी, तसानीफे तबरानी वगैरहा। लेकिन यह आज कल खुसूसन हिन्दुस्तान में उमूमन दसतयाब नहीं। लिहाज़ा इन की अहादीस और हवाले मैंने नहीं लिखे हैं। अगरचे इस किताब में अहादीस को जमा करना ही मेरा मक़सद हैं। लेकिन तबर्रुकन कहीं कहीं इस्तदलाल के तौर पर आयाते कुरआनिया भी ज़िक्र कर दी गई है।

नोट: यह किताब (उर्दू) ज़बान में भी छप चुकी है। जो लोग उर्दू जान्ते हैं वुह उर्दू वाला नुस्खा कुतुब खाने से हासिल करें इस्लामी किताबें पढ़ने का जो मज़ा उर्दू में है वह हिन्दी में नहीं। उर्दू किताब में हर हदीस की अरबी इबारत भी लिख दी गयी है जो हदीस की अस्ल किताबों से नक़ल की गयी है।

✲✲✲

इख्तियाराते मुस्तफा सल्ललल्लाहो अलैहे वसल्लम

इस उनवान के तहत हम वह हदीसें जमा करेंगे जिन्हें पढ़ कर पढ़ने वाले को पूरा पूरा यकीन हो जाये कि अल्लाह तआला ने अपने महबूब हज़रत रसूले खुदा मुहम्मद मुस्तफा सल्ललल्लाहो अलैहे वसल्ल्म को सारी कायनात का मालिक व मुख़्तार और बादशाह बनाया है। आप को सारी खुदाई में तसर्रुफ़ का हक खुदाये तआला की तरफ़ से हासिल है। आप जो चाहें वह करें और बेशक आप सरकारे दो आलम हैं और सरवरे कायनात हैं।

यहां इस शक की गुंजाइश नहीं कि जब सब कुछ अल्लाह ने हुज़ूर को दे दिया तो मआज़ल्लाह अल्लाह के पास क्या रह गया। क्योंकि अल्लाह तबारक व तआला की मिल्कियत की शान यह है कि किसी को कुछ अता फरमाने के बाद इस चीज़ का हक़ीक़ी ज़ाती मालिक वही रहता है बल्कि जो चीज़ देता है इस का मालिक भी वही है और जिस को देता है इस का मालिक भी वही है।

यह ऐसा ही है जैसे हम कहते हैं कि यह खेत मेरा है, यह मकान मेरा है तो इस का मतलब यह नहीं कि मआज़ल्लाह वह खेत या मकान खुदाये तआला की हुकूमत व मिल्कियत से निकल गया तब मुझ को मिला, बल्कि मतलब यह होता है कि खुदा का है लेकिन इस ने अपने करम से अता फ़रमा दिया और अता फ़रमाने के बाद भी हक़ीक़ी मालिक हर चीज का खुदा ही है।

हुज़ूर नबी करीम सल्ललल्लाहो अलैहे वसल्लम को अल्लाह तआला ने सारी कायनात का बादशाह, मालिक व मुख़्तार बना दिया तो इसका मतलब यही है कि आप की यह बादशाहत व मिलकियत खुदाये तआला की अता फरमाई हुई और मजाज़ी है और बेशक हक़ीक़ी और

ज़ाती बादशाहत अल्लाह की ही है और वही अहकमुल हाकिमीन है।

कितने बादशाह ऐसे हुए कि इन की हुकूमत दुनिया के बड़े बड़े हिस्सों पर रही बलकि कुछ ने तो सारी दुनिया पर हुकूमत की तो जो अल्लाह तआला का महबूब है और जिस को अल्लाह ने अपनी निशानी और पहचान बना कर भेजा हो अपनी तौहीद के इज़हार के लिये जिस को पसंद फ़रमाया हो उस की हुकूमत अगर सारे आलम पर हो और वह सारी कायनात में मुख़्तार व सुल्तान व बादशाह हो तो इसमें ईमान वालों के लिये कोई तअज्जुब नहीं।

बअज़ आयाते क़ुरआनिया से जो आप के इख़्तियारात की नफ़ी होती है इस का मतलब यह है कि खुदाये तआला के बग़ैर अता फ़रमाये आप को या किसी को कोई इख़्तियार नहीं और खुदाये तआला को अता व देन से हूज़ूर को सारे इख़्तियारात हासिल हैं।

अब आप अहादीसे मुबारका की रोशनी में हुजूर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम के इख़्तियारात मुलाहज़ा फ़रमायें:

हदीस न0 1:

"अक़बा इब्ने आमिर से मरवी है कि हुजूर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं अपने हौज़ को इस वक़्त देख रहा हूँ, और मुझ को तमाम रूये ज़मीन के ख़ज़ानों की कुन्जियाँ दी गई हैं।"

(सहीह बुख़ारी जि01 सफहा179)

(सहीह मुस्लिम जि02 सफहा 250)

इस हदीस में हुज़ूर ने हौज़े कौसर को अपना हौज़ फरमाया गोया आप इसके मालिक हैं और सारी रूये ज़मीन के ख़ज़ानों की कुन्जियाँ खुदाये तआला ने आप को अता फ़रमाई हैं यानी आप दोनों जहाँ में मालिक व मुख़्तार हैं।

हदीस न0 2,

हज़रत अमीर मुआविया ने लोगों को खिताब करते हुए

फ़रमाया कि हुजूर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम को मैं ने यह फ़रमाते हुए सुना है कि अल्लाह तआला जिस से भलाई का इरादा फ़रमाता है इस को दीन में समझ अता फरमाता है और बेशक मैं बाँटने वाला हूँ और अल्लाह देने वाला।

(सहीह बुख़ारी जिल्द1 सफहा 16)

इस हदीस को पढ़ कर खूब रौशन हो गया होगा कि जो कुछ जिस को अल्लाह तआला अता फरमाता है वह सब हुजूर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम तक़्सीम फरमाते हैं और वह आप की चौखट से मिलता है।

जो लोग हुजूर की शान घटाते हैं, उन्हों ने इस हदीस में यह बात पैदा की है कि चूंकि यह हदीस इल्म के बयान में है इस से मालूम होता है कि हुजूर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम सिर्फ इल्म बाँटते हैं और कुछ नहीं। तो ऐसे लोगों से यह मालूम किया जाये कि क्या वह यह कहने की जुरअत करें गे कि खुदाये तआला भी मआज़ल्लाह सिर्फ इल्म अता फ़रमाने पर कुदरत रखता है और किसी पर नहीं। क्योंकि इस हदीस में हुजूर को बाँटने वाला और अल्लाह को अता फरमाने वाला कहा गया है तो अगर हुजूर को बाँटने में सिर्फ इल्म पर इख्तितयार है तो अल्लाह को भी मआज़ल्लाह सिर्फ इल्म देने वाला कहना पड़ेगा। मआज़ल्लाह रब्बुल आलमीन।

हदीस के माना यही हैं कि जो कुछ जिस किसी को अल्लाह तआला अता फरमाता है इस सब के तक़्सीम फरमाने वाले हुजूर हैं और आप अताये इलाही का वसीला हैं।

बुख़ारी ही में दूसरी जगह इसी मफ़हूम की एक हदीस इस तरह मरवी है रसूलुल्ललाह सल्लललाहो तआला अलैहे वसल्लम ने इर्शाद फरमाया "मैं बाँटने वाला हूँ, ख़ज़ानची हूँ और अल्लाह अता फ़रमाने वाला है। (बुख़ारी जिल्द न01 सफहा 439)

हदीस न0 3

हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि अबू तालिब मालदार कुरैश के हमराह मुल्के शाम की तरफ़ चले नबी करीम सल्लललाहो अलैहे वसल्लम भी आप के साथ थे। जब राहिब के पास पहूँचे तो अबू तालिब उतरे और लोगों ने भी अपने कजावे खोल दिये। राहिब उनकी तरफ़ आया और हालांकि इस से पहले वह लोग इस रासते से गुजरते थे लेकिन वह इनके पास नहीं आता था और न इन की तरफ़ मुतवज्जेह होता था। रावी कहते हैं कि लोग अभी कजावे खोल ही रहे थे कि इन के दरमियान चलने लगा यहां तक कि रसूलुल्लाह सल्लललाहो अलैहे वसल्लम के करीब आया और हुजूर का हाथ पकड़ कर कहने लगा कि यह सारी कायनात के सरदार हैं। यह रब्बुल आलमीन के रसूल हैं इन को खुदाए तआला ने सारी मख़लूक के लिये रहमत बनाया है। रूऊसाये कुरैश ने पूछा तुम ने यह बात कैसे जानी वह बोला जब तुम इस घाटी से सामने आ रहे थे तो मैं ने देखा कि हर पेड़ और पत्थर इन को सजदा कर रहा था।

(तिरमिज़ी जिल्द2 सफहा202, मिश्कात सफहा 540)

हदीस न0 4

हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो से मरवी है कि मैं मक्के में हुजूर सल्लललाहो अलैहे वसललम के हमराह था तो हम अतराफ़ शहर की तरफ़ निकले तो मैंने देखा कि जो दरख़्त और पहाड़ हुजूर के सामने आता है वह कहता अस्सलामो अलैक या रसूलुल्लाह। ऐ अल्लाह के रसूल आप पर सलाम हो।

(तिरमिज़ी जि0 2 सफहा 203)

इन हदीसों से मालूम हुआ कि रसूलुल्लाह सल्लललाहो अलैहे वसल्लम सारी कायनात के सरदार व मालिक मु खतार हैं यहां तक कि बेजान मख़लूक पत्थर और पेड़ वग़ैरह आप को मानते पहचानते और सलाम करते हैं क्योंकि सब पर आप की बादशाहत है।

हदीस न05

हज़रत अबू हुरैरा रजियल्लाहों अन्हो फरमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ललालाहो तआला अलैहे वसल्लम की खिदमत में अर्ज़ किया कि मैं आप से बहुत सारी हदीसें सुनता हूँ लेकिन भूल जाता हूँ आप ने फरमाया अपनी चादर फ़ैलाओ। मैंने अपनी चादर बिछा दी। आप ने दोनों हाथों से लप बना कर चादर में कुछ डाल दिया और फरमाया इस को लपेट लो। मैंने चादर को लपेट लिया और इस के बाद मैं कभी कोई बात नहीं भूला। "

(बुखारी जि01 सफहा न0 22)

इस हदीस को देखिये कैसे रूहानी इख्तियारात हैं। और कैसी खुदादा कुदरत है। हुजूर खाली चादर में बज़ाहिर खाली लप बना कर डालते हैं और कैसी बे मिसाल याद-दाश्त अता फरमाते हैं और हुजूर की अता व बखशिश का नतीजा है कि जनाब अबू हुरैरा से जितनी अहादीस रिवायत की गई हैं वह और किसी सहाबी से नहीं।

हदीस न0 6

हज़रत अबू हुरैरा रजियल्लाहो अन्हो से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्ललालाहो अलैहे वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि मैं क्यामत के दिन सारे इन्सानों का सरदार हूँगा।

(बुखरी सफहा470, मुसलिम जि01 सफहा 111)

इस हदीस से मालूम हुआ कि हुजूर सल्ललालाहो अलैहे

वसल्लम की हूकूमत व बादशाहत व सरदारी और सलतनत सिर्फ दुनिया में ही नहीं बल्कि कयामत के दिन भी आप ही का सिक्का चलेगा इसी लिये आप को सरकारे दो आलम और सरवरे कौनैन कहा जाता है।

हदीस न0 7:

हज़रत अनस से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्ललाहो अलैहे वसल्लम ने इर्शाद फरमाया बरोज़ क्यामत सब से पहले मैं निकलूंगा जब लोग वफ़्द बनेंगे तो मैं आगे हूँगा जब लोग खामोश होंगे तो मैं ही ख़िताब करूंगा। जब लोग रोके जायेंगे तो मैं इन की शफ़ाअत करूगा। जब लोग मायूस होंगे तो मैं इन्हें खुशख़बरी सुनाऊंगा। इज्ज़त देना मेरे इख्तियार में होगा और ख़ैर की सारी कुन्जियाँ मेरे हाथ में होंगी।

(मिश्कात स0 514)

इस हदीस में हुजूर का यह फ़रमाना कि इज्ज़त व करामत की सारी कुन्जियाँ मेरे हाथ में होंगी बता रहा है कि आप बरोज़े क्यामत मुख़्तारे कुल होंगे और आप को सारे इख़्तियारात हासिल होंगे क्योंकि कुन्जियाँ मुख़तार के पास होती हैं मजबूर के पास नहीं।

हदीस न08:

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अतीक फ़रमाते हैं कि फ़िर मैंने रसूलुल्लाह सल्लललाहो अलैहे वसल्लम से (अबू राफ़े यहूदी को कत्ल करने और पैर टूटने का किस्सा बयान किया) तो हुजूर ने इर्शाद फ़रमाया अपना टूटा हुआ पैर बिछाओ तो हुजूर ने इस पर हाथ फेरा तो वह जैसा पहले था बिल्कुल वैसा ही हो गया जैसे इसमें कभी कुछ कमी आई ही न थी।

(बुखारी जि02 सफहा 577 मिश्क्वात स0 532)

हदीस न० 9:

हज़रत जाबिर फ़रमाते हैं कि मेरे वालिद फ़ौत हो गये और इन के ऊपर कर्ज़ था तो मैंने नबी-ए करीम सल्ललला‍हो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो कर अर्ज़ की कि मेरे वालिद ने कर्ज़ा छोड़ा है और मेरे पास देने के लिये सिवा खुजूरों के दरख़्तों के कुछ नहीं है और इन की पैदावार से कई साल में भी कर्ज़ पूरा न होगा। आप मेरे साथ तशरीफ़ ले चलें ताकि कर्ज़ ख़्वाह सख़्ती व बदगोई से पेश न आयें। फ़िर हुज़ूर खुजूरों के ढेर के इर्द गिर्द फ़िरे फ़िर दुआ की और दूसरे ढेर के गिर्द फ़िरे फ़िर आप एक ढेरी पर बैठ गये और फ़रमाया कर्ज़ ख़्वाहों को नाप कर देते जाओ यहाँ तक कि सब कर्ज़ ख़्वाहों का सारा कर्ज़ अदा हो गया और उतनी ही खुजूरें बच भी गईं।

(बुखारी स0 506, 580, 322)

हदीस न0 10:

हज़रत अबू हुरैरा फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ललला‍हो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि मैं बरोज़े क्यामत सब इनसानों का सरदार हूँगा और सबसे अव्वल मैं कब्रे अन्वर से बाहर तशरीफ़ लाऊँगा और सब से पहले शफ़ाअत फरमाने वाला और पहला शफाअत कुबूल किया हुआ मैं ही हूँ।

(मुस्लिम जि0 2 बाब तफ़ज़ील नबीएना अला जमीइल ख़लाइक़, इब्ने माजा बाब ज़िक्रुश्शफ़ाअत स0 329, तिरमिज़ी जि0 2 अबवाबुल मनाक़िब स0 202)

इस हदीस की शरह में इमामे अजल नौवी फरमाते हैं हुज़ूर दुनिया व आख़िरत दोनों जहाँ में सारे इनसानों के सरदार हैं लेकिन

हदीस में सिर्फ क्यामत का ज़िक्र इस लिये है कि क्यामत के दिन आप की सरदारी व बादशाहत सब पर जाहिर फ़रमा दी जायेगी और कोई इन्कारी न रहेगा।

हदीस न0 11:

हज़रत अनस रज़ियल्लाहो अन्हो से मरवी है कि नबी करीम सल्लललाहो अलैहे वसल्लम जनाब ज़ैनब से निकाह के नौशा थे तो मेरी माँ उम्मे सुलैम ने खुजूर, घी और पनीर का हलवा बनाया और एक बर्तन में कर के मुझ से कहा कि अनस इस को हुजूर की ख़िदमत में ले जाओ और अर्ज़ करो या रसूलुल्लाह यह मेरी माँ ने आप की ख़िदमत में थोड़ा सा हदिया भेजा है और उन्हों ने आप को सलाम अर्ज़ किया है चुनाँचे मैं गया और मैंने यह कहा। हुजूर ने इर्शाद फ़रमाया इसे रख दो और जाओ। हमारे पास फ़लाँ फ़लाँ को बुला लाओ, जिस का हुजूर ने नाम लिया और उन्हें भी जो तुमको मिले यहाँ तक कि जब मैं वापस लौटा तो हुजूर का घर भर चुका था। हज़रत अनस से पूछा गया कि कितनी तादाद थी उन्हों ने फ़रमाया करीबन तीन सौ लोग थे। फिर मैं ने नबी सल्लललाहो अलैहे वसल्लम को देखा आप ने हलवे पर हाथ रख कर कुछ पढ़ा जो अल्लाह ने चाहा, फ़िर हुजूर दस दस को बुलाने लगे वह इस में से खाने लगे। हुजूर इनसे फरमाते थे अल्लाह का नाम लो और हर शख़्स अपने सामने से खाये। जब सब ने खा लिया तो हुजूर ने मुझ से फरमाया ऐ अनस इस को उठाओ। जब मैंने देखा तो मुझको मालूम नहीं कि जब रखा था तब ज्यादा था या जब उठाया तब ज्यादा था।

(बुखारी जि0 2 किताबुन निकाह, बाबुल हदाया लिल उरूस स0 775, मुस्लिम जिल्द 1 बाब ज़िवाजे ज़ैनब बिन्ते जहश स0 461, मिश्क्वात बाब फ़िल मोअजज़ात स0 538)

हदीस न0 12

हज़रत उबई इब्ने कअब रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फरमाते हैं फिर हुज़ूर ने जब मेरे दिल में पैदा होने वाले वस्वसे को जान लिया तो मेरे सीने पर हाथ मारा जिस से मैं पसीने पसीने हो गया और हालत यह थी गोया कि मैं खुदाए तआला को देख रहा हूँ फिर वह कैफ़ियत ज़ायल हो गई।"

(मुस्लिम जि0 1 सफहा 273)

क्या शाने इख्तियार है हज़रत उबई इब्ने कअब के दिल में कुरआने करीम की चन्द क़िरआत के मुतअल्लिक़ वस्वसा पैदा हो गया था। हुज़ूर ने दिल के इस वस्वसे को फ़ौरन जान लिया और अपनी खुदादाद क़ुदरत से सीने पर हाथ मार कर जलवए इलाही दिखा दिया। और शुकूक व वसवसे की दल दल से निकाल कर ईमान से दिल भर दिया और वह कैफ़ियत ज़ायल फरमा दी।

हदीस न0 13:

हज़रत आयशा सिद्दीक़ा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लललाहो अलैहे वसल्लम ने इर्शाद फरमाया ऐ आयशा अगर मैं चाहूँ तो मेरे साथ सोने के पहाड़ चला करें।

(मिश्कात स0 521)

हदीस न0 14:

हज़रत अनस से मरवी है कि हज़रत जिबरईल हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुए और आप ग़मगीन थे। अहले मक्का की ईज़ा रसानी की वजह से आप का जिस्म लहू लुहान था। हज़रत जिबरईल ने कहा या रसूलुल्लाह क्या आप चाहते हैं कि आप को एक निशानी दिखाऊँ। फरमाया हाँ। उन्हों ने आप के पीछे एक पेड़ की तरफ़ देखा और अर्ज़ किया इस को बुलाइये। हुज़ूर ने बुलाया वह पेड़ आया और

आप की ख़िदमत में खड़ा हो गया। अर्ज़ किया इस को हुक्म दीजिये कि लौट जाये आप ने हुक्म दिया। वह लौट गया। हुज़ूर ने फरमाया "मुझे काफ़ी है।"

(मिश्कात बाबुल मोजज़ात सफहा 541)

यानी हज़रत जिबरईल ने हुज़ूर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम को तवज्जुह दिलाई कि आप मलूल खातिर न हों। आप को अल्लाह ने कायनाते आलम में मुतसर्रिफ़ व मुख़्तार बनाया है। दरख्त भी आप के इशारे पर चलते हैं।

हदीस न0 15

हज़रत जाबिर रजियल्लाहो अन्हो फ़रमाते हैं कि हमने हुज़ूर के साथ सफ़र किया और वसीअ जंगल में ठहरे तो हुज़ूर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम क़ज़ाये हाजत के लिये तशरीफ़ ले गये तो हुज़ूर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम को कोई चीज़ न मिली जिस की आड़ करें। तो हुज़ूर ने जंगल के किनारे पर दो दरख़्त देखे। हुज़ूर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम इन दरख़्तों में से एक के क़रीब तशरीफ़ लाये और इस की शाखों में से एक शाख़ पकड़ कर इस से फ़रमाया कि अल्लाह के हुक्म से मेरी इताअ़त कर, तो वह दरख़्त हुज़ूर के साथ ऐसे चल दिया जैसे मुहार वाला ऊँट अपने चलाने वाले की इताअ़त करता है। यहाँ तक कि आप दूसरे दरख्त के पास तशरीफ़ ले गये तो इस की शाखों में से एक को पकड़ कर फरमाया अल्लाह तआला के हुक्म से मेरी इताअ़त कर।

फ़िर वह भी इसी तरह हुज़ूर के साथ चला। यहां तक कि जब आप दोनों के दरमियान में हुए तो फ़रमाया अल्लाह के हुक्म से मेरे लिये एक दूसरे से मिल जाओ तो वह दरख़्त मिल गये। हज़रत जाबिर कहते हैं कि फ़िर मैं बैठा कुछ सोचने लगा तो जब मैं ने तवज्जुहकी तो देखा कि हुज़ूर

सल्लललाहो अलैहे वसल्लम तशरीफ़ ला रहे हैं और वह दोनों दरख्त एक दूसरे से फ़िर जुदा हो गये हैं और अपनी जगह तनों पर खड़े हैं।

(मुस्लिम शरीफ़, मिश्कात बाबुल मोजज़ात स० 533)

इस हदीस शरीफ़ से खूब वाजिह हो गया कि हुज़ूर को मख़लूकाते इलाहिया में तसर्रूफ़ का हक़ हासिल है। भला सोचिये दरखतों जैसी बे जान बे कान मख़लूक़ को पकड़ कर चलाना फ़िर दोनों को क़रीब करके और मिला कर इन की आड़ से हाजत रफ़ा फ़रमाना फ़िर दोनों को इन की जगह पहुँचा देना यह सब काम उमूरे कायनात में आप के खुदादाद इख्तियारात का पता दे रहे हैं कि आप जो चाहें करें आप की हुकूमत हर शय पर है।

हदीस न0 16:

हज़रत यअ़ला इब्ने मुर्रा से मरवी है कि मैं ने हुज़ूर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम से तीन चीज़ें देखीं। जब कि हम हुज़ूर के साथ चल रहे थे हम एक ऊँट पर गुज़रे जिस के ज़रिये पानी ढोया जा रहा था। जब इस ऊँट ने हुज़ूर को देखा तो वह चीख़ा और हुज़ूर के सामने अपनी गर्दन बिछा कर बैठ गया। हुज़ूर ने फरमाया इस ऊँट का मालिक कहाँ है। वह हुज़ूर के पास आया। फरमाया इस ऊँट को मेरे हाथ बेच दे।उसने कहा हम आप को यूं ही दे देंगे। यह ऐसे घर वालों का है जिस के पास इस के सिवा और कोई ज़रियए मआश नहीं। फरमाया जब तुमने इस का यह हाल बयान किया तो इसने मुझ से शिकायत की कि तुम इस से ज़्यादा काम लेते हो और चारा कम देते हो। तुम इस से अच्छा सुलूक करो।

यअ़ला कहते हैं फ़िर हम चले और एक मंज़िल पर उतरे तो हुज़ूर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम सो गये और एक

पेड़ ज़मीन को चीरता हुआ आया और आप पर साया कर लिया। फ़िर अपनी जगह लौट गया। हुजूर बेदार हुए तो मैं ने आप से ज़िक्र किया। फ़रमाया इस दरख़त ने अपने रब से मुझ को सलाम करने की इजाज़त चाही थी तो इस को इजाज़त मिल गई। फ़िर हम चले तो एक घाट पर गुज़रे तो एक औरत एक बच्चा हुजूर के पास लाई जो पागल था। हुजूर ने इस का नथना पकड़ कर फ़रमाया निकल जा मैं मुहम्मद अल्लाह का रसूल हूँ। जब हम लौटे और इस घाट पर पहूँचे तो इस बच्चे के मुतअल्लिक़ पूछा। इस ने कहा उस की क़सम जिसने आप को हक़ के साथ भेजा है इस के बाद हम ने इस बच्चे में कोई बीमारी न देखी।

(मिश्कात बाबुन फ़िल मोजज़ात स0 540)

इस हदीस से मालूम हुआ कि ऊँट ने आप से शिकायत की। दरख़्त ने आ कर आप को सलाम किया और पागल पन की बीमारी से आप ने फरमाया निकल। यानी सारी मख़लूक आप की रेआया है और सब पर आप की हुकूमत है और आप कायनात के बादशाह हैं।

हदीस न0 17

हज़रत अब्दुर रहमान सुलमी से रिवायत है कि जब बलवाइयों ने हज़रत उस्माने ग़नी रजियल्लाहो अन्हो का मुहासरा कर लिया तो आप अपने मकान के ऊपर रौनक़ अफ़रोज़ हुए और लोगों से फ़रमाया मैं तुम्हें अल्लाह की क़सम दे कर याद दिलाता हूँ कि जब हिरा पहाड़ हिलने लगा था तो रसूल सल्ललल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया ऐ पहाड़ ठहर जा तेरे ऊर नबी सिद्दीक़ और शहीद के अलावा और कोई नहीं।

(तिरमिज़ी जि0 2 सफहा 211)

गोया पहाड़ों पर भी आप की हुकूमत है। अगर हिलते हुए पहाड़ से फरमा दें कि ठहर जा तो वह ठहर जाता है। और इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि हज़रत उस्मान ग़नी के शहीद होने और हज़रत अबू बक्र के शहीद न होने की ख़बर आप को पहले से थी क्यों कि अल्लाह तआ़ला ने आप को ग़ैब का इल्म अता फरमाया है।

हदीस न0 18

हज़रत इब्ने अब्बास फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लललाहो अलैहे वसल्लम के सहाबए किराम बैठे थे फ़िर हुजूर भी तशरीफ लाये और इन से क़रीब हो गये। तो हुजूर ने उन लोगों को कुछ तज़किरा करते सुना। इन में से किसी ने कहा कि हज़रत इब्राहीम को अल्लाह तआ़ला ने अपना ख़लील बनाया। दूसरे साहब बोले अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा से कलाम फ़रमाया, एक और साहब बोले कि हज़रत ईसा कलेमतुल्लाह और रूहुल्लाह हैं। एक और दूसरे ने कहा कि हज़रत आदम को अल्लाह तआ़ला ने बरगुज़ीदा फरमाया। फ़िर हुजूर इनके पास तशरीफ़ लाये और फरमाया मैं ने तुम्हारी बात चीत और तअ़ज्जुब करना सुना। बेशक इब्राहीम ख़लीलुल्लाह हैं और बेशक मूसा अल्लाह से बात चीत करने वाले हैं और बेशक ईसा कलेमतुल्लाह और रूहुल्लाह हैं और आदम बरगुज़ीदा हैं। मगर ख़ूब जान लो कि मैं अल्लाह का महबूब हूँ और यह मैं फ़ख़्रिया नहीं कहता। क्यामत के दिन हम्दे इलाही का झण्डा मेरे ही हाथ में होगा और आदम और इन के अलावा सब मेरे झण्डे के नीचे होंगे और मैं फ़ख्र नहीं करता। और मैं पहला शफ़ाअत फरमाने वाला हूँ और पहला शफ़ाअत कुबूल किया हुआ और मैं पहला वह शख़्श हूँ जो जन्नत की ज़ंजीर हिलायेगा। तब अल्लाह तआला खोलेगा

और पहले मुझको दाख़िल फरमायेगा। मेरे साथ मुसलमान फुक़राअ होंगे। मैं फ़ख्र नहीं करता। सारे अगलों और पिछलों में अल्लाह तआला के नज़दीक सब से ज्यादा इज्जत व मरतबे वाला हूँ और मैं फ़ख्र नहीं करता।

(तिरमिज़ी अबवाबुल मनाक़िब जि02 स0 202)

हदीस न019

हजरत रबीआ़ अस्लमी कहते हैं कि मैं रात को हुज़ूर की ख़िदमत में था। मैं ने हुज़ूर को वुजू के लिये पानी और दीगर सामाने ज़रूरत पेश किया तो हुजूर ने फरमाया जो चाहो वह माँग लो, मैं ने अर्ज़ किया हुजूर जन्नत माँगता हूँ और इसमें आप का साथ। हुजूर ने फरमाया क्या इसके अलावा और भी कुछ माँगना है ? मैंने अर्ज़ किया हुजूर यही चाहिये। फरमाया ज्यादा सजदों से अपने नफ़्स की इस्लाह कर के मेरी मुआवेनत करो।

(मिश्कात सफहा 84, मुस्लिम जि01,सफहा 83)

इस हदीस की शरह करते हुए मौलाना अली क़ारी मक्की अलैहिर रहमा मिरकात शरह मिशकात में फरमाते हैं

यानी हुज़ूर का यह फरमाना कि जो चाहो वह माँगो से पता चलता है कि खुदाए तआला ने आप को अपने ख़ज़ाने में से जो चाहें वह देने का इखतियार दिया है इसी लिये हमारे बुजुरगों ने इस बात को हुजूर की खुसूसियात में से शुमार किया है कि आप जिसको जो चाहें वह अता फरमाते हैं।

(मिरक़ात शरह मिश्कात जिल्द 1 सफहा 550)

यह हदीस बिलकुल साफ़ और वाज़िह है कि जिस में हुजूर के मुख़्तारे कुल होने का जिक्र इतना अयाँ और जाहिर है कि ज़हिन पर जोर देने की भी जरूरत नहीं। यह हदीस उन लागों को बहुत खलती है जो हूज़ूर के इखतियारात की मुखालेफ़त करते हैं। इसी लिये

वह लोग इस हदीस में इधर उधर की तावीलात करते हैं और माना गढ़ कर हुजूर की शान घटाते हैं।

हज़रत रबीआ से हुजूर का यह फरमाना कि जो चाहो वह माँग लो और फ़िर इनका हुजूर से जन्नत माँगना और हुजूर का यह न फ़रमाना कि यह मेरे बस की बात नहीं बलकि अल्लाह से माँगो। बलकि यह फ़रमाना कि और भी जो चाहो माँग लो इन सब से पता चलता है कि अल्लाह तआला ने हुजूर को मालिके जन्नत और कासिमे जन्नत बना दिया है और यह फ़रमाना सजदे ज्यादा किया करो। इस का मतलब सिर्फ़ यह हैं कि जन्नत के वादे पर ग़ाफ़िल हो कर बैठ जाना भी मुनासिब नहीं। बलकि इबादत भी करते रहो।

और तक़रीबन पाँच सौ साल क़ब्ल के मुहद्दिस व शारेह मौलाना अली क़ारी मक्की की शरह "मिरक़ात" की इबारत जो हमने नक़ल की है इस से साफ़ जाहिर हो जाता है कि पहले के उलमा व फुजला इस हदीस से यही मुराद लेते थे। वह ग़ैर जरूरी क़ील व क़ाल पर यक़ीन नहीं रखते थे। बलकि सीधे साधे हदीस के माना पर ही ईमान रखते थे।

हदीस न0 20

हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लललाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया मैं सो रहा था कि ज़मीन के ख़ज़ानों की कुन्जियाँ मेरी ख़िदमत में पेश की गईं और मेरे हाथ में दे दी गईं

(मुस्लिम किताबुल मसाजिद जि01 सफहा 199)

हदीस न0 21

हज़रत अनस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो फ़रमाते है कि हुजूर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम मक़ामे ज़ौराअ में थे कि आप की ख़िदमत में एक बरतन में पानी लाया गया

तो आप ने अपना हाथ बरतन में डाल दिया तो आप की उन्गलियों के दरमियान से पानी फूट पड़ा यहाँ तक कि पूरी क़ौम ने इस से वुजू कर लिया। हज़रत अनस से क़तादा ने पूछा कि आप कितने लोग थे तो उन्हों ने फरमाया तीन सौ या तीन सौ के करीब।

(बुखारी जि01, सफहा 504, मुस्लिम जि0 2 सफा 245)

हदीस न0 22

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर से मरवी है कि हम हुज़ूर के साथ एक सफर में थे कि एक देहाती सामने आया तो जब वह क़रीब होआ तो हुज़ूर ने इर्शाद फरमाया कि क्या तू गवाही देता है कि अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं वह तनहा है उसका कोई शरीक नहीं और मुहम्मद उसके बन्दे और रसूल हैं। वह बोला आप जो कह रहे हैं इसकी गवाही कौन देता है? फरमाया वह काँटेदार दरख़्त और उस दरख्त को हुजूर ने बुलाया। वह जंगल के किनारे पर था। जमीन चीरता हुआ खिदमत में हाज़िर हो गया। हुजूर ने इस दरख़्त से तीन बार गवाही ली। इसने तीनों बार गवाही दी और फ़िर अपनी झाड़ी की तरफ़ लौट गया।

(मिश्कात बाबुल मोजज़ात सफहा 541)

हदीस न0 23

हज़रत बराअ इब्ने आज़िब कहते हैं कि हुदैबिया के दिन हम हुजूर के साथ चौदह सौ लोग थे। हुदैबिया अस्ल में एक कुँए का नाम है। जब हमने इसमें से पानी भरना शुरू किया तो इसमें एक क़तरा भी न बचा। जब हुजूर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम तक यह बात पहुँची तो आप तशरीफ़ लाए

और कुँए की मंडेर पर बैठ गये। फ़िर आपने पानी का एक बरतन मंगाया वजू किया कुल्ली फ़रमाई और दुआ की और बचा हुआ पानी कुँए में डाल दिया। थोड़ी देर में इतना पानी जमा हो गया कि हम और हमारी सवारियाँ सैराब हो गईं।

(बुखारी जि0 2 सफहा 598)

हदीस न0 24

हज़रत जाबिर फ़रमाते हैं कि हुदैबिया के रोज़ लोग प्यास से दोचार हुए और रसूलुल्लाह सल्ललाहो अलैहे वसल्लम के पास एक बर्तन था जिस से वुजू फरमा रहे थे। जब लोग हुजूर की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आपने पूछा क्या मामला है ? लोगों ने कहा या रसूलुल्लाह हमारे पास वुजू करने और पीने के लिये पानी नहीं है। बस यही था जो इस बरतन के अन्दर हुजूर की खिदमत में पेश कर दिया गया। रावी का बयान है कि आप ने बरतन में अपना हाथ डाल दिया तो आप की उंगलियों से चश्मों की तरह पानी फूट निकला तो हमने पिया और वुज़ू किया। रावी कहते हैं मैं ने हज़रत जाबिर से पूछा कि तूम लोग कितने थे उन्हों ने फरमाया अगर सौ हज़ार भी होते तो वह पानी काफ़ी हो जाता। लेकिन हम पंदरह सौ थे।

(बुखारी जि0 2 सफहा598)

हदीस न0 25

हज़रत अनस से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्ललाहो अलैहे वसल्लम ने इर्शाद फरमाया कि अल्लाह के कुछ बन्दे ऐसे है कि अगर वह अल्लाह तआला पर क़सम खा जायें तो अल्लाह तआला उन की बात पूरी फरमा देता है।

(बुखारी जि01 सफहा394, मुस्लिम जि02 सफहा329, तिरमिज़ी जि0 2 सफहा 226, मिश्कात सफहा 579)

जब उम्मत में कुछ ऐसे बन्दगाने खुदा हैं कि अल्लाह तआ़ला उन की बात पूरी फ़रमाता है तो जो उसके महबूब हैं उनका चाहा हुआ क्यों न होगा। यक़ीनन वह जो चाहें करें मालिक व मुख़्तार हैं।

हदीस न0 26

यज़ीद इब्ने उबैद फ़रमाते हैं कि मैंने हज़रत सलमा इब्ने अकवअ़ रज़ियल्लाहो तआ़ला अन्हो की पिन्डली में एक ज़ख़्म का निशान देखा तो मैंने कहा ऐ अबू सलमा यह निशान कैसा है फरमाया मुझ को गज़वाए ख़ैबर में ज़ख़्म आया था। लोग कहने लगे। सलमा का अखिरी वक्त आ पहूँचा है। लेकिन मैं हूज़ूर सल्ललल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हो गया और हुज़ूर ने इस पर तीन मरतबा दम फरमाया तो आज तक इसमें कोई तकलीफ़ नहीं हुई।

हदीस न0 27

हज़रत इब्नुल मुन्कदिर रवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ललल्लाहो अलैहे वसल्लम के ग़ुलाम हज़रत सफ़ीना रज़ियल्लाहो अन्हो रूम की ज़मीन में लशकर से बहक गये या क़ैद कर लिये गये। वह भागते हुए लशकर की तलाश करते थे कि अचानक एक शेर सामने आ गया तो उन्हों ने फ़रमाया कि ऐ शेर मैं रसूलुल्लाह सल्ललल्लाहो अलैहे वसल्लम का ग़ुलाम हूँ। मेरा वाक़िया ऐसा ऐसा हुआ है तो शेर दुम हिलाता हुआ इनके पास आया यहाँ तक कि इनके बराबर खड़ा हो गया। जब कोई आवाज़ सुनता तो उधर चला जाता फ़िर आपके बराबर चलने लगता। यहाँ तक कि वह लशकर तक पहुंच गये और शेर लौट गया।

(मिश्कात बाबुल करामात स0 545)

इस हदीस से मालूम हुआ कि आप की हुकूमत व बादशाहत

जंगल के खतरनाक जानवरों पर भी है और वह आप की निस्बत का ख़्याल रखते हैं और हज़रत सफ़ीना का शेर से घबरा कर हुज़ूर का नाम व निस्बत की दुहाई देना बता रहा है कि सहाबी का अक़ीदा था कि जंगल के जानवर भी रसूलुल्लाह को जानते मानते हैं और हुज़ूर के गुलामों तक कि ख़िदमत करते हैं।

हदीस न0 28

इम्रान इब्ने हुसैन एक सफ़र का हाल बयान करते हुए फरमतो हैं मुझ को हुज़ूर ने चन्द सवारों के हमराह आगे भेज दिया क्योंकि हम सब को सख़्त प्यास महसूस हो रही थी । हम चले जा रहे थे कि हमें एक औरत मिली जो सवारी पर बैठी पानी से भरी मशकों पर पैर लटकाए जा रही थी। हमने इससे दरयाफ्त किया कि पानी कहाँ है। इसने जवाब दिया कि पानी नहीं है। हमने पूछा तुम्हारे घर वालों और पानी के दरमियान कितना फ़ासला है। कहने लगी एक रात दिन का सफ़र। हमने कहा तू रसूलुल्लाह सल्ललाहो अलैहे वसल्लम के पास चल। कहने लगी कौन रसूलुल्लाह। हम इसकी बात सुनी अन सुनी करते हुए इसे नबी करीम सल्ललाहो अलैहे वसल्लम की बारगाह में लाये आप ने भी इससे वही गुफ़तगू फ़रमाई जो हमने की थी। हाँ इतनी बात उसने और बताई कि वह यतीम बच्चों की माँ है। आपने इसकी दोनों मशकों को खोलने का हुक्म दिया। और इन मशकों के उपर अपना मुबारक हाथ फ़ेर दिया। फ़िर हम चालीस प्यासे लोगों ने इस से खूब सैर हो कर पानी पिया और जितने पानी के बरतन और मशकैं हमारे पास थे सब भर लिये। लेकिन हमने ऊँटों को पानी नहीं पिलाया और इसके बावजूद इस औरत की पानी की मशकें अब भी फटी जा रही थीं फ़िर आपने फ़रमाया जो कुछ तुम्हारे पास है इस को ले आओ। चुनाँचे रोटी के टुकड़े

और खुजूरें जमा कर दी गईं ताकि वह अपने घर वालों के लिये ले जाये। (गांव में जाकर) इस औरत ने कहा कि मैं ने आज एक बहुत बड़े जादूगर को देखा है या फ़िर वह नबी है जैसा कि इसके साथी ख़्याल करते हैं। फ़िर इस गांव वालों को अल्लाह तआला ने इस औरत की बदौलत हिदायत दी कि यह खुद भी मुसलमान हो गई और दूसरे लोगों ने भी इस्लाम क़ुबूल किया।

(बुखारी जि01, सफहा 504)

हदीस न0 29

हज़रत अनस से रिवायत है कि हज़रत अबू तलहा ने (हज़रत अनस की वालेदह और अपनी बीवी) उम्मे सुलैम से फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ललाहो अलैहे वसल्लम की आवाज़ में कमज़ोरी महसूस की है। आप ने खाना तनावुल नहीं फ़रमाया है तो क्या तुमहारे पास खाने की कोई चीज़ है उन्हों ने कहा हाँ और चन्द जौ की रोटयाँ निकाल लाईं। फ़िर एक दुपट्टा निकाला और इसके पल्लू में रोटियाँ लपेट दीं। फ़िर रोटियाँ मुझ को देकर इसका एक पल्लू मुझको उढ़ा दिया और मुझको हुजूर की खिदमत में भेज दिया। जब मैं हुजूर की खिदमत में हाज़िर हुआ तो देखा कि हुजूर कुछ लोगों के दरमियान तशरीफ़ फरमा हैं। मैं इनके पास जा कर खड़ा हो गया तो मुझ से हुजूर ने पूछा क्या तुम को अबू तलहा ने भेजा है ? मैंने अर्ज़ किया हाँ। फ़रमाया क्या खाना लेकर भेजा है? मैंने अर्ज़ किया हाँ। फ़िर हुजूर ने अपने साथियों से फ़रमाया सब चलो और सब चल पड़े। मैं भी इनके आगे आगे चल कर हज़रत अबू तलहा के पास आया तो मैं ने इनको बताया कि हुजूर सब लोगों को ले कर आ रहे हैं। तो उन्हों ने अपनी बीवी उम्मे सुलैम

से कहा कि हुजूर सब लोगों को लेकर आ रहे हैं और हमारे पास इनके खिलाने को नहीं है। तो हज़रत उम्मे सुलैम ने कहा अल्लाह व रसूल बेहतर जानते हैं। फ़िर अबू तलहा रसूलुल्लाह सल्ललललाहो तआला अलैहे वसललम के इस्तिक़बाल के लिये निकल पड़े। यहाँ तक कि हुजूर के साथ हो लिये। हुजूर ने अबू तलहा को साथ लिया और इनके घर तशरीफ़ लाये।फ़िर हुजूर ने उम्मे सुलैम से फ़रमाया कि जो कुछ तुम्हारे पास है ले आओ। उन्हों ने वही रोटियाँ हाज़िरे खिदमत कर दीं फ़िर रसूलुल्लाह सल्ललललाहो अलैहे वसल्लम ने इनके टुकड़े टुकड़े करने का हुक्म दिया। और उम्मे सुलैम ने सालन की जगह कुप्पी से सारा घी निकाल लिया। फ़िर हुज़ूर ने इस खाने पर कुछ. पढ़ा जो खुदा ने चाहा। फिर फ़रमाया दस आदमियों को खाने के लिये बुलाओ। जब उन्हों ने खूब सैर हो कर खा लिया और वह चले गये तो हुजूर ने फ़रमाया दस आदमियों को खाने के लिये और बुला लो। चुनाँचे वह भी सैर हो कर चले गये तो फ़रमाया दस को और बुला लो। हज़रत अनस कहते हैं कि इसी तरह पूरी क़ौम ने खाना तनावुल फ़रमा लिया और वह लोग 70 या 80 आदमी थे।

(बुखारी जि0 1 सफहा 505)

इन हदीसों को पढ़ने पर बखूबी वाज़ेह हो जाता है कि औरत की दो मशको पर हाथ फेर कर इनके पानी से सारी क़ौम को सैराब कर देना यहाँ तक कि उन्हों ने अपने मश्कीज़े और बरतन भी भर लिये और चन्द रोटियों से अस्सी आदमियों को शिकम सैर फ़रमा देना महबूबे खुदा की शान हैं और कितने इखतियारात खुदाये तआ़ला ने आप को अता फ़रमाये हैं। यक़ीनन आप बअ़ताये इलाही मुख़्तारे कुल हैं जो चाहें वह करें।

हदीस न0 30

हज़रत जाबिर से मरवी है कि एक शख़्स हुजूर की खिदमत में खाना माँगने आया तो हुजूर ने इसको आधा वस्क़ जौ इनायत फरमाये। वह शख़्स इसकी बीवी और इसके मेहमान इसमें से खाते रहे यहाँ तक कि एक दिन उसने नाप लिया तो वह ख़त्म हो गया तो वह हुजूर की खिदमत में आया।हूजूर ने फ़रमाया अगर तुम नापते नहीं तो खाते रहते और वह बाक़ी रहता।

(मुस्लिम जि02 सफहा 246, मिश्कात सफहा 544)

हदीस न0 31

हज़रत अब्दुल रहमान इब्ने अबी बक्र फ़रमाते हैं कि हम एक मरतबा हुजूर के साथ एक सौ तीस लोग सफ़र में थे। हुजूर ने फ़रमाया क्या तुम में से किसी के पास खाना है। इस वक्त एक आदमी के पास एक साअ़ खाना (आटा) था। इसे गूँध लिया गया। इतने में एक लंबा तड़ंगा मुश्रिक बकरियों को हाँकता हुआ आया। हुजूर ने फ़रमाया बेचोगे या यूँ ही दे दोगे। इसने कहा बेचूँगा । फ़िर आप ने इस से एक बकरी खरीद ली और इसकी कलेजी भूनने का हुक्म दिया। खुदा की क़सम एक सौ तीस लोगों में से हर एक को इस कलेजी से हिस्सा मिला।। जो हाज़िर थे इन्हें दे दिया गया जो ग़ायब थे इनका हिस्सा रख दिया गया। फ़िर बकरी का गोश्त दो कूँडों में निकाला गया। फ़िर हम सब ने खूब पेट भर कर खा लिया। और दो कोंडों में बच भी गया जो हमने ऊँट पर लाद लिया।

(बुख़ारी जि02 सफहा 811, और जि01 सफहा 356, व सफहा 295)

हदीस न0 32

हजरत अनस इब्ने मालिक से मरवी है कि एक दिन मदीने में कुछ ख़तरा महसूस हुआ तो हुजूर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम हज़रत अबू तलहा रज़ियल्लाहो अन्हो के घोड़े पर सवार हो कर निकले। यह घोड़ा बहुत सुस्त रफ़तार था। जब आप वापस तशरीफ़ लाये तो फ़रमाया हमने तुम्हारे घोड़े को दरया की तरह तेज़ रफ़तार पाया। रावी कहते हैं कि फ़िर वह घोड़ा इस क़दर तेज़ रफ़तार हो गया कि कोई घोड़ा इस से आग नहीं जा सकता था।

(बुखारी जि0 1 स0 401)

यानी हुज़ूर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम ने इस घोड़े को जो सुस्त रफ़तार था उस पर सवार हो कर तेज़ रफ़तार और मुक़ाबले में सब से आगे जाने वाला बना दिया।और यह सब अल्लाह तआ़ला की तरफ से है। कि उसने रसूल को यह इखतियार अ़ता फरमाया है।

हदीस न0 33

मक्के वालों ने रसूलुल्लाह सल्लललाहो अलैहे वसल्लम से कहा कि आप कोई मुअ़जिज़ा दिखायें तो हुजूर ने इन्हें चाँद के दो टुकड़े कर के दिखाये यहाँ तक कि उन्हों ने हिरा पहाड़ को चाँद के दो टुकड़ों के दरमियान देखा।

(बुखारी जिल्द 1सफहा न0 546)

इस हदीस से मालूम हुआ कि अल्लाह अज्ज़ व जल्ल ने अपने महबूब को आसमानी दुनिया पर तसर्रुफ़ फ़रमाने का इखतियार दिया है। चाँद के टुकड़े करने से जाहिर है कि आप के इखतियारात और खुदादाद कुदरत तसर्रुफ़ात का अन्दाज़ा लगाना मुश्किल है और वाकई आप मुख़्तारे कुले कायनात हैं।

हदीस न0 34

हज़रत अबू राफ़े से रिवायत है कि मेरे पास

एक बकरी हदिया भेजी गई। मैं ने इसको हाँड़ी में डाला फ़िर रसूलुल्लाह सल्लललाहो अलैहे वसल्लम तशरीफ़ ले आये। फ़रमाया अबू राफ़े यह क्या है? अर्ज़ किया हुजूर बकरी है जो हमको हदिया दी गई है। फ़िर हमने इसको हाँडी में पकाया है। हुजूर ने फ़रमाया ऐ अबू राफ़े हमें एक दस्त दो। मैंने एक दस्त पेश कर दिया। फ़िर फ़रमाया ऐ अबू राफ़े और दस्त लाओ। मैंने पेश कर दिया। वह तनावुल फ़रमाने के बाद फ़रमाया एक दस्त और लाओ। मैंने अर्ज़ किया हुजूर बकरी के तो दो ही दस्त होते हैं तो रसूलुल्लाह सल्लललाहो अलैहे वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया अगर तुम खामोश रहते तो तुम मुझ को दस्त पे दस्त पेश करते। जब तक तुम खामोश रहते (हाँडी में दस्त पैदा होते रहते)

(मिश्कात स0 41)

इस हदीस को पढ़ कर यह कहना ही होगा कि ज़बाने मुस्तफ़ा कुन फ़यकून का मज़हर है। यानी आप के इखतियारात का यह आलम है कि जो फ़रमा दें वह हो जाये कि ख़्वाह आदतन ना मुमकिन और मुहाल ही क्यों न हो।

हदीस न0 35

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लललाहो अलैहे वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया यक़ीन जान लो कि सारी ज़मीन के मालिक अल्लाह व रसूल हैं जल्ल जलालुहू व सल्लललाहो तआला अलैहे वसल्लम।

(बुख़ारी जिल्द 1 सफ़हा न0 449)

सही बुख़ारी की इस हदीस से खूब मालूम हो गया कि अल्लाह अज्ज़ व जल्ल शानुहू जो मालिके हक़ीक़ी है उसने सारी ज़मीन का बादशाह अपने महबूब हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लललाहो तआला अलैहे वसल्लम को बनाया है। इस से खुदाए तआला की बादशाहत

और मिलकियत पर कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता क्योंकि दूसरों की मिलकियत अताई व मजाज़ी है और इस की ज़ाती व हक़ीक़ी। और दूसरौं को अता फ़रमाने के बाद भी हक़ीक़ी मालिक ख़ुदा ही है। बल्कि जो कुछ देता है इस का मालिक भी वही है और जिस को देता है इसका मालिक भी वही है।

हदीस न0 36

हज़रत सय्यदना उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहो अन्हो से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्ललललाहो अलैहे वसल्लम ने इर्शाद फरमाया जिस का मुहाफ़िज़ व निगहबान न हो अल्लाह और रसूल उसके मुहाफ़िज़ व निगहबान हैं।

(तिरमिज़ी जि0 2 सफहा 31,
इब्ने माजा जि0 2 सफहा 201)

हदीस न0 37

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्ललललाहो अलैहे वसल्लम ने सदक़े का हुक्म दिया तो आप से कहा गया कि इब्ने जमील और खालिद इब्ने वलीद और अब्बास इब्ने अब्दुल मुत्तलिब ज़कात नहीं देते। हुज़ूर ने फ़रमाया। इब्ने जमील नाशुक्रा हो गया क्योंकि वह मुहताज व फ़क़ीर था तो अल्लाह और इसके रसूल ने इस को मालदार कर दिया। खालिद से ज़कात माँगना ज़्यादती है। इस ने अपनी जरहें और हथियार राहे खुदा में वक्फ़ कर दिये और अब्बास इब्ने अब्दुल मुत्तलिब तो वह रसूलुल्लाह के चचा हैं इन का सदक़ा इन्हीं पर है और इतना और भी।

(बुखारी जि0 1 सफहा 198)

हदीस 38. अनस रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो से मरवी है कि एक शख़्स हुजूर सल्ललल्लाहो अलैह वसल्लम की ख़िदमत में उस वक्त हाज़िर हुआ जबकि आप मदीने में नमाज़े जुमा के लिये ख़ुतबा दे रहे थे उसने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह बारिश न होने की वजह से सूखा पड़ गया है लिहाज़ा आप अपने रब से बारिश मांगिये। तो हुजूर ने आसमान की तरफ देखा और आसमान पर बादल का नाम व निशान तक न था लेकिन आपने दुआ मांगी तो बादल के टुकड़े एक दूसरे से आकर मिलने लगे और फिर बारिश होने लगी यहां तक कि मदीने की गलियां पानी से भर गयीं और बारिश लगातार अगले जुमे तक होती रही। फिर वही आदमी या कोई और उस वक्त खड़ा हुआ जब हुजूर खुतबा दे रहे थे और अर्ज़ करने लगा या रसूलुल्लाह हमतो डूबने लगे लिहाज़ा अपने रब से दुआ कीजिए कि इस बारिश को रोक ले। हुजूर मुस्कुराये और फरमाया ऐ अल्लाह हमारे इर्द गिर्द बरसा हम पर न बरसा यह दो तीन बार कहा कि बादल छंटने लगे और मदीने के इधर उधर जाने लगे और हमारे आसपास बारिश होने लगी और हमारे ऊपर से हट गई। हज़रत अनस कहते हैं कि यूँही अल्लाह तआला अपने नबी की शान और आपकी बरकत व रहमत और आपकी दुआ की कुबूलियत लोगों को दिखाता है।

बुखारी जिल्द 2 किताबुल आदाब सफहा 900

इस हदीस से यह अच्छी तरह समझ में आ जाता है कि सारी कायनात का खालिक व मालिक हुजूर की मर्ज़ी को नहीं टालता और आपके मूंह से निकली हर बात फौरन पूरी फरमाता है और जिसकी मर्ज़ी खुदा न टाले इसको मजबूर नहीं कहा जा सकता मुख़्तारे कुल कायनात ही कहा जायेगा।

इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि मुसीबत व परेशानी में खुदाये तआला के महबूब बन्दों की बारगाहों में हाज़िर होना और बारगाहे खुदा वन्दी में इनको वसीला बनाना जायज़ है। वरना दुआ खुद भी मांगी जा सकती है इनसे दुआ कराने का मतलब वसीला नहीं तो और क्या है

❏❏❏

रसूलुल्लाह ﷺ

सिर्फ़ क़ानून जानने वाले नहीं बल्कि क़ानून बनाने वाले भी हैं

बादशाह अपने मुल्क में रिआया के लिये जो चाहता है क़ानून नाफ़िज़ करता है और क़ाज़ी या जज और वकील इस क़ानून को सीखते पढ़ते हैं और इस के मुताबिक़ फ़ैसले करते और करवाते हैं और हुक्काम व उम्माल बादशाह के बनाये हुए कानूनों पर अमल कराते हैं।

अल्लाह तआ़ला ने अपने रसूल को जजों और वकीलों की तरह सिर्फ कानून सीखने और जानने वाला नहीं पैदा फरमाया बल्कि आप को मुकम्मल तौर पर साहिबे इखतियार बनाया और कायनाते आलम में तसर्रुफ़ फरमाने वाला बादशाह बनाया और आप जो फ़रमायें वह क़ानूने खुदावन्दी है जो करें वही अल्लाह की मर्ज़ी है। आपके क़ौल व फिअ़ल का नाम इस्लाम है। शरीअत व तरीक़त हक़ीक़त व मारफ़त सब आप ही आप हैं। आप मुसलमान भी हैं और इस्लाम भी आप। मोमिन भी और ईमान भी। सल्लललाहो तआ़ला अलैहे व बारिक व सल्लिम।

अब आइये इस अकीदे से मुतअल्लिक़ अहादीस भी मुलाहिज़ा फ़रमायें:

हदीस न01

हज़रत उमारा इब्ने खुज़ैमा अपने चचा जो सहाबी हैं इन से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लललाहो अलैहे वसल्लम ने एक देहाती से घोड़ा खरीदा। हुजूर उस को

अपने पीछे लेकर चले ताकि इसको घोड़े की क़ीमत दे दें। हुज़ूर तो तेज़ चल रहे थे वह धीरे धीरे चल रहा था तो लोगों ने आराबी से घोड़ा खरीदने के लिये भाव करना शुरू कर दिया और इन्हें मालूम न था कि इस घोड़े को रसूलुल्लाह खरीद चुके हैं तो इस देहाती ने हुज़ूर को पुकार कर कहा कि आप घोड़ा खरीद रहे हैं या फ़िर मैं इस को फ़रोख़्त करूँ तो हुज़ूर उसकी बात सुन कर ठहर गये और फ़रमाया क्या तूने यह घोड़ा मेरे हाथ फ़रोख़्त नहीं किया। देहाती बोला मैं ने तो नहीं बेचा है। हुज़ूर ने फ़रमाया यह कैसे हो सकता है यह घोड़ा तो तू मेरे हाथ फ़रोख़्त कर चुका है तो वह देहाती गवाह तलब करने लगा। हज़रत खुज़ैमा ने फ़रमाया मैं गवाही देता हूँ कि तू इस घोड़े को रसूलुल्लाह के हाथ बेच चुका है। तो हुज़ूर ने हज़रत खुज़ैमा से फ़रमाया तुमने बग़ैर देखे कैसे गवाही दे दी । खुज़ैमा बोले या रसूलुल्लाह हम आप को सच्चा जानते हैं आप पर ईमान रखते हैं तो रसूलुल्लाह सल्ललललाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत खुज़ैमा की गवाही दो गवाहों के बराबर कर दी।

(अबू दाऊद किताबुल कज़ा स0 508)

यानी हुज़ूर ने अपने इखतियारात से हज़रत खुज़ैमा की गवाही अकेले दो गवाहों के बराबर कर दी। शरह में है हज़रत सय्यदना सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहो अन्हो के ज़माने में क़ुरआन जमा किया गया तो कातिबे कुरआन हज़रत ज़ैद इब्ने साबित क़ुरआन इस वक़्त तक नहीं लिखते थे जब तक दो लोग इस की गवाही न दें लेकिन सूरह बराअत की आखिरी आयात सिर्फ अकेले हज़रत खुज़ैमा के कहने पर कुरआन में लिख दी गईं। और आयते रजम इस लिये नहीं लिखी गई कि वह अकेले हज़रत उमर के पास थी और इन के साथ कोई दूसरा इस के कुरआन होने का गवाह न था।

(मिरक़ातुस्सऊद शरह अबू दाऊद)

हदीस न0 2

हज़रत अबू हुरैरा से रवायत है कि हम लोग हुजूर की ख़िदमत में एक बार हाज़िर थे कि एक शख़्स आया और उसने कहा या रसुलुल्लाह मैं तबाह हो गया।

हुजूर ने इर्शाद फ़रमाया क्या बात है। कहने लगा मैं ने रोज़े की हालत में अपनी बीवी से सुहबत कर ली। हुजूर ने इर्शाद फ़रमाया क्या तू एक ग़ुलाम आज़ाद कर सकता है ? कहा नहीं। फ़रमाया क्या तू दो महीने के रोज़े रख सकता है कहने लगा यह भी मेरे बस की बात नहीं। हुजूर ने फ़रमाया तू साठ मिस्कीनों को दोनों वक्त खाना खिला सकता है बोला यह भी मेरे बस से बाहर है। रावी कहते हैं फिर कुछ देर हुजूर ठहरे कि एक साहब ने हुजूर की ख़िदमत में बतौरे हदिया एक टोकरा खुजूरें पेश कीं आप ने क़ुबूल फ़रमाई और फ़रमाया मसअला पूछने वाला कहाँ हैं। उसने कहा मैं हूँ। फरमाया यह ले जा और ख़ैरात कर दे। वह कहने लगा या रसुलुल्लाह क्या अपने से ज़्यादा ज़रूरतमंद को दूँ ? क़सम खुदाए तलाआ की मदीने शारीफ़ में मेरे घर से ज़्यादा मुहताज व ज़रूरतमंद कोई घराना नहीं। हज़रत अबू हुरैरह फ़रमाते हैं उस की यह बात सुन कर हुजूर मुस्कुराए यहां तक कि हमने आप के मुबारक कीले (नोकीले दाँत) देख लिये। हज़रत ने फ़रमाया जा और अपने घर वालों को खिला दे।

(बुख़ारी जि0 1 सफ़हा 259, मुस्लिम जि0 1 सफ़हा 354, मिश्कात सफ़हा 176)

इस्लाम में कसदन रोज़ा तोड़ने वाले की सज़ा एक ग़ुलाम आज़ाद करना या लगातार साठ रोज़े रखना या साठ मिसकीनों को खाना खिलाना हैं लेकिन रसूलुल्लाहा को अल्लाह तआला ने यह इख़्तियार अता

फ़रमाया है । आप ने इस शख़्स के लिये सब मआ़फ़ कर दिया और हदये में मिली हुई खुजूरें उसे अता फ़रमा दीं। वह भी बाँटने के लिये नहीं। बल्कि खाने और घर वालों को खिलाने के लिये।

हदीस न0 3

हज़रत बराअ़ फ़रमाते हैं कि मेरे एक मांमूँ जिन का नाम अबू बुरदा था उन्हों ने ईद की नमाज़ से पहले .कुरबानी कर दी तो उनसे रसूल सल्ललल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इशार्द फ़रमाया तुम्हारी वह .कुरबानी तो गोश्त हो गई। (यानी कुरबानी का सवाब नहीं मिलेगा) तो उन्हों ने अर्ज़ किया या रसुलुल्लाह मेरे पास एक पला हुआ ६ माह का बकरी का बच्चा है। उसकी कुरबानी कर दूँ ? हुजूर ने इर्शाद फ़रमाया इस की कुरबानी कर दो। लेकिन यह इजाज़त सिर्फ तुम्हारे लिये है। तुम्हारे अलावा किसी 'और के लिये ६ माह का बकरी का बच्चा काफ़ी नहीं है।

(बुख़ारी जि0 2 स0 833)

यानी हुजूर सल्ललल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपने ख़ुदादाद इखतियार से जनाब अबू बुरदा के लिये सिर्फ़ ६ माह के बकरी के बच्चे की कुरबानी जायज़ फरमा दी। लेहाज़ा मानना पड़ेगा कि बेशक अल्लाह तआला ने अपने रसूल को मुख़तार बना कर भेजा है मजबूर नहीं।

हदीस न0 4:

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो ने रसूल उल्लाह सल्ललल्लाहो अलैह वसल्लम की शान बयान करते हुये हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने रवाहा के कुछ अशआर पढ़े जो बुखारी में लिखे हैं उनका तरजमह यह है।

हमारे दरमियान अल्लाह के रसूल हैं जो हमें खुदा की किताब पढ़कर सुनाते हैं जिस वक्त दिन निकलता होता है।

हम गुमराह थे तो उन्होंने हमें रास्ता दिखाया तो हमारे

सल्ललाहो अलैहे वसल्लम ने मुझ को और जुबैर को रौज़ए ख़ाख़ की तरफ़ रवाना किया और फरमाया कि इस बाग़ में जाओ वहां तुम्हें एक औरत मिलेगी जिस को हातिब ने एक ख़त दिया है। हज़रत अली कहते हैं कि हम गये और उस औरत से हमने ख़त मांगा। वह बोली कि मुझ को हातिब ने कोई ख़त नहीं दिया है। तो हमने कहा कि खत निकाल कर दे दो वरना हम तुम को नंगा करेंगे तो उसने अपने जूड़े में से वह ख़त निकाल कर दिया।

(बुखारी शरीफ़ सफहा 433, मिश्कात सफहा 577)

यह ख़त हज़रत हातिब ने बतौरे जासूसी अहले मक्का को हुजूर सल्ललाहो अलैहे वसल्लम के बअ़ज़ अहवाल और इरादों से बाख़बर करने के लिये लिखा था लेकिन हुज़ूर ने इस को जान लिया और हज़रत अली और हज़रत जुबैर को रौज़ए ख़ाख़ में ले जाने वाली औरत को गिरफ़तार करके वह ख़त मंगा लिया। आप को यह भी मालूम था कि वह औरत कब मदीना से रवाना हुई और अब कहां होगी। और हज़रत अ़ली और ज़ुबैर जब इसका पीछा करेंगे तो इसको कहां पायेंगे। यह सब आप के पेशे नज़र था इसी लिये आप ने फरमाया कि फ़लां बाग़ में तुम को एक औरत मिलेगी और हज़रत अ़ली और हज़रत ज़ुबैर को हुज़ूर के इल्मे ग़ैब पर इस क़दर यकीन था कि आप के बताने से वह औरत को नंगा करने पर भी आमादा हो गये थे।

हातिब बदरी सहाबी हैं। उन्हों ने ऐसा इस लिये किया था कि इनके अहल व अयाल मक्का मुअज्ज़मा में रह गये थे तो उन्हों ने चाहा कि इसके ज़रिये से वह अहले मक्का को खुश कर दें ताकि इनके अहल व अयाल महफूज़ रहें।

उन्हों ने यह उज्र पेश करते हुए बारगाहे रिसालत में यह भी अर्ज़ किया था कि या रसूलुल्ललाह सल्ललाहो अलैहे वसल्लम मैं जानता हूँ कि मेरे इस ख़त से अहले मक्का को कोई फायदा न होगा इन पर जो ख़ुदा का अज़ाब आना है वह आयेगा। और ख़ुदाये तआ़ला आप को ज़रूर इनपर ग़लबा नसीब फरमायेगा। रसूलुल्लाह सल्ललाहो अलैहे वसल्लम ने हातिब का उज़्र क़ुबूल फरमाया और इन की ख़ता माफ़ कर दी थी।

हदीस न0 38:

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ियल्लाहो अन्हो फरमाते हैं कि करकरा नाम का एक शख्स नबी करीम सल्लललाहो अलैहे वसल्लम के अस्बाब की हिफ़ाज़त पर मुअय्यन था। जब इसका इंतक़ाल हुआ तो रसुलुल्लाह सल्लललाहो अलैहे वसल्लम ने इर्शाद फरमाया वह जहन्नमी है। लोग इस की वजह तलाश करने लगे तो इसके सामान में एक इबा पाई जो उसने माले ग़नीमत से चुरा के रख ली थी।

(बुखारी जि0 1 सफहा 432)

यानी आपने यह भी जान लिया कि वह जहन्नम में है और यह भी कि वह जहन्नम में क्यों है और जो कपड़ा उसने माले ग़नीमत से चुराया था ग़ैब जानने वाले नबी से वह छुपा हुआ न था।

हदीस न0 39

हज़रत सफीना रज़ियल्लाहो अन्हो से रवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लललाहो अलैहे वसल्लम को यह फरमाते सुना कि ख़िलाफ़त मेरे बाद तीस साल रहेगी फिर बादशाहत होगी। रावी हदीस हज़रत सफीना कहते हैं कि हज़रत अबू बक्र की खिलाफ़त को दो साल शुमार करो, दस साल हज़रत उमर, बारह साल हज़रत उस्मान , और छः साल हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अनहुम अजमईन।

(मिश्कात सफहा 463, तिर्मिज़ी जि0 2 सफहा 45)

यानी हज़रत सफीना रजियल्लाहो अन्हो ने हदीस बयान फरमाने के बाद यह भी शुमार कर के दिखा दिया कि वाक़ई ख़िलाफ़त सिर्फ ३० साल रही और बाद में बादशाहत हो गई। और हुज़ूर ने अपने इल्म मा काना व मा यकून से जो कुछ फरमाया वह मिन व अन दुरुस्त हो कर रहा।

हदीस न0 40:

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहो अन्हो से मरवी है कि

एक बार हुजूर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम ने हमको ज़ुहर की नमाज़ पढ़ाई और सब से पिछली सफ़ में एक आदमी था जिस ने ठीक से नमाज़ नहीं पढ़ी तो जब हुजूर ने सलाम फेरा तो उस शख़्स को नाम लेकर पुकारा और फरमाया ऐ फुलाँ क्या तू अल्लाह से नहीं डरता ? यह तू कैसे नमाज़ पढ़ता है। क्या तुम लोग यह ख़्याल करते हो कि तुम्हारे आमाल में से मुझ से कुछ छुपा रहता है?

क़सम अल्लाह रब्बुल इज्ज़त की मैं जैसे अपने सामने देखता हूँ वैसे ही पीछे भी देखता हूँ। इस हदीस को इमाम अहमद ने रिवायत किया।

(मिश्कात बाब सिफतिस्सलात सफहा 77)

सबसे पिछली सफ़ में होने का मतलब यह है कि सरकार सल्लललाहो अलैहे वसल्लम में और उसमें काफ़ी फासला था। उस ज़माने में हर मुसलमान नमाज़ी था। मस्जिदे नबवी शरीफ़ नमाज़ियों से भर जाती थी। फिर भी आप ने उस की नमाज़ की कमी को मुलाहज़ा फरमा लिया। फिर सराहत फरमा दी कि तुम्हारी हर हालत मेरे ऊपर रौशन है।

हदीस न0 41:

हज़रत मआज़ इब्ने जबल से मरवी है कि जब उनको रसूलुल्लाह सल्लललाहो अलैहे वसल्लम ने यमन के लिये हाकिम बना कर भेजा हुजूर खुद उनके साथ वसीयत फरमाते हुए इनके साथ निकले ।हज़रत मआज़ सवारी पर थे और हुजूर उनके साथ कजावे के नीचे पैदल चल रहे थे। जब फ़ारिग़ हुए तो हुजूर ने इर्शाद फरमाया ऐ मआज़ इस साल के बाद तुम मुझ से मुलाक़ात न कर सकोगे और तुम्हारा गुज़र अब मेरी क़ब्र और मस्जिद के पास से होगा तो हज़रत मआज़ हुजूर की जुदाई से घबरा कर रोने लगे। फिर हुजूर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम वापस हुए और अपना चेहरा मदीना की तरफ़ किया और फरमाया कि मुझ से ज्यादा करीब वह लोग हैं जो तक्वा

और परहेज़गारी वाले हैं वह कोई हों और कहीं भी हों।

(मिश्कात किताबुर रिक़ाक़ सफहा 445)

यानी हुजूर ने बता दिया कि हम अन्क़रीब विसाल फरमा जायेंगे और हमारा विसाल मदीना मुनव्वरा में होगा। हमारी क़ब्र मस्जिदे नब्वी शरीफ़ में होगी।हज़रत मुआज़ हमारी जिंदगी में वफात न पायेंगे और वह हमारी कब्र पर हाज़िर होंगे।

इस हदीस के होते हुए यह कहना कि अल्लाह तआला ने इत्ना इल्म किसी को अता नहीं फरमाया कि वह जान ले कि कौन कब मरेगा और कहां मरेगा सख़्त नादानी और हदीस की मुखालिफत है।

हदीस न0 42:

हजरत अबू ज़र रज़ियल्लाहो अन्हो से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्ललललाहो अलैहे वसल्लम ने इर्शाद फरमाया कि तुम लोग मिश्र को फ़तह करोगे। यह एक ऐसी ज़मीन है जहां क़ीरात रायज है तो जब तुम मिश्र फ़तह करो तो वहां के लोगों के साथ अच्छा सुलूक करो क्योंकि इन का हक़ है और रिश्तेदारी तो जब यह देखो कि वहां दो आदमी एक ईट जगह के लिये झगड़ा कर रहे हैं तो तुम वहां से चले आना। हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहो अन्हो फरमाते हैं मैने देखा कि अब्दुर रहमान इब्ने शरजील और उसका भाई एक ईंट जगह के लिये झगड़ रहे हैं तो मैंने मिश्र छोड़ दिया।

(मुस्लिम शरीफ़ जि0 2 सफहा 211)

यानी हुजूर ने यह भी फरमा दिया कि मिश्र फ़तह हो जायेगा और यह भी कि वहां दो आदमी एक ईंट जगह के लिये झगड़ा करेंगे और जो हुजूर ने फरमाया वह सब हो भी गया।

हदीस न0 43:

हज़रत आयशा से मरवी है कि नबी पाक सल्ललललाहो अलैहे वसल्लम जब अलील हुए हज़रत फातिमा हाज़िर हुईं और आप पर झुक गईं। आप का बोसा लिया फिर सर उठाया और रो पड़ीं। दोबारा झुकीं और सर उठाया तो हंस

रही थीं। हज़रत आयशा कहती हैं कि मैंने दिल में ख़्याल किया कि मैं तो फातिमा को औरतों में सब से ज्यादा अक्लमंद समझती थी मगर वह तो आम औरतों की तरह हैं।

जब हुजूर का विसाल हो गया तो मैं ने इन से मालूम किया कि बताओ तो सही कि जब आप नबि-ए करीम सल्ललाहो अलैहे वसल्लम पर झुकीं और सर उठाया तो रो रहीं थीं फिर दोबारा झुक कर सर उठाया तो हंस रही थीं। इस की क्या वजह थी। हज़रत फातमा ने फरमाया लो मैं अब राज़ फ़ाश किये देती हूँ। हुजूर सल्ललाहो अलैहे वसल्लम ने मुझ को बताया कि मेरा इसी मर्ज़ में विसाल हो जायेगा तो मैं रो पड़ी । फिर बताया कि अहले बैत में तुम सब से पहले मेरे पास आओगी तो मैं हंस पड़ी।

(तिर्मिज़ी जि0 2 सफहा 227 मिश्कात स0 568, मिश्कात में इस हदीस को मुत्तफ़क़ अलैह कहा है यानी बुखारी मुस्लिम दोनों में है)

यानी हुजूर सल्ललाहो अलैहे वसल्लम ने हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा को अपने विसाल से भी मुत्तला फरमा दिया कि मैं इस मर्ज़ में दुनिया से चला जाऊँगा। और हज़रत फातिमा के विसाल से भी कि अहले बैत में तुम सब से पहले मेरे पास आओगी। और वाक़ई हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा हुजूर सल्ललाहो अलैहे वसल्लम के वाद सिर्फ छः माह दुनिया में रहीं।

नाज़ेरीन मौके की मुनासिबत से कुरआने करीम की उन चन्द आयात करीमा को भी मुलाहिज़ा फरमा लें कि जिस में अन्बियाए किराम अलैहिमुस्सलाम के लिये इल्म ग़ैब का ज़ाहिर सुबूत है कि सूरज का इन्कार हो सकता है मगर इन आयात को मद्दे नज़र रखते हुए और इन पर ईमान रखते हुए रसूलाने इज़ाम अलैहिमुस्सलाम के इल्मे ग़ैब का इन्कार नहीं हो सकता।

(आयत 1 पारा 4 रुकूअ 9 सूरा आले इम्रान में है :

"अल्लाह की शान यह नहीं है कि तुम सब को इल्मे ग़ैब अता

फरमा दे हां अल्लाह तआला चुन लेता है अपने रसूलों में जिस को चाहे।

आयत 2 पारा 29 रुकूअ 12 सूरह जिन्न में है

"ग़ैब का जानने वाला अपने ग़ैब पर किसी को मुसल्लत नहीं करता। सिवाये अपने पसंदीदा रसूलों के।

आयत 3 पारा 30 रुकूअ 6 सूरह तकवीर में है

" और यह नबी ग़ैब बताने में बख़ील नहीं।"

पारा न0 5 रुकूअ न014 में है।

"और तुम्हें सिखा दिया जो कुछ तुम नहीं जानते थे और अल्लाह का फ़ज़्ल तुम पर बड़ा है।"

इसके अलावा क़ुरआने करीम की तक़रीबन ५० से ज़ायद आयात हैं जो अम्बियाए किराम अलैहिस्साम बिल खुसूस सय्यदुल अन्बिया हुजूर अहमदे मुजतबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ललललाहो अलैहे वसल्लम के इल्मे ग़ैब को साबित करती हैं। मगर हमने इन सब को छोड़ कर सिर्फ इन चन्द आयात पर इक्तफ़ा किया क्यों कि जिसके दिल में जर्रा बराबर खुदा का खौफ़ बाक़ी है जिसे थोड़ी सी भी जहन्नम की आग से नजात हासिल करने की फ़िक्र है जिस की मरने के बाद अपने अन्जाम पर नज़र है इसके लिये कुरआन की एक आयत या एक हदीसे रसूल सल्ललललाहो अलैहे वसल्लम ही बहुत काफ़ी है और जिसने यह समझ लिया है कि मुझ को दुनिया ही में सब दिन रहना है इस के लिये दफ़्तर बेकार हैं।

रसूलुल्लाह सल्ललललाहो अलैहे वसल्लम के इल्मे ग़ैब के सुबूत में दलाइल की इस क़दर कस्रत है कि आला हज़रत मौलाना अहमद रज़ा खां बरेलवी रहमतुल्लाह ने खास इस मौज़ूअ पर कई किताबें लिखीं।

इन किताबों में आप को मसअलए इल्मे ग़ैब से मुतअल्लिक़ हज़ारों दलाइल मिलेंगे। बेशुमार कुरआनी आयात व अहादीस करीमा अक़्वाले मुफ़स्सेरीन व बुजुरगाने दीन का जलवा आप देखेंगे।

कुछ लोग कह देते हैं कि हुजूर सल्ललललाहो अलैहे वसल्लम को ग़ैब नहीं दिया गया था बलिक कभी कभी किसी ज़रूरत के पेशे नज़र कोई ग़ैबी बात वही के ज़रिये बता दी जाती थी। यह बात यक़ीनन ना

मुनासिब है। हमारी पेश करदा हदीसें और कुतुबे अहादीस में मौजूद दूसरी सैकड़ों अहादीस हुजूर पाक सल्लललाहो अलैहे वसल्लम की सदहा पेशीन गोईयां क़यामत की अलामात बताना और इन सब का सादिक़ आना जब आप मुलाहिज़ा फरमायेंगे तो आप को मालूम होगा कि यह कभी कभी की बात नहीं बल्कि जिंदगीए पाक में सरकार की मजलिसों में अक्सर आप की ज़बान से ग़ैबी उमूर का इज़हार होता रहता था। घर में मस्जिद में मैदान जंग में उठते बैठते आते जाते अकसर व बेशतर ढकी छुपी और आइन्दा की बातें आप बताते रहते थे।

अगर यह सब कुछ वही से होता तो यह मानना पड़ेगा कि हर वक्त आप पर वही नाज़िल होती रहती थी। तो फ़िर सीधे सीधे यही क्यों न मान लिया जाये कि आप के परवरदिगार ने आप को कायनात का मुशाहिदा करने वाली आंखें दूर व नज़दीक के सुनने वाले कान और ग़ैब को जानने वाला दिमाग़ अता फरमा दिया था और आप को दुनिया से तशरीफ़ ले जाने से क़ब्ल मा कान व मा यकूनो का आलिम बना दिया था।

और रही यह बात कि आप का किसी वक़्त किसी बात को न बाताना या किसी से पूछना जैसा कि ऊँटनी और हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रजियल्लाहो तआला अन्हा के हार का क़िस्सा तो यह सब कुछ किसी मसलेहत की वजह से भी हो सकता है। और बेतवज्जुही की बुनियाद पर भी। हम देखते हैं कि कोई शख़्स किसी गहरी सोच में हो और इसके सामने से जाने पहचाने इनसान जानवर चरिन्द परिन्द गुज़र जाते हैं इस के पास बैठे लोग बातें करते रहते हैं लेकिन जब उन से पूछा जाता है कि कौन कौन इधर से गुज़रा और क्या बातें हुईं तो वह नहीं बता पाता। क्योंकि इस का ध्यान इधर नहीं था वह किसी और सोच में था। इस किस्म के मुशाहिदात रोजाना होते रहते हैं। दुनिया और उसके मुतअल्लिक़ात में लोग इस कदर डूब जाते हैं कि इन्हें सामने और करीब के हालात का पता न चल सके तो अम्बिया ए किराम और औलिया ए इज़ाम का अल्लाह रब्बुल इज्ज़त की ज़ात व सिफ़ात में इस्तिगराक़ और आलमे

मलकूत की सैर में दुनिया की किसी बात की तरफ़ से बे तवहज्जुही और अदमे इल्तिफ़ात को जहालत और बे इल्मी नहीं कहा जा सकता।

बड़े बड़े आलिम व माहेरीने फन प्रोफ़ेसर व डा० वकील व बैरिस्टर कभी ऐसा भी होता है कि किसी बात को नहीं बता पाते तो इसका मतलब यह नहीं होता कि वह लोग ज़ाहिल हो गये। एक बात न बताने से आलिम साहब आलिम न रहे और प्रोफ़ेसर साहब प्रोफ़ेसर न रहे?

ऐसी बातें वही करेगा जो अक़्ल से बिल्कुल पैदल हो। यूंही कभी कभी किसी बात को किसी मसलेहत या बे तवज्जुही के पेशे नज़र न बताने से हुज़ूर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम की ग़ैब दानी का इन्कार वही करेगा जो ईमान से बिल्कुल हाथ धो बैठा हो और हुज़ूर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम के इस क़िस्म के वाक़ेआत एक दो बार से ज़्यादा नहीं मुनकिरीने इल्मे ग़ैब को एक हज़रत आयशा के हार का क़िस्सा याद है और एक गुमशुदा ऊँटनी का और ज़्यादा बढ़े तो एक शहद न पीने का सारी जिंदगी में इन दो तीन वाक़ेआत की वजह से वह हूज़ूर के ग़ैबदां होने का इन्कार कर देते हैं और हज़ारों हदीसों और क़ुरआन की आयतों से मुंह फ़ेर लेते हैं।

एक ग़लत फहमी और उसका इज़ाला

मुनकिरीने इल्मे ग़ैब कभी कभी कुरआन करीम की वह आयत पेश करते हैं जिसमें है कि अल्लाह के अलावा कोई ग़ैब नहीं जानता तो आइये इस पर भी एक नज़र डालते चलें।

हमारे सामने दो क़िस्म की आयात हैं एक वह जिन का साफ़ व सरीह मफ़हूम है कि अल्लाह हर एक को ग़ैब का इल्म नहीं देता बल्कि अपने पसंदीदा रसूलों को अता फरमाता है।

और एक तरफ वह आयात हैं जिनका मफहूम है कि अल्लाह रब्बुल इज्ज़त के अलावा कोई ग़ैब नहीं जानता।

अब अगर इन आयात का जाहिर मफहूम लेकर यह कह दिया जाये कि वाक़ई अम्बियाए किराम को इल्मे ग़ैब नहीं दिया गया तो उन

आयात को झुठलाना लाज़िम आयेगा जिनमें है कि अल्लाह ने अपने पसंदीदा रसूलों को ग़ैब का इल्म दिया है और चूंकि कुरआन की हर आयत बर हक़ है और सब पर हमारा ईमान है।

लिहाज़ा अहले हक़ ने इस अम्र की वज़ाहत यूं फरमाई है कि जिन कुरआन की आयतों में यह फरमाया गया है कि अल्लाह के अलावाह कोई ग़ैब नहीं जानता उस का मफहूम यह है कि बग़ैर ख़ुदा के बताये कोई नहीं जान सकता। और जिन आयात में यह है अल्लाह तआला अपने पसंदीदा रसूलों को इल्मे गैब अ़ता फरमाता है। इस का मतलब यह है कि अल्लाह अलीम व ख़बीर के बताने से अम्बिया किराम ग़ैब का इल्म रखते हैं।

इस तरह हर दो क़िस्म की आयात पर बफ़ज़्लेही तआ़ला हमारा ईमान और जुमला कुरआने करीम हक्कानियत व सदाक़त की बुरहान और जो लोग सिरे से अन्बियां के इल्मे ग़ैब के मुखालिफ़ है वह इन सारी आयात कुरआनिया को झुठला रहे हैं जिनमें से चन्द हमने पेश कीं जिनमें साफ़ फरमाया गया है कि अल्लाह तबारक व तआला ने अपने पसंदीदा रसूलों को इल्मे ग़ैब अ़ता फरमाया है या वह नबी ग़ैब बताने में बख़ील नहीं ।

और इन तमाम हदीसों को भी झुठला रहे हैं जिनमें से बहुत सी अभी आप की नज़र से गुज़रीं।

और जो लोग यह अ़क़ीदा रखते हैं कि ढ़की छुपी आईन्दा की और गुज़री हुई दूर व क़रीब की बातों को जानने की सलाहियत अल्लाह जल्ला शानुहू ने अम्बियाए किराम और औलियाए इज़ाम को अता नहीं फरमाई है उन्हें आज की साइंसी तरक्कियात से भी आंखें खोलना चाहिये। आज हज़ारों मीलों पर लड़ी जाने वाली जंगों के मंज़र किरकिट हाकी और फुटबाल के खेल घर बैठे टी वी के ज़रिये देखे जा रहे हैं। फ़िज़ाओं में परवाज़ करने वाले हवाई जहाज़ो पर भी कन्ट्रोल रूम से रेडार वग़ैरा के ज़रिये नज़र रखी जाती है। इनसान के जिस्म के अन्दरूनी हिस्सों यहां तक कि दिल व दिमाग़ की एक एक नस को

एक्सरे और अलट्रा साउंड वग़ैरा आलात के ज़रिये देख लिया जात है। कम्प्यूटर और इन्टरनेट की ईजाद ने तो आज दुनिया को हैरत ज़दा कर रखा है

दीगर इनसानों यहां तक कि गैर मुस्लिमों तक को खुदाये तआला ने यह सलाहियतें अता फरमा दीं हैं।

तो अपने महबूब बंदों खास कर हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्ललल्लाहो अलैहे वसल्लम को वह खुदाए कादिर व कय्यूम ग़ैब जानने वाला दिमाग़ सारे जहानों को देखने वाली आंखें और दूर व क़रीब की सुनने वाले कान अगर अता फरमा दे तो इस से उस की शाने उलूहियत में कोई कमी नहीं आ जायेगी तो मुस्तफ़ा जाने रहमत सल्ललल्लाहो अलैहे वसल्लम का इल्मे ग़ैब बअताये इलाही मानने के अक़ीदे को शिर्क क़रार देना मोमिन का काम नहीं । यक़ीनन अल्लाह के महबूब सारी कायनात के ज़र्रे ज़र्रे का इल्म रखते हैं और क्यामत तक जो कुछ होगा और रोज़े अज़ल से जो कुछ हुआ आप सब जानते हैं और हर चीज़ आप पर रौशन है।

इल्मे ग़ैब से मुतअल्लिक़ अहले सुन्नत के अक़ाइद

अल्लाह तबारक व तआला आलिम बिज्जात है इसका इल्म किसी की अता से नहीं।

१ अल्लाह तबारक व तआला का इल्म ग़ैर मुतनाही है यानी इस की कोई हद और इन्तिहा नहीं। बाक़ी मखलूक ख्वाह अम्बियाये किराम ही हों। इनके उलूम की इन्ताहा है वह ला महदूद नहीं

२ अगर कोई शख़्स कहे कि मख़्लूक में से किसी को जर्रा बराबर इल्म भी बग़ैर खुदाए तआला के अज़ खूद है तो ऐसा कहने वाला यक़ीनन बड़ा मुशरिक और बदतरीन काफ़िर है।

३ अल्लाह तबारक व तआला ने हुज़ूर नबी करीम सल्ललल्लाहो अलैहें वसल्लम को अव्वलीन व आखरीन दुनिया व आखिरत ज़मीनों

आसमानों के तमाम उलूम आप के दुनिया से तशरीफ़ ले जाने से पहले अता फरमा दिये । आप का इल्म मख़लूक में सब से ज़्यादा है।

४ अल्लाह तबारक व तआला के इल्म में तगय्युर व तबदील मुम्किन नहीं। उस का इल्म तवज्जुह से पाक है। उसकी ज़ात के अलावा बाकी सब के इल्म में तगय्युर और बेतवज्जुही मुम्किन है।

५ सारी मखलूकात हत्ता कि अम्बिया किराम अलैहिस्सलाम के सारे उलूम अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के इल्म से वह निस्बत भी नहीं रखते जो एक बूंद के करोड़वें हिस्से को करोड़ों समुन्दरों सें है। यानी अल्लाह ताबारक व तआला के इल्म को अगर करोड़ों समुन्दरों के बराबर फर्ज़ किया जाये तो सारी मख़लूक का इल्म उस के मुकाबले में एक बूंद से भी बदरजहा कम है।

६ अल्लाह तबारक व तआला अपने मुकर्रेबीन बन्दों में से बअ़ज़ औलिया किराम को भी कुछ ग़ैब का इल्म अता फरमाता है।

***

नोट:

इस किताब में कहीं कोई ग़लती नज़र आये या कोई हदीस हमारे दिये हुए हवाले पर अस्ल किताब में न मिले या कोई बात समझ में न आये तो हमें ख़त लिखें। हम आप की मदद करेंगे।

हमारा पता:

(मौलाना) ततहीर अहमद रिज़वी

पो० घौंरा, ज़िला बरेली , यू०पी० पिन: 243204

फोन : 0581-2223043

सहाबए किराम का इश्के रसूल और ताज़ीमे रसूल और आप की ज़ात से मन्सूब चीज़ों को बाइ़से फ़ैज़ व बरकत जानना

इस उनवान के तहत हम उन हदीसों को जमा करेंगे जिन से ज़ाहिर हो कि सहाबए किराम रसूले अकरम सल्लललाहो अलैह वसल्लम से किस कदर मोहब्बत व अक़ीदत रखते थे और आप और आप की ज़ात से निसबत रखने वाली हर चीज़ को वह अपने लिये बाइसे बरकत जानते थे।

आप हमारी पेश करदा अहादीस में मुतालअ फरमायेंगे कि अल्लाह तआला के महबूब बन्दों से फ़ैज़ व बरकत हासिल करना यह बिदअत व गुमराही और इस ज़माने की पैदावार नहीं बल्कि जिन से इस्लाम चला है और फैला है खुद उन्ही का तरीक़ए कार रहा है। आप मुलाहिज़ा फरमायेंगे कि सहाबए किराम नमाज़ रोज़े अहकामे शरअ़ के पाबंद और मुत्तबिए रसूल होने के साथ साथ आशिके रसूल भी थे। आप के दीवाने थे। लिहाज़ा मुसलमान वही हैं जो हुजूर नबी करीम सल्लललाहो अलैह वसल्लम से मोहब्बत व इश्क रखते हों आपके नाम लेवा और दीवाने हों और इसके साथ साथ नमाज़ रोज़े और अहकामे शरअ़ के पाबंद और जिस बात से खुदा व रसूल नाराज़ हों इस से दूर रहतें हों।

हदीस न0 1:

हज़रत अनस से मरवी है कि एक देहाती आदमी रसूल सल्लललाहो अलैह वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और पूछा या रसूल उल्लाह क़यामत कब आयेगी। फरमाया तेरे लिये खराबी हो तू ने क़यामत के लिये क्या तैयारी की है। अर्ज़ किया हुजूर मैंने तैयारी तो नहीं की लेकिन मैं अल्लाह और उसके रसूल से मुहब्बत करता हूँ। फरमाया तो तुम उसके साथ रहोगे जिससे मोहब्बत करते हो। फिर हम लोगों ने अर्ज़ किया हुजूर क्या यह सब के लिये है फरमाया

हाँ। रावी कहते हैं इस बात से हम बेहद खुश हुए।
(बुखारी जिल्द 2 किताबुल आदाब सफहा 911, मुसलिम जिल्द 2 सफहा 331)

इस हदीस से अच्छी तरह मालूम हो गया कि सहाबए किराम सब के सब आशिकाने रसूल थे इसी लिये जब उन्होंने यह सुना कि जो जिस से मोहब्बत करेगा वह उसके साथ रहेगा तो वह निहायत खुश हुए। यह भी मालूम हुआ कि वह लोग मुत्तकी परहेज़गार और दीनदार होने के बावुजूद अपनी निजात का ज़रिया महज़ आमाले स्वालिहा को नहीं बल्कि मोहब्बते खुदा व रसूल को ख़्याल करते थे।

खुलासा यह कि जो लोग दीनदार बनते हैं और उन्हें अल्लाह व रसूल से मोहब्बत व इश्क नहीं हैं वह गलत रास्ते पर हैं। हां वह लोग भी धोके और टोटे में हैं जो ख़ाली नाम की मोहब्बत करते हैं और उन्हें अहकामे शरिया की कतअन फिक्र नहीं। हराम व हलाल में कोई फर्क नहीं। नमाज़ रोज़े के पाबन्द नहीं गुनाहों में लगे रहते हैं।

हदीस न0 2:

हज़रत उमर फारूक़ रज़ि अल्लाहो अन्हो ने दुआ फरमाई कि या अल्लाह तू मुझको अपनी राह में शहीद होने का शरफ अता फरमा और मुझको अपने रसूल के शहर में मौत अता फरमा।

(बुखारी जि0 2 स0 253)

इस हदीस से ज़ाहिर होता है कि हज़रत सय्यदना उमर फारूक़ रज़ि अल्लाहो अन्हो का इश्क़े रसूल इस हद को पहुच चुका था कि शहरे रसूल के अलावा किसी और जगह इनको मौत भी पसंद न थी और खुदाए तआला ने इस आशिके सादिक की दोनों ख्वाहिशात पूरी फरमा दीं। और हज़रत उमर को मदीने शरीफ में ही शहादत नसीब हुई। और हुज़ूर के रौज़े में दफन होने का शरफ़ भी हासिल हुआ।

हदीस न0 3:

मशहूर ताबई हज़रत इब्ने असीर फरमाते हैं कि

मैं ने हज़रत उबैदा से अर्ज़ किया कि मेरे पास रसूल उल्लाह सल्ललल्लाहो अलैह वसल्लम का एक बाल है जो हमको हज़रत अनस या उनके घर वालों के जरिये हासिल हुआ है। तो हज़रत उबैदा ने फरमाया कि मेरे पास हुजूर का एक बाल होना मेरे लिये दुनिया और इस के सारे साज़ व सामान से ज्यादा महबूब व पसंदीदा है।

(बुखारी जि0 1 स0 29)

इस हदीस को पढ़ कर अन्दाज़ा लगाइये कि हुजूर से सहाबा को किस दरजा मोहब्बत थी कि आप के एक बाल को कायनात की सारी दौलतों से प्यारा समझते। इस बारे में एक और हदीस मुलाहिज़ा फरमाइये।

हदीस न0 4:

हज़रत अनस रज़ि अलल्लाहो अन्हो फरमाते है कि जब रसूलुल्लाह सल्ललल्लाहो अलैह वसल्लम ने सर के बाल मुंडवाए तो आप के बाल हासिल करने वालों में सब से पहले हज़रत अबू तलहा थे।

(बुखारी जि0 1 स0 29)

हदीस न0 5:

क़ैस इब्ने मख़रमह से मरवी है कि हज़रत उस्मान ने कुबास इब्ने अश्यम से पूछा कि आप बड़े हैं या रसूलुल्लाह सल्ललल्लाहो अलैह वसल्लम। उन्होंने फरमया हुजूर ही बड़े हैं लेकिन मैं पहले पैदा हुआ हूँ।

(तिर्मिज़ी जिल्द 2 सफा 22)

इस हदीस से मालूम हुआ कि सहाबाए किराम निहायत बा अदब थे। इन्हें हुजूर के मुकाबले में बड़े का लफ़्ज़ बोलना गवारा न था।

हदीस न0 6:

हज़रत अबू हुजैफ़ा कहते हैं कि दोपहर के वक्त हुजूर

हमारे पास तशरीफ़ लाये तो आप के वुज़ू के लिये पानी लाया गया। आप ने वुज़ू फरमाया तो लोग आप के वुज़ू के पानी को लेकर अपने जिसमों पर मलने लगे। फिर आप ने ज़ुहर की दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी और असर भी दो रकअ़त पढ़ी और आप के सामने नेज़ा था। हज़रत अबू मूसा अश्अरी फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्ललल्लाहो अलैह वसल्लम ने एक प्याला मंगाया जिस में पानी था पहले आपने अपना मुंह और अपने हाथों को उसमें धोया और इसमें कुल्ली फरमाई और फिर हम दोनों (हज़रत अबू मूसा अश्अरी और हज़रत बिलाल) से फरमाया इस पानी को पियो और इस को अपने चेहरों और सीनों पर डाल लो।

(बुखारी जि० 1 स० 31)

नोटः यह एक सफर का किस्सा था जिस में हुज़ूर ने जुहर और असर में दो रकअत बतौरे क़स्र अदा फरमाइे थी। और मकामे जिअर्रराना में आप का क़्याम था और बुखारी ही में दूसरी जगह है कि जब वुज़ू का धोबन और कुल्ली किया हुआ पानी हुज़ूर ने हज़रत अबू मूसा अशअरी और हज़रत बिलाल को अता फरमाया और यह दोनों हज़रात जब इस पानी को बतौरे तबररूक पी रहे थे और अपने चिहरों और सीनों पर डाल रहे थे तो उम्मुल मोमेनीन सय्यदतेना उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहो तआला अन्हा जो खेमे के अन्दर से यह मुलाहिज़ा फरमा रही थीं उन्होंने फरमाया थोड़ा अपनी माँ यानी मेरे लिये भी बचाये रखो।

हदीस के अल्फाज़ यह हैं :

(हज़रत उम्मे सलमा ने परदे के पीछे से आवाज़ लगाई कि थोड़ा मेरे लिये भी बचालो तो उन्होंने थोड़ा पानी उनके लिये बचाया)

(बुखारी जि० 2 स० 620)

हदीस न० 7:

हज़रत साइब इब्ने यजीद फरमाते हैं कि मेरी ख़ाला मुझ को हुज़ूर सल्ललल्लाहो अलैह वसल्लम की ख़िदमत में ले

गई और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम यह मेरा भांजा बीमार है। आप ने मेरे सर पर हाथ फेरा और मेरे लिये बरकत की दुआ फरमाई। फिर आप ने वुज़ू फरमाया और मैंने आप के वूज़ू का पानी पिया। इसके बाद मैं आप के पीछे खड़ा हो गया तो मैंने मुहरे नुबुव्वत को आप के दोनों कान्ध ाों के बीच में देखा जैसे वह परदे की घुंडी है।

(बुखारी जि0 1 स0 31)

और बुखारी जि० 1 स० 50 पर इस हदीस के साथ हज़रत जुऐद इब्ने अब्दुर रहमान का यह कौल भी है (हज़रत जुऐद इब्ने अब्दुर रहमान फरमाते हैं कि हुजूर के सर पर हाथ फेरने और वुजू का पानी पीने की बरकत से मैं ने साइब इब्ने यजीद को चौरानवे साल (94) की उमर में देखा वह बिल्कुल तवाना व तनदुरूस्त और सहीहुल बदन हैं और उन्हों ने बताया कि मेरी यह समाअत और बसारत हुजूर की दुआ की वजह से है।)

(बुखारी जि0 1 स0 501)

हदीस न0 10:

हज़रत अस्मा बिन्ते अबी बक्र फरमाती हैं कि जब वह मक्का मुअज्ज़मा में थीं तो अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर उनके पेट में थे और जब मैं ने हिजरत की तो दिन पूरे हो चुके थे फिर जब मैं मदीना मुनव्वरा पहुंच गई और कुबा में ठहरी तो कुबा में उनकी पैदाइश हो गई। फिर मैं उनको लेकर हुजूर की ख़िदमत में हाज़िर हो गई और उन्हें हुजूर की गोद में दिया। हुजूर ने खुजूर मंगवाई और वह अब्दुल्लाह इब्ने ज़ुबैर के मुंह में चबा कर रख दी तो सब से पहली चीज़ जो उनके मुंह में गई वह हुजूर का लुआबे दहन है।

(बुखारी जि0 2 स0 822)

यानी हज़रत अस्माअ के नज़दीक हुजूर का मुबारक थूक बाइसे खैर व बरकत था और निहायत मुतबर्रक था

इसीलिये वह इस बात पर खुश होतीं और फ़ख़्रिया बयान फरमातीं कि मेरे बच्चे के मुंह में सब से पहली चीज़ जो दाखिल हुई वह रसूलुल्लाह का मुबारक थूक था।

हदीस न0 11:

हज़रत जाबिर कहते हैं कि मैं बीमार हो गया तो हुजूर सल्ललाहो अलैह वसल्लम मेरी अयादत के लिये तशरीफ़ लाये थे और अबू बक्र आप के साथ थे और दोनों पैदल तशरीफ़ लाये थे फिर हुजूर ने वुजू फरमाया और अपने वुजू का पानी मेरे ऊपर डाल दिया तो मैं बिलकुल ठीक हो गया।

(बुखारी जि0 2 स0 1087)

हदीस न0 12:

हज़रत मिसवर इब्ने मख्रमह (सुलह हुदैबिया) की हदीस बयान करते हुए फरमाते हैं कि उरवा हुजूर के अस्हाब को गौर से देखने लगे। उन्होंने देखा कि जब भी हुजूर सल्ललाहो अलैह वसल्लम थूकना या खंखारना फरमाते तो आप के थूक और खंखार बजाये ज़मीन पर गिरने के किसी न किसी सहाबी के हाथ में गिरता और वह उसको हाथ में लेकर अपने चेहरे और जिस्म पर मल लेता। जब आप किसी बात का हुक्म देते तो फौरन उसकी तामील की जाती और जब आप वुजू फरमाते तो लोग आप के धोबन को लेने के लिये टूट पड़ते और हर एक की यह कोशिश होती कि यह पानी मुझ को मिल जाये और जब लोग आप से गुफतगू फरमाते तो निहायत धीरे धीरे पस्त आवाज़ से और आप की इत्नी ताज़ीम करते कि आप की तरफ़ नज़र जमा कर देखते भी नहीं ।उसके बाद उरवा ने अपने साथियों में आ कर कहा "ऐ कौम मैं वल्लाह बादशाहों के दरबारों में वफ्द ले कर गया हूँ । मैं कैसर व किस्रा और नज्जाशी के दरबार में गया हूँ मगर खुदा की कसम मैं ने कोई बादशाह ऐसा न देखा कि उसके साथी उसकी ताज़ीम इतनी

करते हों जैसे कि मोहम्मद के साथी उनकी ताज़ीम करते है। खुदा की कसम जब वह थूकते हैं तो उनका थूक व खंखार किसी न किसी के हाथ में गिर जाता है जिसे वह अपने चेहरे और बदन पर मल लेता है । जब वह हुक्म देते हैं तो फौरन उनके हुक्म की तामील की जाती है और जब वह वुज़ू फरमाते हैं तो उनके वुज़ू के धोवन के लिये ऐसे दौड़ते है जैसे वह उसको हासिल करने के लिये एक दूसरे से लड़ने को आमादा हो जोयेंगे। और वह अपनी आवाज़ों को उनकी बारगाह में नीची रखते हैं और इतनी ज़्यादा ताज़ीम करते हैं कि नज़र जमा कर देखते तक नहीं।

(बुखारी जि0 1, स0 379)

हदीस न0 13:

हज़रत अनस से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्ललाहो अलैहे वसल्लम जब फज्र की नमाज़ पढ़ कर फारिग़ होते तो मदीने के खादिम आप की खिदमत में बरतन लेकर हाज़िर हो जाते । आप इन बरतनों में (बरकत अता फरमाने के लिये) अपने हाथ डाल देते। कभी कभी सख़्त सर्दी में भी आप इन पर करम फरमाते हुए अपना हाथ पानी में डाल देते।

(मुस्लिम जि0 2 स0 256, मिश्कात स0 519)

हदीस न0 14:

हज़रत ईसा इब्ने तुहमान से रिवायत है कि इन्हे हज़रत अनस ने दो पुराने जूते दिखाये जिनमें से हर एक में दो तस्मे थे। हज़रत अनस ने फरमाया था कि यह रसूलुल्लाह सल्ललाहो अलैहे वसल्लम की मुबारक जूतियां है

(बुखारी जि0 2 स0 438)

यहां इमाम बुखारी ने अपनी सहीह बुखारी में रसुलुल्लाह सल्ललाहो अलैहे वसल्लम से निस्बत रखने वाली चीजों में

आपके पानी पीने के प्याले, आप की मुबारक चादर, आप की तलवार, अन्गूठी से मुतअल्लिक अहादीस भी नकल की हैं जिन को सहाबा किराम ने अपने पास बतौरे तबररूक रख लिया था। खुद इमाम बुखारी का अकीदा भी यही था कि रसूलुल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम से जिस चीज़ को तअल्लुक हो जाये वह बाइसे बरकत है और उससे फ़ैज़ हासिल करना जायज़ है इसीलिये इन सब चीज़ों से मुंतअल्लिक़ बाब और उन्वान को उन्होंने इन अल्फाज़ में ज़िक्र किया जो बुखारी के बाज़ नुस्खों में है कि रसूलुल्लाह सल्ललाहो अलैह वसल्लम की ज़िरह, लाठी, तलवार, प्याला, अंगूठी, बाल, जूते, और बरतनों का ज़िक्र जिन से सहाबा किराम बरकत हासिल करते और उन्हें मुतबर्रक जानते थे।

हदीस न0 15:

हज़रत जाबिर इब्ने अब्दुल्लाह रजियल्लाहो तआला अन्हो से मरवी है कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम के साथ देखा कि अस्र का वक्त हो गया लेकिन ज़रा से बचे हुए पानी के सिवा कुछ न था जो एक बरतन में जमा कर के हुजूर की ख़िदमत में पेश कर दिया गया। हुजूर ने अपना मुबारक हाथ उसमें डाल दिया और उन्गलियां फैला दीं और फरमाया वुजू करने वाले आयें और अल्लाह की बरकत से फायदा उठायें । जाबिर कहते हैं कि मैंने देखा पानी आप की उन्गलियों से फूट फूट कर निकल रहा है। फिर लोगों ने वुजू किया और पानी पिया और मैंने अपना पेट भरने में कोई कोताही नहीं की। खूब पेट भर कर पिया क्योंकि मेरे अकीदे में वह पानी बरकत वाला था। रावी कहते हैं कि मैंने हज़रत जाबिर से पूछा कि इस वक्त आप कितने लोग थे। फरमाया चौदह सौ।

(बुखारी जि0 2 स0 842)

इस हदीस से मालूम हुआ कि हुजूर से बे पनाह मोहब्बत और आप को बाइसे बरकत जानना और आप की हर अदा पर कुरबान रहना यही सहाबा की जिन्दगी थी।

हदीस न0 16:

हज़रत मुआज़ इब्ने जबल से मरवी है कि हम लोग जंगे तुबूक के साल हुजूर के साथ सफर पर निकले (हज़रत मुआज़ आगे हदीस बयान करते हुए कहते हैं) रसूलुल्लाह सल्ललंलाहो अलैह वसल्लम ने इर्शाद फरमाया कि कल तुम लोग तुबूक में वहां के पानी के चशमे तक पहुंच जाओगे और तुम लोग दिन चढ़े तक वहां पहुंच जाओगे तो तुम में जो भी पानी के चश्मे तक पहुचे वह इस पानी को हाथ न लगाये जब तक कि मैं वहां न पहुंच जाऊँ। रावी कहते हैं कि हम लोग उस पर पहुंचे और दो आदमी हम से पहले पहुंच चुके थे और चश्मा पानी की कमी के बाइस भीगे हुए चमड़े की तरह रस रहा था तो हुजूर ने उन दोनें से पूछा क्या तुम ने पानी को हाथ लगाया उन्होंने कहा हाँ। उसपर हुजूर ने उन दोनों को डाँटा और वह कहा जो अल्लाह ने चाहा। फिर लोगों ने चश्मे का पानी चिल्लुओं से थोड़ा थोड़ा ले कर के जमा किया। फिर हुजूर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम ने इस पानी में अपने हाथ और मुंह को धोया और इस धोबन को चश्में में लौट दिया (तो इस की बरकत से) बहुत तेज़ी के साथ चश्मे से पानी जारी हो गया। और लोंगों ने खूब पिया। हुजूर ने इर्शाद फरमाया ऐ मुआज़ अगर तुम्हारी ज़िन्दगी रही तो तुम देखोगे कि यह चश्मा इस ज़मीन को बागात और आबादियों से भर देगा।

(मुस्लिम जि0 2 स0 246)

हदीस न0 17:

हज़रत अनस से मरवी है कि मैं ने देखा कि बाल काटने वाला हुजूर के बाल काट रहा है और सहाबए किराम चारों तरफ़ से घेरे हुए हैं और उनकी ख्वाहिश है कि हुजूर का कोई बाल ज़मीन पर न गिरे। बल्कि किसी न

किसी सहाबी के हाथ में आ जाये।

(मुस्लिम शरीफ़ जि0 2 सफहा 256)

इन दोनों हदीसों की शरह में इमाम नौवी फरमाते हैं कि इन हदीसों से नेक बन्दों की निशानियों से बरकत हासिल करने का सुबूत मिलता है । और यह कि सहाबए किराम हुजूर सल्लललाहो अलैह वसल्लम की निशानियों से बरकत हासिल करते थे और पानी में आप का हाथ डलवा कर बरकत हासिल करते थे और आप का इस दर्जा एहतराम फरमाते थे कि उन्हें आप के बालों का जमीन पर गिरना गवारा न था । बल्कि वह उन्हें बढ़ कर हाथ में लें लेते थे।

(हाशिया मुस्लिम सफहा 256)

हदीस न0 18:

हज़रत अबू बुरदा अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हमको रसूलुल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम ने नज्जाशी के मुल्क में जाने का हुक्म दिया। उन्होंने अपना पूरा किस्सा बयान करते हुए बताया कि नज्जाशी ने कहा कि मैं गवाही देता हूँ कि बेशक वह अल्लाह के रसूल हैं सल्लललाहो अलैह वसल्लम और यह वुहीं हैं जिन की खुश खबरी हज़रत ईसा इब्ने मरियम ने दी है और अगर मेरे साथ यह बादशाहत का मस्अला न होता तो मैं उनकी खिदमत में हाज़िर होता और उनकी जूतियां उठाता।

(सुनन अबू दाऊद सफहा 457)

यह हज़रत नज्जाशी बादशाहे हबशा हैं जो हुजूर पर ईमान लाये। फतहे मक्का के साल ईमान लाये और हुजूर ने उनकी मौत की ख़बर मदीने में दी। और ग़ायबाना उनके जनाज़े की नमाज़ अदा फरमाई जैसा कि बुख़ारी व मुस्लिम में है। सुनन अबू दाऊद में भी इस से पहले वाली हदीस में यह सब मज़कूर है।

हदीस न0 19:

हज़रत अस्मा बिन्ते अबी बक्र से मरवी है कि उन्होंने

एक किस्रवानी जुब्बा निकाला जिसका गिरेह बान दीबाज का था और दोनों चाको में दीबाज की गोठ लगी हुई थी और फरमाया कि हुजूर सल्लललाहो तआला अलैह वसल्लम का जुब्बा (नीचा कुर्ता) है यह हज़रत आयशा के पास था जब उनका विसाल हो गया तो मैंने ले लिया रसूल उल्लाह सल्लललाहो तआला अलैह वसल्लम इसको पहनते थे और हम इसको धोकर उसका धोबन बीमारों को पिलाते हैं और इस ज़रिये से इनकी शिफा चाहते हैं।

(मुस्लिम जिल्द 2 किताबुललिबास सफहा 190)

हदीस न0 19:

एक औरत ने एक किनारे वाली चादर हुजूर की ख़िदमत में पेश की और अर्ज़ किया कि यह मैंने आपके लिये अपने हाथ से बुनी है तो हुजूर ने इसको कुबूल फरमा लिया और आपको इसकी ज़रूरत भी थी आप इसका तहबन्द बांध कर हम लोगों में तशरीफ लाये तो एक साहब को वह चादर निहायत अच्छी मालूम हुई और उन्होनें इसको हुजूर से मांग लिया सहाबा किराम ने उससे कहा कि तुमने अच्छा नहीं किया हुजूर को आजकल इसकी ज़रूरत थी और तुमको मालूम है हुजूर मांगने वाले को मना नहीं फरमाते तो वह साहब कहने लगे कि मैंने वह चादर खुदा की कसम पहनने के लिये नहीं ली है बल्कि इसलिये मांगी है ताकि वह मेरा कफन हो जाये हज़रत सुहेल रावी हदीस फरमाते हैं कि वह चादर वाकई उन साहब के कफन में काम आई।

(बखारी जिल्द 1,सफा 170)

हदीस न0 20:

हज़रत इतबान इब्ने मालिक से मरवी है और यह इतबान हुजूर के उन असहाब में से हैं जो अन्सार की जानिब से जंगे बदर में शरीक हुये थे वह कहते हैं कि मैं हुजूर

सल्लललाहो अलैह वसल्ल्म की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया या रसूल ल्लाह मुझको आँखो से नज़र नहीं आता और कौम को नमाज़ पढ़ाता हूँ जब बारिश होती है तो रास्ते की वादी पानी से भर जाती है जो मेरे और उनके दरमियान वाक़िअ है, और मस्जिद में जाकर उन लोगों को नमाज़ पढ़ाना मेरे बस से बाहर हो जाता है लिहाज़ा मैं चाहता हूँ कि हुज़ूर मेरे ग़रीब ख़ाने पर तशरीफ लाकर किसी जगह नमाज़ पढ़ दें और मैं उसी जगह को अपनी इबादत गाह बनाऊँ हुज़ूर ने इरशाद फरमाया कि मैं ऐसा करूँगा।

इतबान का बयान है कि अगले दिन दिन चढ़े हुज़ूर तशरीफ लाये और उनके साथ जनाब अबू बक्र भी थे---हुज़ूर ने घर मे आने की इजाज़त चाही मैंने इजाज़त दे दी और आप घर में बैठे नहीं बल्कि फरमाया तुम किस जगह मुझसे नमाज़ पढ़वाना पसन्द करते हो ।मैं वहीं नमाज़ पढ़ूँ तो मैंने घर के एक कोने की तरफ इशारा कर दिया फिर हुज़ूर सल्लललाहो तआला अलैह वसल्लम ने खड़े होकर नमाज़ शुरू फरमाई आपने तकबीर कही और हम लोगों ने आपके पीछे सफें लगा लीं हुज़ूर ने दो रकतें पढ़कर सलाम फेर दिया।

बुखारी जिल्द 2 किताबुल अतइमाह सफहा 813)

अल्लाह की इबादत किसी भी जगह की जा सकती है लेकिन हज़रत इतबान ने अपने घर में उसी जगह को इबादत गाह बनाया जहां हुज़ूर से उन्होंने नमाज़ पढ़वाई। गोया उनके अकीदे में हुज़ूर से फैज़ व बरकत हासिल करना भी ज़रूरी था।

हदीस न0 21:

हज़रत तलक इब्ने अली से मरवी है कि हम लोग वफ्द की शक्ल में हुज़ूर सल्लललाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए। हमने आप के हाथ पर बैअत की और आप के पीछे नमाज़ पढ़ने का शर्फ हासिल किया। हमने हुज़ूर

को बतया कि हमारे यहां हमारा गिरजा घर है तो हमने हूजूर से आप के वुजू का धोवन मांगा। आप ने पानी मंगाया वुजू कर के कुल्ली की फिर इस पानी को एक बरतन में डाल दिया और हम को हुक्म दिया कि तुम लोग जाओ और जब अपने वतन पहुचो तो उस गिरजा को तोड़ डालो और उस जगह यह पानी छिड़क दो और फ़िर वहां मस्जिद बनाओ। हमने अर्ज़ किया हमारा वतन दूर है और गर्मी सख़्त है और पानी ख़ुश्क होने वाली चीज़ है। तो हुजूर ने फरमाया कि इस में और पानी मिलाते रहना इस की ख़ूबी बढ़ती रहेगी। हज़रत तलक़ इब्ने अली कहते है कि हुजूर से रूख्सत हो कर जब हम अपने वतन पहुंचे तो हमने गिर्जा घर को तोड़ डाला और हुजूर का धोवन उस जगह छिड़क कर मस्जिद बना ली और अज़ान पुकारी। गिर्जा का राहिब (ईसाई पादरी) क़बील-ए- तय का आदमी था उसने अज़ान सुनी तो कहने लगा यह पैगामे हक़ है और वह ज़मीन के निचले हिस्से में उतर गया और फिर उसके बाद हमने इसको कभी न देखा।

(सुनन निसाई सफहा 21, जि0 1, मिश्कात सफहा 69)

इस हदीस में आपने देखा कि हुजूर सल्ललललाहो अलैह वसल्लम का उन लोगो को वुजू का पानी देना और गिर्जा को तोड़ का इस जगह मस्जिद बनाने से पहले वहां हुजूर के आबे वुजू को उन लोगो का छिड़कना और खुद हुजूर का इस सब के लिये हुक्म फरमाना बता रहा है कि सहाबए किराम हुजूर के पंसूबात से फ़ैज़ हासिल करते थे और यह बरकत व फैज़ हासिल करने के लिये तालीम खुद हुजूर सल्ललललाहो अलैह वसल्लम ने ही दी थी।

हदीस न0 22:

हज़रत ज़ारिअ़ से मरवी है कि कबीला अब्दुल कैस का वफ्द जब हुजूर से मिलने आया था उनके साथ यह भी थे। कहते हैं कि जब हम लोग मदीने में आये तो हम एक

दूसरे से आगे बढ़ने के लिये अपनी सवारियों से जलदी जलदी उतरते और हुजूर सल्ललल्लाहो अलैह वसल्लम के मुबारक हाथों को चूमते और आप के पैरों को चूमते थे।

(सुनन अबू दाऊद जि0 2 सफहा 709, मिश्कात सफहा 402)

इस हदीस को पढ़ कर आपने अंदाजा लगा लिया होगा कि हुजूर सल्लललाहो अलैह वसल्लम की ताज़ीम व तकरीम आप का इहतराम यहां तक कि आपके हाथों और पैरों को चूमना और इसमें एक दूसरे से सब्क़त ले जाने की कोशिश करना यह सब अस्हाबे रसूलुल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम का तरीकए कार था और यह बातें इनमें रायज थीं। इस हदीस से उलमाये किराम अरबाबे इल्म व फज्ल के हाथों पैरों को चूमने का जवाज़ साबित है। जो लोग इसे नाजाय़ व गुनाह कहते हैं वह ग़लती पर है

हदीस न0 23:

हज़रत सुहैल इब्ने सअ़द फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम सक़ीफ़ए बनी सअ़िदा में सहाबा के साथ जलवा अफ़रोज़ हुए और मुझसे फरमाया सअ़द पानी पिलाओ तो हज़रत सअद ने (एक प्याला जो उनके हाथ में था उसकी तरफ़ इशारा करके फरमाया) मैंने इस प्याले में हुजूर सल्लललाहो अलैह वसल्लम और आप के साथियों को पानी पिलाया। रावी कहते हैं कि हज़रत सअद ने फ़िर वह प्याला लिया और हम लोगों ने उससे हुसूले बरकत के लिये पानी पिया वह प्याला अमीरूल मोमेनीन हज़रत उमर इब्ने अब्दुल अज़ीज़ ने हज़रत सअद से मांगा तो उन्हों ने उन्हीं को दे दिया।

(बुखारी जि0 2 सफहा 842)

हदीस न0 24:

हज़रत आसिम इब्ने अहवल का बयान है कि मैंने हुजूर सल्लललाहो अलैह वसल्लम के पानी पीने का प्याला हज़रत अनस के पास देखा जो फ़ट गया था और वह चांदी के

तारों से गांठा हुआ था। उनका बयान है कि वह प्याला बहुत उम्दा अरीज़ और बेहतरीन लकड़ी का था। हज़रत अनस का बयान है कि मैं ने इस प्याले में बेशुमार मरतबा रसूलुल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम को पानी पिलाया है। इब्ने सीरीन ने कहा कि इसके गिर्द लोहे का एक हलक़ा था। हज़रत अनस ने चाहा कि उसकी जगह सोने या चांदी का हलका लगवा दें हज़रत अबू तलहा ने इस से मना फरमया कि जिस चीज़ को रसूलुल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम ने बनाया है उसको बदलने की कोशिश क़तअन न करो। लिहाज़ा हज़रत अनस ने इरादा तर्क फरमाया।

(बुखारी जि0 2 सफहा 842)

इन हदीसों से आपने बखूबी अन्दाज़ा लगा लिया होगा कि सहाबए किराम हुजूर की निशानियों को मुतबर्रक समझते थे और उनको बाइसे बरकत जान कर अपने पास रखते थे और उनका निहायत अदब फरमाते कि उसमें कोई तबदीली भी गवारा न करते और बरकत के लिये आपके प्याले से पानी पीते थे।

हदीस न0 25:

हज़रत अबू हुजैफा से मरवी है कि एक दिन दोपहर को रसूलुल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम बतहा तशरीफ़ लाये और दो दो रकअत जुहर और अस्र की नमाज़ पढ़ी। आप के सामने एक नेज़ा गाड़ दिया गया था इसके पीछे से औरतें गुजर गईं और मर्द खड़े रहे फिर वह लोग हुजूर के हाथों को लेकर अपने चेहरे पर मलने लगे। मैंने भी हुजूर का मुबारक हाथ ले कर अपने चेहरे से लगाया तो देखा वह बर्फ से ज्यदा ठंडा और मुश्क की खुशबू से ज्यादा महक रहा था।

(बुखारी जिलद 1 , सफा 502)

हदीस न0 26:

हज़रत अबू हुजैफा कहते हैं कि फिर हज़रत

बिलाल निकले और अज़ान दी। फिर हुजूर के खेमें में तशरीफ़ ले गये और आप के वुजू का बचा हुआ पानी निकाल लाये तो मैं ने देखा कि सहाबए किराम हुजूर के वुजू के बचे हुए पानी को हासिल करने के लिये इस पर गिरे जा रहे हैं।

(बुखारी जि0 1 सफहा 503)

इन अहादीस से आप पर वाज़ेह हो गया होगा कि हुजूर सल्लललाहो अलैह वसल्लम के जिस्म पाक का गुसाला सहाबा के लिये निहायत बाइसे बरकत और लाइके ताजीम व तकरीम था और वह आप के मुबारक हाथों को चेहरे पर लागा कर बरकत हासिल करते थे।

बुखारी व मुस्लिम के हवाले से मिश्कात में इस हदीस के अखीर में यह कलमात है :

हदीस न0 27:

जिसको हुजूर का धोवन मिल गया वह उसको बदन पर फिरा लेता और जिस को नहीं मिला उस ने अपने किसी साथी के हाथ की तरी ले ली।

(मिष्कात बहवाला बुखारी व मुस्लिम सफहा 74)

सुबहान अल्लाह इन अहादीस को पढ़ कर यह कहना ही पड़ेगा कि वाकई सहाबए किराम सब के सब शमए नुबुव्वत के परवाने थे और आप के दीवाने थे।

हदीस न0 28:

अमीरूल मोमेनीन हज़रत उमर रज़ियल्लाहो अन्हो से मरवी है कि एक दिन रसूलुल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम ने हमें सदके का हुक्म दिया। इत्तिफ़ाक़ से इन दिनों मेरे माली हालात अच्छे थे । मैं ने दिल में सोचा कि अगर कभी मैं हज़रत अबू बक्र से आगे निकल सकता हूँ तो वह मौका आज है। लिहाज़ा मैं ने अपने सारे माल का आधा ला कर हुजूर की ख़िदमत में पेश कर दिया । हुजूर ने पूछा तुम ने अपने घर वालों के लिये कुछ छोड़ा मैं ने अर्ज़ किया हां

फरमाया कितना ? मै ने अर्ज़ किया इतना ही। और जनाबे अबू बक्र अपना सारा माल ले कर हाजिर हुए। हुजूर ने उन से पूछा ऐ अबू बक्र अपने घर वालों के लिये क्या बाकी छोड़ आये। उन्हों ने कहा या रसूलल्लाह मैं ने घर वालों के लिये अल्लाह और उसके रसूल को छोड़ा है। हज़रत उमर फरमाते हैं मै ने कहा मैं अबू बक्र से आगे कभी नहीं निकल सकूंगा।

(तिर्मिजी जि0 2 सफहा 208)

यानी जनाबे सिद्दीक़ अकबर ने सिर्फ अल्लाह का नाम न लिया बल्कि यह फरमाया कि मैं ने घर वालों को अल्लाह व रसूल के भरोसे और उन के सहारे छोड़ा है। यह उनका इश्के रसूल भी है और खुदाए तआला के साथ साथ जाते मुहम्मद मुस्तफा सल्ललल्लाहो अलैह वसल्लम पर तवक्कुल व भरोसा और एतमाद भी। और यह सब खुदाए तआला की अता है कि उसने अपने महबूब को बे सहारों का सहारा बेकसों का कस और बे बसों का बस बनाया है।

हदीस न0 29:

हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो का बयान है रसूल उल्लाह सल्ललल्लाहो अलैह वसल्लम मेरे घर मेहमान हुये और मैं बालाई मन्ज़िल में रहता और हुजूर नेचे वाली मन्ज़िल में। एक बार रात में बेदार हुआ तो इहसास हुआ कि मैं ऊपर चलता हूँ और हुजूर नीचे तशरीफ फरमां हैं इस ख्याल से एक कोने में बैठकर जागते हुये रात गुज़ारी सुबह को हुजूर की ख़िदमत में हाज़िर होकर अर्ज़ की। हुजूर ने इरशाद फरमाया कि निचली मन्ज़िल में हमें ज़्यादा आराम है अर्ज़ किया हुजूर लेकिन मैं इस छत पर कैसे रह सकता हूँ जिसके नीचे आप हों, इसके बाद हुजूर ऊपर की मन्ज़िल में तशरीफ ले गये और अबू अय्यूब निचली मन्ज़िल में रहने लगे। हुजूर के लिये खाना त्यार करते जब हुजूर खाना तनावुल फरमा लेते बाद में खुद खाते। बचे हुये खाने के बारे

में पूछते कि हुजूर ने किधर से खाया है फिर खास इसी जगह से खाते।

सहीह मुस्लिम जिल्द न0 2 बाब इबाहते अकलिस्सौम सफहा 183

हज़रात यह उस वक्त का किस्सा है जब हुजूर मक्का मुअज्ज़मा से हिजरत फरमा कर मदीना तशरीफ लाये और शुरूअ़ में आपका क़याम हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी के मकान में हुआ था। इस हदीस शरीफ से सबक हासिल करें जो सिर्फ ज़ाहिरी नमाज़ रोज़ा और एहकामे शरिया को ही इस्लाम समझे हुये हैं और इनकी किताबे ज़िन्दगी में अदब व ताज़ीम का कोई बाब नहीं बल्कि बे अदबी इनकी घुट्टी में पिला दी गई है।

महबूबे ख़ुदा सल्लललाहो अलैह वसल्लम का अदब और आपकी ताज़ीम इस्लाम में कितनी ज़रूरी है और आपकी शान में बे अदबी कितना भयानक जुर्म है इस बारे में कुरआन करीम में खुदाये तआला का यह फरमान भी मुलाहेज़ा फरमा लीजिये -

ऐ इमान वालो अपनी आवाज़ें ऊँची न करो उस ग़ैब बताने वाले नबी की आवाज़ से और उनके हुजूर बात चिल्ला कर न करो जैसे आपस में एक दूसरे के सामने चिल्लाते हो कहीं ऐसा न हो तुम्हारे अमल बरबाद हो जाये और तुम्हें ख़बर न हो।

सूरते हुजरात पारह न0 26 रूकूअ न0 13

गौर कीजिये कि यह अमल नमाज़ रोज़ा वगैराह को बरबाद करने की वारनिंग किस बात पर दी गई है? मानना ही पड़ेगा कि अदब व ताज़ीमे मुस्तफा ईमान व इस्लाम की जान है और बेअदब के सारे आमाल व इबादात बेकार हैं।

कुरआन करीम में एक और मुकाम पर बिल्कुल साफ सरीह और वाज़ेह अलफाज़ में हुजूर की ताज़ीम व तौकीर का हुक्म खुदाये तआला यूँ फरमाता है -

"बेशक हमने तुम्हें भेजा हाज़िर व नाज़िर और खुशी और डर सुनाना। ताके ऐ लोगो तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ।

और रसूल की ताज़ीम व तौकीर करो और सुबह व शाम अल्लाह की पाकी बोलो''

पाराह 26 रूकुअ 9 सूरतुल फतह

हदीस न0 30:

हज़रत उस्मान इब्ने अब्दुल्लाह से रिवायत है। कि मेरे घर वालों ने मुझको उम्मुल मोअमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहो तआला अन्हा की खिदमत में एक बरतन में पानी लेकर भेजा और जब किसी शख़्स को नज़र लग जाती या उसे कोई परेशानी या बीमारी होती तो हज़रत उम्मे सलमा हुज़ूर का मूए मुबारक (बाल) निकाल कर लातीं और वह उनके पास एक चांदी की कुप्पी में रहता था फिर उसे पानी में डालकर हिलाया जाता और वह शख़्स उस पानी को पीता हज़रत उस्मान कहते हैं। कि मैंने उस बर्तन में झांका तो मुझे चन्द सुर्ख रंग के बाल दिखाई दिये।

(सही बुखारी जिल्द 2 किताबुल्लिबास सफहा 875)
(मिश्कात बाबुल फाल सफहा 391)

हज़रात उम्में सलमा हुज़ूर सल्ललललाहो अलैह वसल्लम की जौजए मुहतरमा (पाक बीवी) हैं। जो हुज़ूर के बाल का धोबन मरीज़ों को पिलाती थीं और यह सहाबा का ज़माना था लेकिन किसी ने यह नहीं कहा कि यह शिरको बिदअत है। और नाजाइज़ है।

हदीस न0 31:

हज़रत अबू मसऊद के बारे में मरवी है कि वह एक दिन अपने एक ग़ुलाम को मार रहे थे तो वह कहने लगे मैं आपको अल्लाह के नाम की दुहाई देता हूँ तो वह मारते ही रहे फिर उसने कहा रसूल उल्लाह के नाम की दुहाई देता हूँ तो उन्होंने उसको छोड़ दिया।

सही मुस्लिम जिल्द 2 सफहा 52

सही मुस्लिम शरीफ की हदीस से यह भी मालूम हुआ कि

बवक्त मुसीबत हुजूर के नाम की दुहाई जायज़ है और हज़रात सहाबए किराम हुजूर से किस क़दर मोहब्बत और इश्क रखते थे इसका अन्दाज़ा सहाबिए रसूल हज़रत मसऊद के इस तरीकए कार से लगायें कि पिटते हुये गुलाम ने अल्लाह जल्ल शानहु के नाम का वास्ता दिया तो मारते रहे और जब हुजूर के नाम की दुहाई दी तो मारना छोड़ दिया क्योंकि हुजूर का अदब अल्लाह जल्ल शानहु से मोहब्बत और उसकी बन्दगी व फरमा बरदारी है वह तो अल्लाह तआला के भी महबूब हैं और खुदाये तआला आपके अदब और आपकी ताज़ीम से राज़ी होता है। खुदाये तआला अगर नाराज़ हो जाये तो हुजूर मना लेंगे शिफाअत फरमा लेंगे लेकिन अगर हुजूर खफा हो जायें तो दोनों जहां में कहीं ठिकाना नहीं है। देखते नहीं कि खुदाये तआला ने फरिश्तों को अपनी इबादत का हुक्म नहीं दिया था बल्कि हज़रत आदम की ताज़ीम का हुक्म दिया था क्योंकि अल्लाह जल्ले शानहु की इबादत और उसकी तस्बीह तो पहले ही से करते चले आ रहे थे।

हदीस न0 32:

हज़रत अनस इब्ने मालिक फरमाते हैं कि एक दर्ज़ी ने हुजूर के खाने की दावत की हज़रत अनस फरमाते हैं मैं भी हुजूर के साथ गया उसने आपकी खिदमत में रोटी शोरबा जिसमें लौकी थी और पका हुआ गोश्त हाज़िर किया मैंने देखा कि हुजूर सल्ललल्लाहो अलैह वसल्लम प्याले के चारो तरफ लौकी के कत्ले तलाश फरमा कर खा रहे हैं मैं भी उस दिन से लौकी को पसन्द करने लगा।

बुखारी जिल्द 1 बाबुल खय्यात सफहा 281

किस क़दर इश्क था सहाबा किराम को हुजूर सल्ललल्लाहो अलैह वसल्लम से कि हज़रत अन्स ने हुजूर को लौकी शौक से खाते देखा तो उमर भर लौकी से मोहब्बत करते रहे। इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि रसूल उल्लाह सल्ललल्लाहो अलैह वसल्लम से इश्क व मोहब्बत का मतलब यह है कि हर वह बात जो आपको पसन्द थी इससे मोहब्बत की

जाये और जो आपको नापसन्द थी इससे नफरत की जाये।

हदीस न0 33:

हज़रत अन्स से मरवी है कि हुजूर सल्लललाहो अलैह वसल्लम की एक ऊँटनी का नाम अज़्वाअ था वह सबसे आगे चलती थी एक गंवार अपनी ऊँटनी पर बैठ कर आया और आगे निकल गया तो यह बात मुसलमानों को बहुत नागवार गुज़री यहां तक कि हुजूर ने भी सहाबा किराम की इस नागवारी को जान लिया। और फरमाया कि अल्लाह तआला पर यह हक है कि जब वह दुनिया में किसी चीज़ को बुलन्द करता है तो फिर उसे नीचे भी गिराता है।

बुखारी जिल्द 1 बाब नाक़तुन्नबी सल्लललाहो अलैह वसल्लम सफहा 402

इस हदीस से ज़ाहिर है कि अस्हाब रसूल उल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम आपसे ऐसी मोहब्बत और अकीदत रखते और आपकी बारगाह में ऐसे बा आदब थे। कि उन्हें हुजूर की सवारी से आगे किसी की सवारी का निकल जाना गवाराह न था।

हदीस न0 34:

हज़रते सुमामह से मरवी है। कि हज़रत उम्मे सुलैम अपने घर में हुजूर सल्लललाहो अलैह वसल्लम के लिये बिस्तर बिछा देती थीं तो वहां दोपहर में आराम फरमाते जब हुजूर तशरीफ ले जाते तो वह आपके बिस्तर से आपके बाल और पसीने को एक शीशी में जमा कर लेतीं फिर उसे खुशबू में मिला लेतीं हज़रते सुमामह फरमाते हैं। (कि हज़रते उम्मे सुलैम के बेटे हुजूर के सहाबी) हज़रत अनस का जब विसाल हुआ तो उन्होंने मुझको वसीयत फरमाई कि वही खुशबू मेरे कफन में लगाई जाये और ऐसा ही हुआ यानी वही खुशबू उनके कफन में लगाई गई।

बुखारी जिल्द 2 किताबुल इस्तीजा़न सफहा 929

रसूल उल्लाह ﷺ
जैसा कोई नहीं

जिस तरह अल्लाह तबारक व तआला अपनी ज़ात में अकेला है उस का कोई शरीक और साझी नहीं ऐसे ही उसने अपने महबूब हज़रत मोहम्मद मुस्तफा सल्लललाहो अलैह वसल्लम को भी बेमिस्ल बनाया है मख़लूक में आप की मिस्ल आप की तरह और आप के बराबर कोई न है न हुआ और न होगा।आप सारे औसाफ में सबसे जुदा हैं आपकी शान निराली है।आपकी ज़ात अनोखी है,आपकी हर अदा बेमिसाल है आपको अपने जैसा बशर कहना या समझना कुफ्र है कुरआन व हदीस की मुख़ालिफ़त है।

हदीस न01:

हज़रत अबु हुरैरा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लललाहो तआला अलैह वसल्लम ने बगैर कुछ खाये पिये रोज़े से रोज़े मिलाकर रखने से मना फरमाया तो एक साहब ने अर्ज़ की या रसूल उल्लाह आप तो इस तरह रोज़े रखते हैं तो हुजूर सल्लललाहो अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया तुम में मेरे जैसा कौन है? मैं तो इस हाल में रात गुज़ारता हूँ कि मेरा रब मुझे खिलाता है पिलाता है।

(बुखारी जिल्द। सफा 263 मुस्लिम जिल्द 1 सफहा 351मिश्कात सफहा,175)

यह हदीस कुछ अल्फाज़ की तबदीली के साथ बुखारी और मुस्लिम में हज़रत आयशा सिद्दीका हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर हज़रत अनस बिन मालिक और हज़रत अबु हुरैरा रज़ि अल्लाहु तआला अन्हुम अजमईन इन सारे हज़रात से मरवी है।

हज़रत अनस का बयान है कि

हुज़ूर ने फरमाया कि मैं तुम में से किसी की तरह नहीं हूँ

हज़रत आयशा से मरवी हदीस में है।

रसूल उल्लाह सल्लललाहो तआला अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया मेरी शान तुम्हारी जैसी नहीं है।

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर की रिवायत में है।

हुज़ूर ने फरमाया मैं तुम्हारे जैसा नहीं

और यह सारी रिवायत बुख़ारी जिल्द 1 सफहा 263 और मुस्लिम जिल्द 1 सफहा 351 पर ही है।

हदीस न02:

हज़रत अली से मरवी है कि मैंने हुज़ूर सल्लललाहो तआला अलैह वसल्लम के जैसा न पहले कोई देखा न आपके बाद।

(तिर्मिजी जिल्द न0 2 सफहा 205 मिष्कात सफहा 517)

हदीस न03:

हज़रत जाबिर से मरवी है कि मस्जिद नबवी की छत जब खुजूर की शाखों से डाली हुई थी तो खुतबा देते वक्त हुज़ूर नबी करीम सल्लललाहो तआला अलैह वसल्लम खुजूर के एक सुतून से टेक लगाया करते थे जब आप के लिए मिम्बर बना दिया गया तो आप उस पर जलवा अफ़रोज़ हुये तो मैंने सुना कि इस खुजूर के सुतून से (हुज़ूर की जुदाई) में ऊँटनी के बिलबिलाने की जैसी आवाज़ आ रही है यहाँ तक के हुज़ूर ने उसके करीब जाकर उस पर अपना मुबारक हाथ फेरा तो वह खामोश हो गया।

(बुख़ारी जिल्द 1 बाब अलामातुन्नबुव्वत सफहा न0 504)

हदीस न04:

हज़रत आयशा फरमाती हैं मैंने अर्ज़ किया या रसूल उल्लाह आप वित्र की नमाज़ बगैर पढ़े सो जाते हैं तो हुज़ूर

ने इरशाद फरमाया ऐ आयशा मेरी आँख सोती है मेरा दिल नहीं सोता।

(बुख़ारी जिल्द 1 सफहा 504, मुस्लिम जिल्द सफहा 254)

इस हदीस से मालूम हुआ कि आपकी शान सबसे अलग है और नीन्द में भी आप वा खबर रहते हैं और सिर्फ आपकी आँख सोती है दिल जागता रहता है।

हदीस न0 5:

हज़रत काब जंग में शिरकत से अपने रह जाने का किस्सा बयान करते हुये फरमाते हैं कि जब मैंने हुजूर को सलाम किया और आप का चिहरा खुशी से दमक रहा था और रसुल उल्लाह सल्लललाहो तआला अलैह वसल्लम जब खुश होते तो आपका चिहरा दमकने लगता जैसे के वह चाँन्द का टुकड़ा है और इससे हम आप की खुशी को जान जाते।

(बुख़ारी जिल्द 1 सफहा 502)

हदीस न0 6:

हज़रत बरा इब्ने आज़िब से पूछा गया क्या रसूल उल्लाह का चिहरा तलवार की मानिन्द चमकता था फरमाया, नहीं बल्कि चाँन्द की तरह।

(बुख़ारी जिल्द 1 सफहा 502)

और सहाबाए किराम का यह चाँन्द से तशबीह देना भी सिर्फ इसलिए था इन्सानों की नज़र में चाँन्द सबसे ज़्यादा चमकदार है वरना रसूल उल्लाह सल्लललाहो तआला अलैह वसल्लम तो चाँन्द से कहीं ज़्यादा खूबसूरत और हसीन थे।

इस बारे में भी हदीस में है।

हदीस न0 7:

यही हज़रत बरा फरमाते हैं मैंने रसूल उल्लाह

सल्लललाहो तआला अलैह वसल्लम से ज़्यादा खूबसूरत कभी किसी चीज़ को न देखा।

(बुख़ारी जिल्द 1 सफहा 502)

हदीस न0 8:

हज़रत अबु हुरैरा कहतें हैं मैंने कोई चीज़ रसूल उल्लाह सल्लललाहो तआला अलैह वसल्लम से ज़्यादा ख़ूबसूरत हसीन व जमील न देखी।ऐसा लगता था जैसे आपके चिहरे में सूरज गरदिश कर रहा है।

(तिर्मिजी जिल्द 1 सफहा 205)

हदीस न0 9:

हज़रत अबु हुरैरा कहते हैं कि लोगों ने पूछा या रसूल उल्लाह आप कब से नबी हैं फरमाया आदम अलैहिस्सलाम के रूह और जिस्म अभी दोनो अलग अलग थे।यानी इनके जिस्म में रूह अभी आई भी न थी।

(तिर्मिज़ी (जिल्द 2 सफहा 201 मिश्कात सफहा 513)

हदीस न010:

हज़रत उम्मे सुलेम से मरवी है फरमाती हैं कि नबी सल्लललाहो तआला अलैह वसल्लम उनके यहाँ तशरीफ लाते थे तो उनके घर क़ैलूला फरमाते थे (दो पहर में आराम फरमाते) हुज़ूर सल्लललाहो तआला अलैह वसल्लम को पसीना बहुत आता था तो वह हुज़ूर का पसीना जमा कर लेती थीं और उसको खुशबू में डाल लेती थीं तो हुज़ूर ने फरमाया ऐ उम्मे सुलेम यह क्या करती हो उन्होंने अर्ज़ किया या रसूल उल्लाह आपका पसीना है जिसे हम खुशबू में डाल लेते हैं और यह हर खुशबू से उम्दा खुशबू है और एक रिवायत में है कि उम्म सुलेम ने अर्ज़ किया या रसूल उल्लाह हम अपने बच्चों के लिए इससे बरकत की उम्मीद रखते हैं।हुज़ूर ने इरशाद

फरमाया तुम ठीक करती हो।

(मिश्कात सफहा 517)

हर इन्सान का पसीना बदबूदार होता है लेकिन अल्लाह के महबूब मुस्तफा सल्लललाहो तआला अलैह वसल्लम की अनोखी शान है कि आपका पसीना भी हर खुशबू से बढ़कर खुशबूदार था वाकइ आप बेमिसाल हैं आपका कोई जवाब नहीं।

हदीस न0 11:

हज़रत अनस से मरवी है कि रसूल उल्लाह सल्लललाहो तआला अलैह वसल्लम चमकदार रंग वाले थे आपका पसीना मोतियों की तरह था चलते तो ऐसा लगता जैसे उतर रहें है और आप की मुबारक हथेलियाँ मोटे और बारीक रेशम से भी ज़्यादा नर्म थीं मुश्क और अम्बर में भी मैंने हुजूर की तरह महक और खुशबू न पाई।

(मुस्लिम जिल्द 2 सफहा 257 मिश्कात सफहा 516)

हदीस न0 12:

हज़रत अम्मार बिन यासिर के पोते हज़रत अबु उबैदा से मरवी है कि मैंने रूबयइअ बिन्ते मुअव्वज़ बिन अफराअ से गुज़ारिश की कि हुजूर की शान बयान किजिए। तो उन्होने फरमाया कि अगर तुम रसूल उल्लाह सल्लललाहो तआला अलैह वसल्लम को देखते तो ऐसा लगता है जैसे तुम सूरज को निकलते हुए देख रहे हो।

(मिश्कात सफहा 517)

हदीस न0 13:

हज़रत जाबिर बिन समुरह से मरवी है कि रसूल उल्लाह सल्लललाहो तआला अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि बेशक मैं मक्का मुअज़्ज़मा में उस पत्थर को ख़ूब पहचानता हूँ जो ऐलाने नबुव्वत से क़ब्ल मुझ को सलाम करता था।

(मुस्लिम जिल्द 2 सफहा 245)

हदीस न0 14:

हज़रत अबूज़र गिफारी से मरवी है उन्होने रसूल उल्लाह सल्ललललाहो तआला अलैह वसल्लम से अर्ज़ किया कि या रसूल उल्लाह आपने कैसे जाना के आप नबी हैं यहाँ तक के आप को यक़ीन हो गया हुजूर ने फरमाया कि एक बार जब मैं मक्का मुअज्ज़मा के एक पथरीले इलाके में था तो दो फरिश्ते आये एक ज़मीन की तरफ चला गया और दूसरा ज़मीन व आसमान के दरमियान रहा तो उनमें से एक ने अपने दूसरे साथी से कहा क्या यह वही है उसने कहा हाँ इनको एक आदमी से तोलो मैं तोला गया पस मैं ही भारी था फिर कहा 10 से तोलो मैं 10 से तोला गया तब भी मैं भारी था फिर कहा 100 से तोलो तो मैं तोला गया अब भी मैं भारी था फिर कहा 1000 से तोलो तो मैं तोला गया अब भी मैं ही भारी था और मैं देख रहा हूँ कि पल्ला हलका होने की वजह से गोया वह मेरे ऊपर गिरे आ रहें हैं तो इनमें से एक फरिश्ते ने दूसरे से कहा अगर तुम इनको इनकी पूरो उम्मत से तोलो तब भी यह भारी होंगे।

(मिश्कात सफहा 515)

इस हदीस से मालूम हुआ कि रसूल उल्लाह सल्ललललाहो तआला अलैह वसल्लम की ज़ाहिरी बशरियत और हैं और आपकी हकीकत कुछ और।बज़ाहिर देखने में तो आप इन्सानों की तरह कदो क़ामत और वज़न रखते हैं।और आपकी हक़ीक़त सारी उम्मत पर वज़न के ऐतबार से भी भारी है।और आपकी उम्मत कितनी बड़ी है इस बारे में खुद खुदाये तआला का इरशाद है,

हमने आपको सारे इन्सानों की तरफ नबी व रसूल बना कर भेजा है।तो जो देखने में इन्सान व बशर महसूस होता है लेकिन उसका वज़न सारे इन्सानों से कहीं ज़्यादा हो इसकी हक़ीक़त को अल्लाह तआला के अलावा कौन जान सकता है।

अल्लाह का महबूब बज़ाहिर तो बशर है
जो उसकी हक़ीकत है खुदा ही को खबर है

हदीस न0 15:

हज़रत इमाम अली बिन हुसैन रज़ि अल्लाहो तआला अन्हुमा से मरवी है. कि जब रसूल उल्लाह सल्लललाहो तआला अलैह वसल्लम बीमार हुए तो उनके पास हज़रत जिबरईल अमीन आये और अर्ज़ किया या रसूल उल्लाह अल्लाह तआला ने मुझको आपके पास भेजा है आपका इहतराम और इज़्ज़त अफजाई के लिए रब तआला आपसे इस बारे में पूछता है, जबके वह आप से ज़्यादा जानता है कि आप अपने आपको कैसा पाते हैं हुजूर ने फरमाया ऐ जिबरईल मैं खुद को ग़मग़ीन व रंजीदा पाता हूँ फिर हुजूर की खिदमत में दूसरे दिन हाज़िर हुए और यही अर्ज़ किया हुजूर ने वही जवाब दिया जो पहले दिन दिया था फिर आपके पास तीसरे दिन आये और वही अर्ज़ किया हुजूर ने फिर वही जवाब दिया और उनके साथ एक फरिश्ता आया जिसका नाम इस्माईल है वह एक लाख फरिश्तों का सरदार है और उनमें का हर एक एक लाख का सरदार है उसने हुजूर से इजाज़त मांगी फिर आपसे इसी मुताल्लिक पूछा फिर हज़रत जिबरईल ने मलकुल मौत की तरफ इशारा करके कहा हुजूर यह खिदमत में हाज़िरी की इजाज़त चाहते हैं और उन्होंने न इससे पहले किसी आदमी से इजाज़त मांगी है और न बाद में किसी से इजाज़त लेंगे हुजूर ने इरशाद फरमाया उन्हें इजाज़त दे दी जाये उन्हें इजाज़त मिली और फिर मलकुल मौत ने आपको सलाम किया और कहा हुजूर अल्लाह तआला ने मुझको आपकी खिदमत में भेजा है तो अगर आप हुक्म करें तो मैं आपकी रूह कब्ज़ करूँ और हुक्म फरमायें तो न कब्ज़ करूँ हुजूर ने इरशाद फरमाया ऐ मलकुल

मौत तुम मेरा हुक्म मानोगे अर्ज़ किया हाँ मेरे लिये खुदाए तआला का यही फरमान है कि मैं आपकी इताअत करूँ तो हुज़ूर ने हज़रत जिबरईल की तरफ देखा तो हज़रत जिबरईल ने अर्ज़ किया या रसुल उल्लाह अल्लाह तबारक व तआला आपकी मुलाकात के लिये मुशताक हैं तो रसूल उल्लाह सल्लललाहो तआला अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया ऐ मलकुल मौत अपना काम करो तो उन्होंने आपकी रूह कब्ज़ की।

(मिश्कात सफहा 549 बाब वफातिन्नबीं)

मिश्कात शरीफ की इस हदीस से अच्छी तरह समझ में आ जाता है कि हुज़ूर बेमिस्ल और बेमिसाल हैं और आपकी रूहे पाक आपकी इजाज़त से कब्ज़ की गई और फरिश्ते भी आपके इजाज़त और हुक्म के बग़ैर कुछ नहीं करते और आपके हुज़ूर हाज़री के लिये भी इंजाज़त चाहते हैं क्योंकि आपका दरबार कायनात के बादशाह का दरबार है।

हदीस न0 16:

सहावी रसूल हज़रत अबू सईद फरमाते हैं कि मैं मस्जिद नबवी में नमाज़ पढ़ रहा था तो रसूल उल्लाह सल्लललाहो तआला अलैह वसल्लम ने मुझे पुकारा मैंने नमाज़ की वजह से जवाब नहीं दिया जब बाद में हाज़िर खिदमत हुआ तो हुज़ूर ने सबब पूछा तो मैंने अर्ज़ किया मैं नमाज़ पढ़ रहा था हुज़ूर ने फरमाया क्या अल्लाह तआला ने (कुरआन शरीफ) में यह नहीं फरमाया है जव अल्लाह व रसूल बुलायें तो जवाब दो।

(बुखारी जिल्द 2 सफहा 642 और सफहा 669)

सही बुख़ारी की इस हदीस से वाज़ेह हो गया कि नमाज़ पढ़ते वक्त किसी बात का जवाब नहीं दिया जा सकता और न किसी के बुलाने पर आया जायेगा और ऐसा करेगा तो नमाज़ बातिल हो जायेगी लेकिन हुज़ूर के बुलाने पर आना जरूरी है और हुज़ूर की शान औरों की जैसी

नहीं है और आपके मिस्ल कोई नहीं।

और कुरआन करीम की वह आयत जो हज़रत अबु सईद को नसीहत फरमाते हुये याद दिलाई जिस का मतलब है अल्लाह व रसूल पुकारें तो फौरन हाज़िर हो जाओ यह सूरेह अनफाल पाराह न० 9 रुकूअ़ 17 में है इस आयत में अल्लाह तआला ने अपने नाम के साथ हुज़ूर का नाम मिलाया है।

हज़रात हमारी पेश करदाह इन अहादीस से खूब समझ में आ गया के अल्लाह के रसूल हम जैसे बशर नहीं हैं, जो बे अदब और गुस्ताख लोग हुज़ूर को हम जैसा बशर कहते हैं वह दलील में कुरआन की यह आयत पढ़ते हैं।

ऐ रसूल तुम फरमाओ मैं (ज़ाहिर में) तुम जैसा बशर हूँ।

यह इन लोगों की नादानी है क्योंकि आयत में यह भी देखना चाहिए कि अल्लाह तआला ने अपनी तरफ से न कहकर हुज़ूर को हुक्म दिया कि तुम फरमा दो कि मैं तुम्हारे जैसा बशर हूँ अल्लाहने अपनी तरफ से नहीं फरमाया के मेरा रसूल तुम्हारे जैसा है और जिसके पास थोड़ी सी भी अक़्ल है वह जानता है कि बड़ा इन्सान खुद अपने बारे में ऐसी बातें आजिज़ी के तौर पर कह देता है जो दूसरे इसके बारे में नहीं कह सकते।बड़े-बड़े वली कुतुब और गौस नेक और दीनदार लोग अपने बारे में यह कह देते हैं कि हम बहुत बड़े गुनाहगार सियाकार हैं लेकिन कोई और उन्हें गुनाहगार सियाकार कहें तो उन्हें तकलीफ होगी।और वह कहने वाला बे अदब कहलायेगा। बड़े-बड़े बादशाहों, नवाबों, राजाओं,मिनिस्टरों,अफसरों को देखा गया है कि वह खुद को यह कह देते हैं कि हम भी आप लोगों की तरह एक छोटे आदमी हैं।लेकिन दूसरे इनको अपना जैसा छोटा आदमी कहकर बात चीत नहीं करते बल्कि उन्हें सरकार,हुज़ूर,जहांपनाह,आका,साहब जनाब और सर वगैरह कहकर बात करते हैं।लिहाज़ा हुज़ूर सय्यदे आलम मुस्तफा सल्ललाहो तआला अलैह वसल्लम ने भी इनकसारी के तौर पर भी अपने बारे में खुद कोई

ऐसी बात कही हो तो गुलामों और आशिकों को हुज़ूर के बारे में वह बात बिल्कुल नहीं बोलना चाहिए।लिहाज़ा जो हुज़ूर को अपना जैसा बशर कहने के लिए दलील में यह आयत लाते हैं वह बड़े बे अदब जाहिल और अहमक हैं और नाम के मुसलमान हैं इन्हें अपने इस ख़्याल से जल्द तौबा करना चाहिए वरना मरने के बाद बुरा हश्र होगा।और यह भी ख़्याल करना चाहिए के इस आयत को नाज़िल करने का मकसद यह है कि पिछली उम्मतों की तरह लोग हुज़ूर की शान और मरतबे और आपके मोजिज़ों को देख कर कहीं आपकों खुदा न समझलें और आपकी पूजा और परिशतिश न करने लगें।

हक यह है कि जो अल्लाह तआ़ला के अलावा किसी भी ज़ात की इबादत और पूजा करे और किसी को भी माबूद बनाये वह काफिर है मुसलमान नहीं और जो अल्लाह के रसूल को बिलकुल अपने जैसा बशर कहे वह भी निरा काफिर पक्का जहन्नमी है।

बल्कि अल्लाह के रसूलों को अपने जैसा बशर कहना पहले ही से काफिरों का तरीका रहा है जैसा के क़ुरआन शरीफ में सूरेह मोमिनीन पाराह 18 दूसरे रूकू की दूसरी आयत और सुरेह यासीन पाराह 22 के आखिरी रूकू की तीसरी आयत में साफ-साफ लिखा हुआ है जिस का जी चाहे वह देख ले।

रसूलुल्लाह ﷺ

विसाल के बाद भी ज़िन्दा हैं

अहले हक़ का ख़्याल यह है कि मौत बिल्कुल ख़त्म हो जाने का नाम नहीं है बल्कि रूह के जिस्म से निकल जाने का नाम है।क्योंकि मौत के माइने अगर यह लिए जायें कि वह रूह और जिस्म दोनों के फना हो जाने और मिट जाने का नाम है तो सवाल यह पैदा होगा कब्र में अज़ाब व सवाब किसके लिए है।तो मानना पड़ेगा कि इन्सान मरने के बाद भी एक ख़ास क़िस्म की ऐसी ज़िन्दगी रखता है जिसके ज़रिये वह अल्लाह तआला की तरफ से इनाम या अज़ाब का एहसास कर सके।इसके अलावा अहादीस से यह भी साबित है मुरदा लोगों को पहचानता है उनकी आवाज़ सुनता है देखता या जानता है यह तो हर इन्सान के लिए है।लेकिन ख़ुदाये तआला के कुछ मख़सूस बन्दे ऐसे भी हैं जो बाद मौत के भी पूरी तरह ज़िन्दा हैं और उन्हें दुनिया के से इख़्तयारात व बड़े कमालात हासिल हैं और वह जिस्म व रूह दोनों के साथ ज़िन्दा हैं ख़ासकर महबूब खुदा हज़रत मुस्तफा सल्ललल्लाहो अलैह वसल्लम तो परदा फरमाने के बाद पूरे तौर पर दुनिया ही की तरह हयात हैं और आपकी दुनयवी और विसाल के बाद की ज़िन्दगी में कोई फर्क नहीं है और आपकी यह हयाते बरज़खी दीगर अम्बिया व औलिया से आला व अशरफ व अकमल है।आप पर थोड़ी देर के लिए मौत तारी की गई और फिर हमेशा की ज़िन्दगी अता फरमाई गई और शहीदों को तो साफ कुरआन करीम में अल्लाह जल्ल शानहू ने ज़िन्दा कहा।और उन्हें मुर्दा कहने से मना फरमाया। कुरआने करीम में है -

जो लोग राहे खुदा में क़त्ल हो गये उन्हें मुर्दा न कहो बल्कि वह ज़िन्दा हैं हाँ तुम्हे खबर नहीं है। (पाराह 2 रुकू 3)

और दूसरी जगह फरमाया है

जो राहे खुदा में मारे गये उन्हें मुर्दा ख्याल न करो बल्कि वह ज़िन्दा हैं अपने रब के यहाँ रिज़्क दिये जाते हैं,शाद हैं इस पर जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से दिया (पाराह 4 रुकू 8)

अब इससे मुतअल्लिक अहादीस मुलाहज़ा फरमाइये इनमें कुछ अहादीस तो वह हैं जो आम लोगों से मुताल्लिक हैं कि वह भी मरने के बाद एक खास क़िस्म का एहसास और इल्म रखते हैं।और कुछ अहादीस ख़ासाने खुदा खास कर हुज़ूर सय्यदना अहमद मुस्तफा सल्ललल्लाहो अलैह वसल्लम के बाद विसाल हयाते हक़ीक़ी व जिस्मानी के सुबूत में हैं यहाँ यह बता देना भी ज़रूरी है कि क़ुरआन करीम की जिन आयतों या हदीसों में हुज़ूर सल्ललल्लाहो अलैह वसल्लम के लिए मौत का लफ्ज़ आया है तो इसका मतलब यह है कि थोड़ी देर के लिए आप पर मौत तारी हुई और बेशक मौत व फना से बिल्कुल पाक सिर्फ अल्लाह तबारक व तआला ही की ज़ात है इस तरह दोनों तरह की आयात व अहादीस पर अमल हो जायेगा।यानी जिन आयात में या अहादीस में आपके लिये मौत का ज़िक्र है इसका मतलब यह लिया जाये कि थोड़ी देर के लिये मौत आई।और वह आयाते क़ुरआनिया जो हमने लिखीं और जो अहादीस हम पेश करेंगे कि इनका मतलब यह लिया जाये कि एक आन के लिये मौत से वाबस्तगी के बाद आप बाक़इदह हयात हैं।यानी मौत भी आई और हयात भी हैं।

हदीस 1:

हज़रत अबूदरदाअ कहते हैं कि रसूल उल्लाह सल्ललल्लाहो अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया के जुमे के दिन मेरे ऊपर दुरूद शरीफ़ पढ़ा करो यह हाज़िरी का दिन है इस दिन फरिश्ते हाज़िर होते हैं और जब भी कोई मेरे ऊपर दुरूद पढ़ता है तो उसका दुरूद मेरे ऊपर पेश होता रहता है जब तक वह पढ़ता रहता है।हज़रत अबूदरदाअ कहते हैं मैंने अर्ज़ किया आपके दुनिया से रूखसत होने के बाद भी रसूल उल्लाह

सल्ललाहो अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया। बेशक अल्लाह तआला ने ज़मीन के लिये हराम कर दिया है कि वह अम्बिया के जिस्म को खाये अल्लाह के नबी ज़िन्दा रहते हैं और उन्हें रिज़्क दिया जाता है।

(इब्ने माजह सफहा 119 मिश्कात सफहा 121)

यह हदीसे पाक इस अकीदे के लिये बिल्कुल सरीह व साफ है कि रसूल सल्ललाहो अलैह वसल्लम की हयाते ज़ाहिरी और बाद विसाल में किसी किस्म का कोई फ़र्क नहीं है।

हदीस न0 2:

हज़रत आयशा सिद्दीका से मरवी है कि मैं इस हुजरे जिस में रसूल सल्ललाहो अलैह वसल्लम की कब्रे अनवर है यूँ ही नन्गे सर आती जाती थी कि एक कब्र मेरे शौहर की है (यानी रसूल उल्लाह सल्ललाहो अलैह वसल्लम की) और दूसरी कब्र मेरे बाप की है (यानी हज़रत अबूबक्र रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो की) और जब से इसमें हज़रत उमर दफ्न किये गये हैं तो जब कभी भी मैं आती हूँ तो शर्म व हया की वजह से चादर खूब लपेट कर आती हूँ।

(मिश्कात सफहा 154)

इस हदीस से खूब वाजेह हो गया कि हज़रत आएशा सिद्दीका रज़ि अल्लाहो तआला अन्हा का अक़ीदा यही था कि खुदाये तआला के मखसूस बन्दे बाद विसाल अपनी कब्रों से ऐसे देख रहें हैं जैसे ज़िन्दगी में मुलाहज़ा फरमाते थे वरना हज़रत रसूल पाक सल्ललाहो अलैह वसल्लम और हज़रत अबू बक्र की कब्र अनवर पर बाप और शौहर होने की बिना पर बे परदा आना और हज़रत उमर के वहाँ दफ्न होने के बाद परदे के साथ आने का और क्या मतलब है?

हदीस न0 3:

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर से मरवी है कि

रसूल उल्लाह सल्ललल्लाहो अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिसने हज किया और मेरी कब्र की ज़्यारत की तो वह ऐसा ही है जैसे उसने मुझको दुनयवी ज़िन्दगी में देखा।

(मिश्कात सफहा 241)

हदीस न0 4:

हज़रत अबूज़र ग़िफ़ारी से मरवी है कि रसूल उल्लाह सल्ललल्लाहो अलैह वसल्लम ने मेराज की शब आसमानों में हज़रत आदम, हज़रत इदरीस, हज़रत इब्राहीम, हज़रत मूसा, हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से मुलाकात फरमाई और यह भी जिक्र किया कि उन्होनें आदम अलैहिस्सलाम को पहले आसमान पर और इब्राहीम अलैहिस्सलाम को छठे आसमान पर पाया तो हुज़ूर जब जिबरईल अलैहिस्सलाम के साथ हज़रत इदरीस अलैहिस्सलाम के पास से गुज़रे तो उन्होंने हुजूर के लिये फरमाया कि मुबारक हो यह सफरे मेराज इनको जो स्वालेह नबी है और स्वालेह भाई हैं।फिर रसूल उल्लाह सल्ललल्लाहो अलैह वसल्लम हज़रत मूसा के पास से गुज़रे तो हज़रत मूसा ने भी हुज़ूर को इसी तरह मुबारक बाद दी हुज़ूर ने पूछा यह कौन हैं तो हज़रत जिबरईल ने अर्ज़ किया हुज़ूर यह मूसा हैं।रसूल उल्लाह सल्ललल्लाहो अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि फिर मैं हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के पास से गुज़रा तो उन्होंने भी इसी तरह मुबारक बाद दी मैंने कहा यह कौन हैं बताया गया यह ईसा हैं बेटे मरयम के, फिर मैं हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के पास से गुज़रा तो उन्होंने कहा मुबारक बादी है इनके लिये जो स्वालेह नबी और स्वालेह फरज़न्द हैं मैंने कहा यह कौन हैं बताया गया यह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम हैं।

(मुस्लिम जिल्द 1 सफहा 93 मिश्कात सफहा 529 और बुखारी जिल्द 1 सफहा 471)

इस हदीस के यह अलफाज़ हमने मुस्लिम शरीफ़ से नक्ल किये हैं इसके अलावा इस मफहूम की हदीस यानी शबे मेराज हुजूर का अम्बिया किराम से मुलाकात दुआ व सलाम और बातचीत और मुबारकबादियाँ बुखारी और मुस्लिम बल्कि तक़रीबन सभी अहादीस की किताबों में मुखतलिफ मुकामात पर मुखतलिफ अल्फाज़ से मरवी है। जिससे खूब अच्छी तरह साबित होता है कि अम्बिया किराम बाद विसाल भी अपने जिस्मों के साथ ज़िन्दा हैं और ज़मीनों आसमानों में जहाँ चाहते हैं रहते हैं आते और जाते हैं। बल्कि इस हदीस के आखिरी कलमात जो इख्तिसार के पेशे नज़र हमने नक़्ल नहीं किये इनमें यह भी है हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के कहने पर बार बार हुजूर ने रब तआला से नमाज़ में आसानी चाही और वह पचास से पांच वक्त की हुई। इन अहादीस को पढ़कर यह कहना कि अम्बिया व औलिया मआज़ल्लाह मर कर फना हो गये या बिल्कुल मिट गये यह ईमान वालों की बोलियाँ नहीं हैं।

हदीस न0 5:

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास से मरवी है हुजूर के सहाबा में से एक साहब ने एक जगह क़ब्र पर ख़ेमा लगा लिया और उन्हें ख़बर न थी कि यहाँ कब्र है तो उन्हें मालूम हुआ कि यह किसी की कब्र है और साहबे कब्र सूरेह तबारकल्लज़ी की तिलावत कर रहें हैं यहाँ तक कि उन्होंने पूरी सूरेह तिलावत की यह साहब हुजूर की खिदमत में हाज़िर हुये और अर्ज़ किया या रसूल ल्लाह मैंने भूल से एक क़ब्र पर खेमा लगाया तो मैंने देखा कि क़ब्र में जो साहब हैं वह सूरेह मुल्क तिलावत कर रहें हैं यहाँ तक के उन्होंने पूरी सूरेह पढ़ी।

(तिर्मिज़ी जिल्द2 सफहा112 मिशकात सफहा 187)

इस हदीस से मालूम हुआ कि अल्लाह के मख्सूस बन्दे अपनी कब्रों में हयात हैं और वह अपनी कब्रों में खुदाऐ तआला की इबादत और कुरआन अज़ीम की तिलावत भी कर लेते हैं यानी इनकी ज़िन्दगी दुनिया की तरह है।

हदीस न0 6:

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम अरज़क घाटी से गुज़रे फरमाया यह कौन सी घाटी है अर्ज़ किया गया अरज़क फरमाया गोया के मैं मूसा अलैहिस्सलामको देख रहा हूँ जो पहाड़ी से नीचे उतर रहें हैं और बुलन्द आवाज़ से इज्ज़ो इनकसारी के साथ अल्लाह तआला के लिये हज का तलबियाह पढ़ रहें हैं फिर हुजूर हरशा पहाड़ी रास्ते पर तशरीफ लाये फरमाया यह कौन सा पहाड़ी रास्ता है अर्ज़ किया गया इसका नाम हरशा है तो हुजूर ने फरमाया गोया के मैं मता के बेटे हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम को एक पुरगोश्त सुर्ख ऊँटनी पर देख रहा हूँ वह ऊन का जुब्बा पहने हुए हैं उनकी ऊँटनी की मुहार खुजूर की छाल से बनी हुई है और वह हज के लिये तलबिया पढ़ रहें हैं।

(मुस्लिम जिल्द 1सफहा 94)

यानी जिन अम्बिया किराम के विसाल को कई-कई हज़ार साल गुज़र चुके थे इनको हुजूर ने हज के लिये तलबिया पढ़ते हुए यानी हज करते हुए मुलाहज़ा फरमाया। (आँख से देखा)

हदीस न0 7:

हज़रत जाबिर से मरवी है जब उहद का मारका दरपेश आया तो मेरे बाप ने रात को मुझे बुलाया और फरमाया कि लगता है कि सुबह को जंग में शहीद होने वाले असहाब में पहला मैं हूँगा और हुजूर सल्ललललाहो अलैह वसल्लम को छोड़ क़र बाक़ी लोगो में मेरे नज़दीक सबसे ज़्यादा महबूब तुम हो।मेरे ऊपर कुछ क़र्ज़ है इसको अदा करना और अपनी बहिनों के साथ नेक सुलूक करना हज़रत जाबिर कहते हैं जब सुबह को जंग हुई तो सबसे पहले मेरे बाप शहीद हुए मैंने उन्हें

एक दूसरे के साथ क़ब्र में दफ्न कर दिया, फिर मुझको नागवार मालूम हुआ कि मेरे बाप किसी और के साथ क़ब्र में दफ्न हों तो मैंने छः माह के बाद क़ब्र को खोद कर उन्हें निकाला तो वह ऐसे निकले जैसे आज और अभी-अभी दफ्न किये गये हों बस ज़रा कान मुतास्सिर था।

(बुखारी जिल्द 1 सफहा 180)

इस हदीस से बख़ूबी मालूम हुआ हज़रत जाबिर के वालिद अब्दुल्लाह 6 माह गुज़रने के बाद भी क़ब्र में सही व सालिम तरो ताज़ा थे। लिहाज़ा यह कहना दुरूस्त है कि खुदा के खास बन्दे मौत के बाद भी ज़िन्दा हैं।

(बुखारी जिल्द 1 सफहा 178)

हदीस न0 8

हज़रत अनस रिवायत करते हैं कि रसूल उल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया इन्सान जब क़ब्र में दफ्न कर दिया जाता है और लोग मुड़ने लगते हैं तो वह इन लोगों के जूतों की आहट सुनता है।

(बुखारी जिल्द 1 सफहा 178)

हदीस न0 9

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो से मरवी है कि रसूल उल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जब जनाज़ा तय्यार हो जाता है और लोग उसे कन्धे पर उठाते हैं अगर वह अच्छा है तो कहता है मुझे जल्द ले चलो अगर बुरा है तो घर वालो से कहता है मुझको तुम कहाँ लिये जा रहे हो। इसकी आवाज़ को सिवा इन्सानों के सब सुनते हैं अगर इन्सान सुन ले तो बेहोश हो जाये।

(बुखारी जिल्द 1 सफहा 176)

हदीस न0 10:

इब्ने शहाब ने कहा कि यह हैं रसूल उल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम के ग़ज़वात (लड़ाइयाँ) और फिर ग़ज़वा बदर का जिक्र करते हुए बताया कि बदर में मारे गये काफिरों की लाशों से ख़िताब करते हुए रसूल उल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया "क्या तुमने वह पा लिया जिसका तुम्हारे रब ने तुमसे सच्चा वादा फरमाया था। लोगों ने कहा या रसूल उल्लाह क्या आप मुर्दों से कलाम कर रहें हैं। रसूल उल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया जो कुछ मैं कह रहा हूँ यह तुमसे ज़्यादा मेरी बात को सुन रहें हैं।

(बुखारी जिल्द 2 सफहा 573)

हदीस न0 11:

हज़रत आयशा सिद्दीका रज़ि अल्लाहों तआला अन्हा से रिवायत है कि उन्होंने रसूल उल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम से पूछा कि जब हम कब्रों की ज़्यारत करें तो क्या पढ़ें हुजूर ने इरशाद फरमाया पढ़ो ऐ मोमिनों और मुसलमानों के घर वालो तुम पर सलाम हो अल्लाह तआला हमारे पिछले और पहले वालों पर रहम फरमाये हम भी इन्शाह अल्लाह तआला तुमसे आकर मिलने वाले हैं।

(मुस्लिम जिल्द 1 सफहा 314 किताबुल जनाइज़ मिश्कात बाब ज़ियारतिलकुबूर सफहा 154)

हदीस न0 12:

हज़रत बुरीदा से मरवी है कि जब लोग कब्रों की ज़्यारत को जाते तो रसूल उल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम उन्हें यह अल्फाज़ सिखा देते-

ऐ मोमिनों और मुसलमानों के घर वालो तुम पर

सलाम हो इन्शाह अल्लाह हम भी तुम से ज़रूर मिलने वाले हैं। हम अल्लाह तआला से अपने और तुम्हारें लिये आखिरत में अज़ाब से सलामती मांगते हैं।

इन अहादीस को पढ़कर आपको लगेगा कि हुज़ूर ने कब्रों की ज्यारत के वक्त जो दुआ तालीम फरमाई है उसका तरीका ऐसा है जैसे ज़िन्दों से बात चीत और दुआ व सलाम करते हैं और मानना पड़ेगा के मरने के बाद भी इन्सान एक खास किस्म की ज़िन्दगी के साथ ज़िन्दा है।

हदीस न013:

हज़रत सईद बिन अब्दुल अज़ीज़ से मरवी है कि अय्यामें हर्रह में 3 दिन मस्जिद नबवी शरीफ में न अज़ान हुई और न तकबीर हज़रत सईद बिन मुसय्यब मस्जिद ही में रहे और उन्हें नमाज़ के वक़्त का पता एक गुनगुनाहट की आवाज़ से चलता था जो रसूल उल्लाह सल्ललाहो अलैह वसल्लम की क़ब्रे अनवर से हर नमाज़ के वक्त आती थी।

(मिश्कात बाबुल करामात सफहा 545)

यह वाक्या हर्रह 63 हि० का वह भयानक हादिसह है कि जब यज़ीद पलीद ने मुस्लिम बिन अकबा को एक लशकर देकर मदीने पर चढ़ाई कराई और शहरे रसूल को बरबाद किया बेशुमार मर्द व औरत कत्ल किये गये आबरू रेज़ी भी की गई मस्जिद नबवी शरीफ में मुसलसल ३ दिन तक अज़ान व जमाअत न हुई। मशहूर ताबई हज़रत सईद बिन मुसय्यब दीवानों की तरह मस्जिद शरीफ के एक कोने में रहते थे यज़ीदी फौज ने उन्हें पागल समझ कर छोड़ दिया था यह अज़ान व नमाज़ के वक़्त रसूल उल्लाह सल्ललाहो अलैह वसल्लम की क़ब्रे अनवर से गुनगुनाहट की आवाज़ सुनते और उसी पर नमाज़ अदा फरमाते।

हदीस न0 14:

हज़रत कअब से रिवायत है कि हर दिन 70000 हज़ार फरिश्ते उतरते हैं और वह रसूल उल्लाह

सल्ललाहो अलैह वसल्लम की क़ब्रे अनवर को घेर लेते हैं अपने पर बिछा देते हैं और रसूल सल्ललाहो अलैह वसल्लम पर दुरूद शरीफ पढ़ते रहते हैं यहाँ तक के जब शाम हो जाती तो वह चढ़ जाते हैं। और इनकी तरह इतने ही फरिश्ते और उतरते हैं वह भी इसी तरह करते हैं यहाँ तक के हुज़ूर जब कब्रे अन्वर से बाहर तशरीफ लायेंगे तो 70000 हज़ार फरिश्तों के झुरमुठ में जलवा फरमायेंगे और वह फरिश्ते आपको पहुँचायेंगे।

(मिश्कात बाबुल करामात सफहा 546)

इस हदीस के पेशे नज़र यकीनन रसूलउल्लाह सल्ललाहो अलैह वसल्लम कब्र अन्वर में बाकायदा बाहयात हैं इसी लिये तो यह सब एहतमाम फरमाया जाता है। वरना जहाँ सिर्फ मिट्टी का ढ़ेर हो वहाँ फ़रिश्ते क्यों आयेंगे।

हदीस न0 15:

हज़रत आएशा सदीका फरमाती हैं कि जब हज़रत निजाशी का विसाल हुआ तो हम लोगों में यह बात मशहूर थी के इन की कब्र पर हमेशा नूर रहता है।यह हदीस अबूदाऊद ने रिवायत की।

(मिश्कात बाबुल करामात सफहा 545)

यह सब अहादीसे करीमा जिन में से किसी में आपने मुलाहेज़ा फरमाया कि अय्यामे हर्रह में हर नमाज़ व अज़ान के वक्त हुज़ूर सल्ललाहो अलैह वसल्लम की क़ब्रे अनवर से गुनगुनाहट की आवाज़ आती थी और किसी में यह कि आप की क़ब्रे अनवर पर 70000 हज़ार फरिश्ते सुबह व शाम बदल बदल कर हाज़िर होते हैं और आप पर दुरूद शरीफ पढ़ते रहते हैं और इसी उनवान की और हदीसें जो आपने मुलाहेज़ा फरमाईं। इन सब के बावुजूद किसी मुसलमान से यह उम्मीद नहीं की जा सकती कि वह यह बकवास करे के हुज़ूर मुर्दा हैं या मर कर

मिट्टी में मिल गये हैं और आपकी कब्रे अन्चर मिट्टी का ढेर है। ऐसी बातें करने वाला कोई काफिर तो हो सकता है लेकिन मुसलमान नहीं।

अब हुजूर सल्ललाहो अलैह वसल्लम के बाद विसाले हयात हकीकी से मुतअल्लिक एक हदीस मुलाहेज़ा फरमायें।

हदीस 16:

हज़रत अब्दुल्लाह इबने अब्बास रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो इरशाद फरमाते हैं कि मैंने एक दिन दोपहर के वक्त रसूल उल्लाह सल्ललाहो अलैह वसल्लम को ख्वाब में देखा कि आप परेशान हाल और गुबार आलूद हैं और आपके दस्त पाक में एक वोतल है जिसमें खून है मैंने अर्ज़ किया या रसूल उल्लाह आप पर मेरे माँ,वाप क़ुर्बान, यह क्या है? आपने फरमाया यह हुसैन और उनके साथियों का खून है आज का दिन मुझे इसको इकट्ठा करने में गुज़र रहा है।हज़रत अब्दुल्लाह इबने अब्बास रज़ि अल्लाहो तआला अन्हुमा फरमाते हैं कि मैंने हिसाव लगाया तो यह वही दिन वही वक्त था जिसमें जनाब हुसैन शहीद किये गये ।

(मिश्कात बाब मनाकिबे अहले बैत सफहा 572)

इस हदीस से जहाँ यह मालूम हुआ कि रसूल उल्लाह सल्ललाहो अलैह वसल्लम परदा फरमाने के बाद बाकायदा ज़िन्दा व जावेद हैं वहीं यह भी साबित हो गया कि आप आलम में कहीं भी जा सकते हैं जैसे कि इमाम हुसैन की शहादत के वक़्त आप करबला में थे।

हदीस न0 17:

हज़रत अबू अय्याश रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि रसूल उल्लाह सल्ललाहो अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जो सुबह के वक़्त यह दुआ पढ़े "अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं वह अकेला है उसका कोई साझी नहीं उसके लिये बादशाहत है और उसी के लिये

हम्द है और वह हर बात पर कादिर है"

तो उस को हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की औलाद में से एक गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा और उसके नामऐ आमाल में 10 नेकियाँ लिखीं जायेंगी और उसके 10 गुनाह कम कर दिये जायेंगे और उसके 10 दरजे बुलन्द कर दिये जायेंगे और वह शाम तक शैतान से महफूज़ रहेगा और अगर शाम को भी पढ़ले तब भी इसको इतना ही मिलेगा।फिर एक साहब ने हुजूर को ख्वाब में देखा और पूछा या रसूलुल्लाह अबू अय्याश ने आपके हवाले से यह दुआ पढ़ने पर जो यह सवाब बताया है वाकई ऐसा ही है (आप ने ऐसा फरमाया है?) तो हुजूर ने फरमाया अबू अय्याश ने जो कुछ कहा वह सही है यानी वह हमारा ही फरमान है।

(अबू दाऊद जिलद 2 किताबुल आदाब सफहा 692)-(इब्नेमाजा बाब मायदऊ बिहिर्रजुल इजा असबहा व अम्सा सफहा न० 284) (मिश्कात बाब मा यकूलों इन्दस्सबाह वलमसाअ सफहा 210)

इस हदीस से खूब वाज़ेह हो गया कि हुजूर विसाल के बाद ज़िन्दा हैं लोगों के पास ख्वाब में भी तशरीफ लाते हैं और उन्हें फैज़ भी पहुँचाते हैं और हक और नाहक के फैसले भी फरमाते हैं।

हदीस न0 18:

जब आपके शहज़ादे हज़रत इब्राहीम का विसाल हुआ तो हुजूर ने फरमाया उनके लिये जन्नत में एक दूध पिलाने वाली मुकर्रर करदी गयी है।

(मिश्कात सफहा 568)

बचपन में इन्तिकाल करने की वजह से जिन्हें जन्नत में दूध पिलाया जाता है। उन्हें मुर्दा कहना मुसलमान का काम नहीं है।

अल्लाह तआला की बारगाह में उसके महबूब बन्दों को वसीलह बनाना

इस उनवान से मुतअल्लिक अहादीस इतनी ज़्यादा हैं कि इन सबको शुमार करना और लिखना मुश्किल है चन्द अहादीस आप आने वाले सफहात में मुलाहेज़ा फरमायेंगे।

अल्लाह जल्ल शानहू का कुर्ब उसकी रज़ा हासिल करने और अपने गुनाहों की मगफिरत कराने के लिए अल्लाह वालों उसके नेक बन्दों को वसीला बनाना उम्मते मुस्लिमा में हमेशा से रायज रहा है।

खुद खुदा वन्द कुद्दूस इसका हुक्म फरमाता है।

तरजुमाह:

अगर वह लोग अपनी जानों पर जुल्म करें (गुनाह करें) तो ऐ महबूब वह तुम्हारे हुजूर हाज़िर हों फिर अल्लाह से माफी चाहें और रसूल इनकी शिफाअत चाहें तो ज़रूर अल्लाह को बहुत तौबह कुबूल करने वाला मिहरबान पायेंगे।

पाराह 5 रूकूअ 6

इस आयत करीमा में खुदाये तआला ने बराहे रास्त अपनी तरफ रूजू करने का हुक्म न देकर रसूल उल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम की बारगाह में हाज़िरी देने का हुक्म दिया है।और हुजूर के लिए हुक्म दिया है कि वह भी इन गुनाहगारों की शिफारिश फरमायें।और एक आयत में तो साफ इरशाद फरमाया जाता है जिसका तरजमह यह है:

"और उसकी तरफ वसीला ढूंढो।"

पारा न06 रूकूअ न09

इस आयत की तफसीर में हाशियए सावी अलल जलालैन में है-

यानी आयत में मज़कूर वसीले के माइने में अम्बिया व औलिया की मोहब्बत भी दाखिल है आयते करीमा की इस तफसीर से उन लोगों

की गलत फहमी भी दूर हो गयी जो कहते हैं कि वसीला सिर्फ आमाले स्वालेहा और नमाज़ रोज़ा वगैराह अहकाम शरआ हैं इनके ज़रिये से क़ुर्बे इलाही हासिल होता है सही बात यह कि नेक काम नमाज़ रोज़ा वगैराह भी वसीलाह हैं और जिनके ज़रिये अल्लाह तआला ने हम तक नमाज़ रोज़ा पहुँचाया है वह सबसे बड़ कर वसीलाह हैं इनसे मोहब्बत व अक़ीदत न रखने वाले और इनको वसीला न बनाने वालों के नमाज़ और रोज़े भी नाकाबिल कुबूल हैं कुरआन अजीम में दूसरी जगह इरशादे खुदा वन्दी है।

और हमने तुम्हें न भेजा मगर रहमत सारे जहाँ के लिए-

पाराह 17 रूकूअ 7

इस आयत का साफ और वाजेह मतलब यही है कि अल्लाह तआला जिस को भी कायेनात में जो कुछ अता फरमाता है वह सब हुजूर का सदका और वसीलाह है क्योंकि आप हर शय के लिए अल्लाह की रहमत हैं।

एक और फरमाने खुदा वन्दी है-

वह मकबूल बन्दे जिन्हें काफिर पूजते हैं वह आप ही अपने रब की तरफ वसीलाह ढूंढते हैं कि इनमें कौन ज़्यादा मुकर्रब हैं।इसकी रहमत से उम्मीद रखते हैं और उस के अज़ाब से डरते हैं।

पाराह 15 रूकुअ 67

हां यह अक़ीदा रखना भी निहायत ज़रूरी है कि अल्लाह तआला मआजल्लाह वसीलेह का मोहताज नहीं है बल्कि वह किसी बात में हरगिज़ किसी का मोहताज नहीं है न उसे किसी की ज़रूरत बल्कि हर एक को उसकी ज़रूरत है।बात सिर्फ यह है कि अल्लाह तआला हर बात पर क़ादिर है बग़ैर वसीले के भी दे सकता है लेकिन वसीलाह उसको पसन्द है और अपने महबूबों के जरिये अता फरमाना उसकी मर्ज़ी है।

खुलासए कलाम यह कि जिस तरह परवर दिगारे आलम बादलों के वसीले से बारिश सूरज के वसीले से धूप और चाँन्द के वसीले से

चाँन्दनी अता फरमाता है बच्चों को माँ बाप के ज़रिये पैदा फरमाता है और उन्हीं के ज़रिये उन्हें पालता है और रोटी रोज़ी अता फरमाता है और इससे उसकी ज़ात में कोई नक़्स नहीं आता न इसकी शान में कोई फर्क आता है बस यूँ ही समझइये कि उसकी मर्ज़ी है कि कायनात आलम के खज़ाने ज़ाहिर और बातिनी नेमतें जिसको भी मिलें वह बारगाहे हबीबे खुदा मोहम्मद मुस्तफा सल्ललल्लाहो अलैह वसल्लम से मिलें और उन्हीं के गुलामों नेक बन्दों के वसीले से बटें इससे उसकी शान में कोई फर्क और कोई ऐब नहीं आता और इसकी शान और परवर दिगारी में हरगिज़ हरगिज़ कोई कमी नहीं आती और ऐसा अकीदा तौहीद के मुखालिफ नहीं।

यह ख्याल अजीब है कि नमाज़ रोज़ा तो अल्लाह तक पहुँचने का वसीलाह हो और जो नमाज़ रोज़े और अहकामे इलहिया का भी वसीलह है वह वसीलाह न हो।जबके नमाज़ रोज़ा वग़ैरह नेक काम जो हम करते हैं हमें पता नहीं यह क़ुबूल भी होते हैं या नहीं लेकिन जो अल्लाह के रसूल हैं जिनको अल्लाह ही ने नमाज़ रोज़ा अहकाम शरअ सिखाने के लिए भेजा है वह यक़ीनन अल्लाह के यहाँ मक़बूल है बल्कि उसके महबूब हैं इनके वसीले को शिर्क कहना हरगिज़ इसलामी अकीदा नहीं है।और यह मुसलमानों की बोली नहीं है।

अब वसीलाह अम्बिया औलिया से मिताल्लिक अहादीस मुलाहज़ा फरमायें

हदीस न01:

हज़रत अबू सईद से मरवी है कि हुज़ूर नबी करीम सल्ललल्लाहो अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि एक ऐसा ज़माना आयेगा जब लोग फौज दर फौज होकर जिहाद करेंगे तो इनसे पूछा जायेगा कि तुम्हारे दरमियान कोई ऐसा शख़्स है जिसने रसूल उल्लाह सल्ललल्लाहो अलैह वसल्लम की सोहबत का शर्फ हासिल किया हो जवाब में कहा जायेगा हाँ तो उसकी बरकत और वसीले से जंग में फतह होगी फिर एक

ज़माना आयेगा।और लोग जिहाद करेंगे तो इनसे मालूम किया जायेगा क्या तुम में कोई ऐसा है जिसने हुजूर के सहाबा को देखा हो जवाब होगा हाँ तो इसके वसीले से जंग में कामयाबी मिलेगी,फिर एक ज़माना आयेगा और लोग जिहाद करेंगे तो इनसे पूछा जायेगा कि तुम में से कोई ऐसा है जिसने हुजूर के सहाबा की सोहबत हासिल करने वालों की सोहबत का शर्फ हासिल किया हो जवाब होगा हाँ तो इसके ज़रिये कामियाबी हासिल होगी।

(बुखारी जिल्द न०1 किताबुल जिहाद सफहा 406)

यह हदीस साफ तौर पर बता रही है कि हुजूर नबी करीम सल्लललाहो अलैह वसल्लम का मुकाम तो अल्लाह ही जाने आपके गुलामों और गुलामों के गुलामों की शान यह है कि इनके वसीले से जंगों में इस्लामी फौजों को फतह हासिल होती है ।

हदीस न02:

हज़रत सय्यदना अली रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो से मरवी है कि रसूल उल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम से मैंने सुना है कि अब्दाल मुल्के शाम में होंगे और वह चालीस होंगे जब इनमें से एक दुनिया से रूखसत होते हैं तो इनकी जगह खुदाये तआला दूसरे को भेज देता है इनकी बरकत से बारिशे बरस्ती हैं इनके वसीले से दुश्मनों पर फतह होती है।और इनके वसीले से शाम वालों से अज़ाब दूर होता है।

(मिश्कात बाब ज़िकरिल यमन व शाम सफहा 582)

हदीस न03:

हज़रत उस्मान बिन हुनैफ से मरवी है कि एक साहब जो नाबीना थे हुजूर नबी करीम सल्लललाहो अलैह वसल्लम की खिदमत में हाज़िर हुये और अर्ज़ किया या रसूल उल्लाह मेरे लिये अल्लाह तआला से दुआ कीजिए कि मेरी आँखे

ठीक हो जायें यानी मेरी बीनाई वापस आ जाये हुज़ूर ने इरशाद फरमाया कि तुम चाहो तो मैं दुआ करूँ और अगर चाहो तो सब्र करो और यह सब्र करना ज़्यादा अच्छा है वह साहब फरमाने लगे हुज़ूर दुआ फरमा दें।तो रसूल उल्लाह सल्ललल्लाहो अलैह वसल्लम ने इनको हुक्म दिया वह अच्छी तरह वुज़ू करें और फिर यह दुआ पढ़ें।

ऐ अल्लाह मैं तुझसे मांगता हूँ और तेरी तरफ तेरी नवी मोहम्मद को वसीला बनाकर मुतवज्जा होता हूँ जो रहमत वाले नवी हैं। और या रसूल उल्लाह मैं आपके वसीले से अपने रब से दुआ करता हूँ ताकि मेरी यह हाजत पूरी हो और ऐ अल्लाह तू हुज़ूर कि शेफाअत मेरे हक में कुबूल फरमा।

(तर्मिजी जिल्द 2 अब्बाबुद्अवात सफहा 196 मिश्कात बाब जामिउददुआ सफहा 219)

इस हदीस में नावीना सहाबी का हुज़ूर की खिदमत में अपनी हाजत बराई के लिये जाना वसीला है।और हुज़ूर ने इनको जो दुआ तालीम फरमाई इसमें भी अपने वसीले से दुआ मांगने का हुक्म दिया इस हदीस में रसूल उल्लाह सल्ललल्लाहो अलैह वसल्लम को वसीला बनाने आपकी तरफ मुतवज्जा होने बल्कि आपको हाज़िर के सीग़े से पुकारने का भी ज़िक्र है। यानी या रसूल उल्लाह कहना जायज़ है।

हदीस न0 4:

हज़रत अनस बिन मालिक से मरवी है कि जब मदीना मुनव्वरा में सूखा पड़ता तो हज़रत उमर फारूक रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो हज़रत अब्बास इब्ने अब्दुल मुत्तलिब के वसीले से बारिश की दुआ मांगते और कहते थे या अल्लाह हम तेरे नबी के वसीले से बारिश मांगते थे तो हम पर बारिश होती थी अब हम तेरे रसूल के चचा के वसीले से बारिश मांगते हैं तो तू हमको सैराब करदे हज़रत अनस कहते हैं हज़रत

उमर की इस दुआ से ख़ूब बारिश होती।

(बुखारी जिल्द न01 अब्वाबुल इसतिस्का सफहा न0137, मिश्कात सफहा 132)

हदीस न0 5:

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने दीनार रिवायत करते हैं कि हमने हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर को अबू तालिब का यह शेर पढ़ते सुना।(और फिर अरबी का एक शेर पढ़ा जिसका तरजुमह यह है) वह गोरी रंगत वाले जिनके चिहरे के वसीले से बारिश मांगी जाती है।वह यतीमों की फरयाद सुनने वाले और मोहताज और कमज़ोर लोगों का सहारा हैं।

हज़रत सालिम कहते हैं कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर को फरमाते हुए सुना कि कभी ऐसा होता कि मैं शायर के इस शेर को ज़हन में लाता और रसूल उल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम के उस चेहरे को देखता जिसके वसीले से बारिश मांगी जाती है तो आप मिम्बर से उतर भी न पाते कि इतनी बारिश होती कि परनाले बह जाते और वह शिअर अबूतालिब का है।

(बुखारी जिल्द न01 सफहा 137)

रसूल उल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम और दीगर अम्बिया किराम और बुर्ज़ुगाने दीन की शान को घटाने वाले लोगों के सामने सही बुखारी की यह हदीस पढ़ी जाती है जिसमें साफ है कि हज़रत उमर ने हज़रत अब्बास के वसीले से बारिश की दुआ मांगी।तो यह लोग इसमें यह तावील करते हैं कि रसूल उल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम के बजाये हज़रत अब्बास हूज़ूर के चचा के वसीले से हज़रत उमर के दुआ मांगने का मतलब यह है कि वसीला ज़िन्दों का है मुर्दों का नहीं हुज़ूर थे तो इनके वसीले से मांगते थे हुज़ूर नहीं हैं तो आपके चचा के वसीले से।हालाकि हदीस का साफ मतलब यह है कि हज़रत उमर फारूक

बताना चाहते हैं कि हुजूर तो हुजूर आपके रिश्तेदारो के वसीले से भी दुआ मांगी जा सकती है।और हज़रत अब्बास का वसीला भी हुजूर का वसीला है क्योंकि इनको वसीला इसलिए बनाया गया कि वह हुजूर के करीबी और चचा हैं तो यह हुजूर का ही वसीला है। इसके अलावा इस हदीस की शरह करते हुये अल्लामा इब्ने हजर अस्कलानी ने इब्ने अबी शैबा के हवाले से इसनाद को सही बताते हुये एक हदीस नक़्ल की है जिसमें है कि हज़रत उमर फारूक रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो की खिलाफत के ज़माने में जब यह सूखा पड़ा तो एक साहब हुजूर सल्ललाहो अलैह वसल्लम की क़ब्रे अनवर पर हाज़िर हुये और अर्ज़ किया या रसूल उल्लाह अपनी उम्मत के लिए बारिश मांगिये लोग हलाक हो रहे हैं तो हुजूर एक सहाबी को ख्वाब में नज़र आये और फरमाया कि उमर के पास जाओ और इनसे इस्तिस्का के लिये कहो तो अब साफ ज़ाहिर हो गया कि विसाल के बाद अल्लाह के महबूब बन्दों की कब्र की हाज़िरी और इनका वसीला जायज़ है।

फतह अलबारी शरह बुखारी जिल्द 2 सफहा 639 मतबाअ दारूस्सलाम (रियाज़)

अम्बिया औलिया के वसीले के मुन्करीन के सामने जब कुरआन की आयत "अल्लाह तक पहुँचने के लिये वसीला ढूंढों" जिसमें साफ वसीले का हुक्म है पढ़ी जाती है तो अल्लाह वालों के मुखालिफ कहते हैं कि आयते करीमा में वसीले का मतलब नेक काम नमाज़ रोज़ा वगैराह हैं नेक बन्दे नहीं और जब ऐसी अहादीस पढ़कर सुनाओ जिसमें बन्दिगाने खुदा को वसीला बनाया गया हो तो तावील करते हैं कि ज़िन्दों का वसीला है मुरदों का नहीं।इधर उधर भागते बिदकते हैं और खुदा के नेक बन्दों की शान घटाने की पूरी कोशिश करते हैं और अपनी सारी काबलियत इसी में खर्च करते हैं इस किताब के आने वाले सफहात में आप इस सिलसिले की अहादीस मुलाहेज़ा फरमायेंगे कि खुदा वाले दुनिया से रुखसत होने के बाद भी ज़िन्दा हैं इनकी ज़िन्दगी और मौत में इस किस्म का फर्क

पैदा करना क़ुरआन व हदीस के खिलाफ है बल्कि आम लोग भी मरकर के बिल्कुल फना नहीं हो जाते मौत तो जिस्म से रूह के निकलने का नाम है खत्म होने का नाम नहीं अल्लाह वालों की शान तो निहायत बुलन्द है खासकर रसूल उल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम बाद विसाल भी मुकम्मल तौर पर ज़िन्दा व जावेद हैं।

बुज़ुर्गाने दीन को वसीला बनाना शिर्क कैसे हो सकता है शिर्क तो यह है कि जो बातें खुदाये तआला के लिये खास हैं वह किसी और में मानी जायें तो इतनी बात तो निहायत अनपढ़ हर मुसलमान जानता है खुदाये तआला असर करने नफा नुकसान पहुँचाने का वसीला व ज़रिया नहीं बल्कि वह तो खुद देने बख्शने वाला नफा नुकसान पहुँचाने वाला है न के वसीला व ज़रिया। यह तो सिर्फ मखलूक ही हो सकती है।

और शिर्क के मामले में तो ज़िन्दे और मुर्दे का फर्क करना भी बेकार बात है जो बात खुदाये तआला के साथ खास है इसको किसी दूसरे के लिये मानना बहरहाल शिर्क है। ख्वाह वह दूसरा ज़िन्दा हो या मुर्दा जैसे अल्लाह तआला के अलावा किसी और की इबादत और पूजा करना शिर्क है तो अगर ज़िन्दे की पूजा व इबादत करेगा तब भी मुशरिक और मुर्दे की करेगा तब भी। या जैसे अल्लाह तआला के अलावा किसी और को अल्लाह की तरह क़ादिर व खालिक व कदीम मानना शिर्क है तो अगर कोई मुर्दे को मानेगा तब भी. और ज़िन्दे को मानेगा तब भी शिर्क ही होगा। जो लोग ज़िन्दों के वसीले के काइल हैं लेकिन बाद विसाल के वसीले को शिर्क कहते हैं तो गोया के उन्होंने ज़िन्दो को अल्लाह तआला का शरीक और साझी मान लिया है लेकिन मुर्दों को नहीं तो यह खुद ही मुशरिक हैं खुदाये तआला उन्हें समझ अता फरमाये अगर चे इन लोगों की इस्लाह के लिये हमारा इतना बयान काफी है लकिन मज़ीद इनकी तसल्ली के लिये हदीस भी नक्ल कर दें जिससे साफ ज़ाहिर हो जाये कि बाद विसाल यानी दुनिया से रूखसत हो जाने के बाद भी अल्लाह तआला के मखसूस बन्दों को अल्लाह तआला की बारगाह में

वसीला बनाना जायज़ है।

हदीस न0 6:

हज़रत अबू जौज़ा रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो ने फरमाया कि एक मरतबा मदीने में सख्त सूखा पड़ गया लोगों ने हज़रत आयशा रज़ि अल्लाहो तआला अन्हा से शिकायत की आपने फरमाया कि रसूल उल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम की कब्र अनवर को देखो और इसके ठीक ऊपर आसमान की जानिब छत में सूराख कर दो यहाँ तक के कब्रे अनवर और आसमान के बीच कोई परदा न रहे लोगो ने ऐसा ही किया तो इस ज़ोर की बारिश हुई कि खूब सबज़ा उगा हरयाली छा गई और ऊँट मोटे हो गये यहाँ तक के इनकी चर्बी फटी जाती थी और इस साल को खुशहाली का साल कहा जाने लगा।

(मिश्कात बाबुल करामात सफहा 545)

इस हदीस से ज़ाहिर है कि बाद विसाल हुज़ूर को और हुज़ूर की क़ब्रे अनवर को इन लोगो ने बारिश मांगने के लिये वसीला बनाया जो सब सहाबा और ताबेईन थे और खुद उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीका ने यह तरकीब बतायी, तो ज़ाहिर हो गया कि सहाबा किराम बाद विसाल भी वसीले के काइल थे।

हदीस न0 7:

हज़रत उमय्या इब्ने खालिद से मरवी है कि रसूल उल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम मुहाजिरीन दुरवेशों के वसीले से जंगों में फतह की दुआ मांगते थे।

(मिश्कात बाब फज़लिल फुकरा सफहा 447)

हदीस न0 8:

अब्दुल्लाह इब्ने दीनार से मरवी है कि हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ि अल्लाहो तआला अन्हुमा जब सफर को

निकलते या जब सफर से वापस आते तो पहले रसूल उल्लाह सल्ललाहो अलैह वसल्लम की क़ब्रे अनवर पर हाज़िरी देते।हुज़ूर पर दुरूद पढ़ते।और वहाँ दुआ मांगते फिर लौट जाते।

(मुअत्ता इमाम मालिक बाब कबरिन्नबीए सल्लललाहो अलैह वसल्लम सफहा 396)

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर का सफ़र से आते और जाते वक्त क़ब्रे अनवर पर खड़े होकर दुरूद शरीफ पढ़ना और दुआ मांगना यक़ीनन बाद विसाल आपकी क़ब्रे अनवर को और बाद विसाल आपको वसीला बनाना है वरना दुआ हर जगह मांगी जा सकती है क़ब्रे अनवर पर दुआ मांगने का आखिर और क्या मतलब है ?

हदीस न0 9:

हरज़त सअ़ाद इब्ने अबी वकास रज़ि अल्लाहो तअ़ाला अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम ने फरमाया कि तुम्हारी मद्द की जाती है और तुम्हें रोज़ी मिलती है यह सब तुम में के कमज़ोर लोगों का वसीला है ।

(सहीह बुखारी किताबुल जिहाद सफहा 405)

यहाँ यह बात भी काबिले गौर है कि हमारी इस उन्वान के तहत ज़िक्र कर वह पहली हदीस और इस हदीस के लिये मशहूर व मारूफ मुहद्दिस हज़रत इमाम बुखारी अपनी जामए सहीह में जो बाब लायें हैं यानी मन इस्तआन बिल ज़ाफा वल स्वालेहीन फ़िलहर्ब इसका तरजुमाह ही यह है कि कमज़ोर ''जंगों में कमजोरों और नेकों के वसीले से मद्द चाहना''

गोया हज़रत इमाम बुखारी के अकीदे में भी महबूबाने खुदा को बारगाहे खुदा में वसीला बनाना यक़ीनन पसन्दीदा है।

कयामत के दिन हुज़ूर नबीए करीम ﷺ और दूसरे अम्बिया व औलिया और उलमा गुनह गारों की शफाअत फरमायेंगे

शफाअत भी जन्नत में जाने और खुदाये तआला की मग़फिरत हासिल करने का वसीला है और वसीले के मुनकिरीन को शफाअत से मुताल्लिक अहादीस से सबक हासिल करना चाहिए कि कयामत के दिन निजात और जन्नत शफाअत व वसीलों से मिलेगी तो दुनिया में वसीला शिर्क कैसे हो सकता है जन्नत सबसे बड़ी नेमत है तो जब वह शफाअत व वसीले से हासिल होगी तो खुदाये तआला की और नेमतें अगर अल्लाह वालों की वसीले से मांगी जायें तो इसमें हरगिज़ कोई तअ़ज्जुब की बात नहीं अल्लाह तआला हर बात पर क़ादिर है वह जो चाहे कर सकता है इन्सान को मरते ही जन्नत व जहन्नम में भेज देता।लेकिन फरिश्तों से नेकी और बदी लिखवाता है हांलाकि वह सब कुछ जानता है कब्र में मुनकर नकीरैन से सवालात करवाता है हांलाकि उस पर सब ज़ाहिर है फिर पचास हज़ार साल का कयामत का दिन कायम फरमायेगा हिसाब किताब करायेगा नेकी बदी तोली जायेगी फिर हुज़ूर और हुज़ूर के गुलामों की शफाअत और सिफारिश से जन्नत अता फरमायेगा।आखिर यह सब क्यों? ज़ाहिर है कि उसको वसीले पसन्द हैं वरना वह तो कादिर-ए-मुतलक है एक सैकेण्ड के करोणवे हिस्से से कम में बिला वास्ता डायरेक्ट खुद ही सब कुछ कर सकता है।

हकीकत यह है कि कयामत का दिन उसने रखा ही इसलिए है कि जो लोग दुनिया में नहीं देख सके काफिर या बदमज़हब रहे इनको

अपने महबूब और इनके गुलामों की शान दिखा दे और अपने बेगाने दोस्त दुश्मन सारे इन्सान बल्कि सारी मखलूक बोल उठे कि क्या शान है क्या मुकाम है?क्या मरतबा है कैसी अनोखी बादशाहत है?किस क़द्र खुदाये तआला की अता और उसका फ़ज़्ल है।

अर्शे हक है मस्नदे रिफअत रसूल उल्लाह की
देखनी है हर्श में इज़्ज़त रसूल उल्लाह की

शफाअत से मुतअल्लिक खुद कुरआन करीम में अल्लाह तआला का इरशाद है-

कौन है वह जो उसके हुज़ूर शफाअत करे मगर उसकी इजाज़त से।

(पारा न0 3 रूकूअ न0 2 सूरते बक़र)

यानी कुरआन करीम से भी शफाअत साबित है हाँ यह ज़रूर है कि शफाअत वही करेगा जिसको खुदाये तआला यह मन्सब अ़ता फरमायेगा।और बेशक सब कुछ अल्लाह ही की तरफ से है।

शफाअत अगर चे वसीला ही है लेकिन हम इसको उन्वान बना कर इसकी अ़हादीस को इसकी खास अहमियत के पेशे नज़र अलग से कलम बन्द कर रहें हैं।

हदीस न01:

हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि एक दावत में हम हुज़ूर के साथ थे तो आपकी ख़िदमत में बकरी की दश्त का गोश्त पेश किया गया और यह आपको बहुत पसन्द था आप इसमें से तोड़ कर तनावुल फरमाने लगे और इरशाद फरमाया मैं कयामत के रोज़ सारे इन्सानों का सरदार हूँ तुम जानते हो अल्लाह तआला एक साफ मैदान में सब अगलों और पिछलों को जमा क्यों फरमायेगा? ताके देखने वाला सब को देख सके और सुनाने वाला सब को अपनी आवाज़ सुना सके और सूरज बिल्कुल इनके नज़दीक आ जायेगा,इस वक्त बाज़ लोग

कहेंगे क्या तुम देखते नहीं कि किस हाल में हो कैसी मुसीबत में फंस गये हो? ऐसे शख्स को तलाश क्यों नहीं करते जो तुम्हारे रब के हुजूर तुम्हारी शफाअत करे कुछ लोग कहेंगे हम सब के बाप आदम अलैहिस्सलाम हैं लिहाज़ा इनकी खिदमत में चलें अर्ज़ करेंगे ऐ हज़रत आदम आप सब इन्सानों के बाप हैं अल्लाह तआला ने आप को खास अपने दस्ते कुदरत से बनाया और आप में अपनी तरफ की रूह फुंकी और फरिश्तों से आप के लिये सिजदा कराया और आप को जन्नत में ठहराया क्या अपने रब के हुजूर हमारीशिफाअत फरमायेंगे? वह फरमायेंगे। मेरा रब आज ऐसा गज़ब व जलाल में है कि ऐसा पहले हुआ न बाद में हो मुझको उसने एक दरख्त से मना फरमाया था तो मुझसे इसके हुक्म में लगज़िश वाके हुई लिहाज़ा मुझको अपनी जान की पड़ी है मुझको अपनी पड़ी है तुम किसी दूसरे के पास जाओ तुम हज़रत नूह के पास चले जाओ तो लोग हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की ख़िदमत में हाज़िर होंगे और अर्ज़ करेंगे के ऐ नूह आप अहले ज़मीन के सबसे पहले रसूल हैं। और अल्लाह तआला ने आप का नाम अब्दन शकूरा रखा क्या आप देखते नहीं हम किस मुसीबत में हैं क्या आप देखते नहीं हम किस हाल में पहुँच गये। क्या आप अपने रब के हुजूर हमारी शफाअ़त फरमायेंगे वह कहेंगे मेरे रब ने आज ऐसा इज़हारे गज़ब फरमाया है कि ऐसा न इससे पहले फरमाया न बाद में फरमाये मुझको अपनी फिर्क है मुझको अपनी जान की पड़ी है इस रिवायत में बाकी हदीस जिसमें हज़रत इब्राहीम हज़रत मूसा और हज़रत ईसा के पास जाने का जिक्र है इसको छोड़ कर फरमाया कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम फरमायेंगे तुम उनके पास जाओ जो मखसूस नबी हैं यहाँ तक के लोग मेरे पास आयेंगे मैं अर्श के नीचे सजदा करूँगा तो मुझसे फरमाया

जायेगा ऐ महबूब अपना सर उठाओ और शफाअत करो तुम्हारी शफाअत कुबूल की जायेगी और माँगो तुमको अता फरमाया जायेगा (यानी जो तुम कहोगे वह होगा)

(मुस्लिम जिल्द 1 सफहा 111, बुखारी जिल्द 1 सफहा 470, तिर्मिजी जिल्द 2 सफहा 66)

इस हदीस के अल्फाज़ हमने बुखारी किताबुल अम्बिया से नक्ल किये हैं इसके अलावा बुखारी ही में सफहा 971 पर और मुस्लिम शरीफ और तिर्मिज़ी की रिवायात में हज़रत आदम और हज़रत नूह के बाद हज़रत इब्राहीम और हज़रत मूसा और हज़रत ईसा अला नबीना अलैहिस्सलातु वस्सलाम की खिदमात में लोगों के जाने का जिक्र है।

हदीस न0 2:

हज़रत इमरान इब्ने हसीन से मरवी है कि रसूल उल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि मेरी शफाअत से कुछ लोग जहन्नम से निकाले जायेंगे और जन्नत में दाखिल होंगे और जन्नत में इनका नाम जहन्नम वाले होगा।(यानी जहन्नम से आने वाले)।

(बुखारी जिल्द 2 सफहा 971)

यानी लोग जहन्नम में दाखिल हो जायेंगे इसके बाद भी शफाअत जारी रहेगी यहाँ तक के आपकी शफाअत से जो लोग जहन्नम में जा चुके होंगे वह वहाँ से निकाल कर ज़न्नत में लाये जायेंगे।

हदीस न0 3:

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर बिन आस से मरवी है कि रसूल उल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम ने अपने दोनों हाथों को उठाया और अर्ज़ किया ऐ अल्लाह मेरी उम्मत मेरी उम्मत और आप रोने लगे तो अल्लाह तआला ने हज़रत जिबरईल को हुक्म दिया महबूब के पास जाओ तो हज़रत जिबरईल हुज़ूर की खिदमत में हाज़िर हुये और पूछा

हुज़ूर सल्लललाहो अलैह वसल्लम ने रोने का सबब बताया और परवर दिगार सब कुछ जानता है अल्लाह तआला ने हज़रत जिबरईल से फरमाया जाओ और महबूब से कह दो तुम्हारी उम्मत के मामले में तुम को राज़ी और खुश कर देंगे और तुमको गमगीन नहीं होने देंगे।

(मुस्लिम जिल्द 1 बाब दुआउन्नबी सल्लललाहो अलैह वसल्लम लि उम्मतेही सफहा 113)

हदीस न0 4:

- हज़रत जाबिर इब्ने अब्दुल्लाह से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि हर नबी को एक मकबूल दुआ मांगने का हक दिया गया जो उन्होनें अपनी उम्मत के लिये मांग ली और मैंने अपनी इस मख्सूस दुआ को बरोज़े कयामत अपनी उम्मत की शफाअत के लिये बचा रखा हैं।

(मुस्लिम जिल्द 1 सफहा 112)

हदीस न0 5:

(कयामत के दिन) खुदाये तआला फरमायेगा फरिश्ते और अम्बिया और मोमिनीन शिफाअत कर चुके सिर्फ अरहमुर राहिमीन बाकी रहा फिर अपने दस्ते कुदरत की एक मुट्ठी भर कर जहन्नम से लोगों को निकालेगा।

(मुस्लिम जिल्द न01 सफहा 103, मिश्कात बाबुल हौजे वश्शफाअत सफहा 490)

हदीस न0 6:

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबिजदआ से मरवी है कि मैं ने रसूल उल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम को फरमाते हुये सुना कि मेरी उम्मत के एक शख़्स की शफाअत से इतने लोग जन्नत में दाखिल होंगे जिनकी तादाद कबीला

बनी तमीम के लोगों से भी ज़्यादा होगी।

(तिरमजी जिल्द 2 सफहा 67, मिश्कात सफहा 494)

हदीस न0 7:

सय्यदना उस्मान गनी रज़ि अल्लाहो अन्हो से मरवी है कि रसूल उल्लाह सल्ललल्लाहो अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया बरोज़ कयामत तीन किस्म के लोग शफाअत फरमायेंगे पहले अम्बिया फिर उल्मा फिर शोहदा।

(इब्ने माजा जिकरे शफाअत सफहा 330 मिश्कात सफहा 494).

हदीस न0 8:

हुजूर सल्लललाहो अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया मेरी उम्मत के कुछ लोग कई गिरोह की शफाअत करेंगे और कुछ किसी खानदान की और कुछ किसी एक शख़्स की शफाअत करेंगे यहाँ तक यह लोग इनकी शफाअत से जन्नत में दाखिल हो जायेंगे।

(तिर्मिज़ी जिल्द 2 सफहा 67)

इन चार मज़कूरा अहादीस से यह भी मालूम हुआ कि हुज़ूर सल्लललाहो अलैह वसल्लम कि उम्मत के आपके बहुत से ऐसे ग़ुलाम भी होंगे जिनकी शफाअत से अल्लाह जल्ल शाहनुहू बहुत सारे लोगों को जन्नत अता फरमायेगा। और इनमें उलमा किराम और शहीदाने इस्लाम का खास मुकाम होगा।

हदीस न0 9:

हज़रत अनस से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि मेरी शफाअत मेरी उम्मत के उन लोगों के लिए है जिन से गुनाह कबीरा सरज़द हुए (यानी मेरी शिफाअत से उनके गुनाह माफ हो जायेंगे)।

(तिरमज़ी जिल्द 2 सफहा 494)

शफाअत के बारे में अहादीस किताबों में इतनी ज़्यादा हैं कि

इनको शुमार करना मुश्किल है हम यहाँ सिर्फ इतनी ही अहादीस पर इकतिफा करते हैं हांलाकि इस बारे में अहादीस तवातुर को पहुँच चुकी हैं इसी लिए उलमाऐ किराम ने फरमाया कि शफाअत का मुनकिर इस्लाम से खारिज है।

इस्लाम में हर नया काम गुमराही और गुनाह नहीं

मुसलमानों में कुछ ऐसी बातें राइज हो गई हैं जो ऐसी शक्ल में रसूल उल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम और सहाबा किराम के ज़माने में न थीं। अगर चे बाद में इनका रिवाज हुआ लेकिन इन में कोई दीनी व इस्लामी मसलिहत है और खिलाफ शरअ कोई बात भी इन में नहीं पाई जाती और वह कुरआन व हदीस के किसी हुक्म के खिलाफ नहीं हैं तो इनको करने में कोई हर्ज नहीं है इनको बिदअत व गुमराही कहना सरासर नादानी है। जैसे बुज़ुर्गों के नाम पर सदक़ा व ख़ैरात करना अहबाब व आम मुस्लिमीन को खिलाना पिलाना जिसे नियाज़ दिलाना कहते हैं फातिहा दिलाना। कुरआन ख्वानी करना।उर्स करना।महफिल मीलाद शरीफ का इनइकाद अज़ान के बाद नमाज़ की याद दहानी के लिए मसाजिद में सलात पुकारना।कब्रों पर अज़ान देना।बारहवी शरीफ के दिन रसूल उल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम की विलादते शरीफा की खुशी मनाना वगैराह यह सब काम अच्छे हैं और इनको क़रने में कोई हर्ज नहीं है जबकि इनमें कोई ऐसी ज़्यादती न हो जो खिलाफ शरअ हो और शरियते इस्लामिया के दायरे में ही किये जाये कुछ लोग कहते है कि यह सब बाते इसलिए गुनाह हैं कि हुज़ूर के ज़माने में इनका कोई वुजूद न था हांलाकी इनकी अस्ल हकीकत उस ज़माने में भी थी यानी किसी न किसी शक्ल में यह हुज़ूर के ज़माने में भी पाये जाते थे, और बिदअ़त

यानी नया काम गुमराही तब होता है जबकि वह सरकार सल्लललाहो अलैह वसल्लम के ज़माने में किसी भी शक्ल में न हुआ और इसको करने में किसी शरई हुक्म की मुख़ालिफत होती हो आने वाले सफहात में इनकी अस्ल से मुताल्लिक अहादीस भी मुलाहेज़ा फरमायेंगे।

अगर इस्लाम में हर वह काम विदअत गुमराही है जो हुज़ूर के ज़माने में न था तो मदारिस कायम करना चन्दे करना इल्म नहव व सर्फे बलाग़त व फसाहत पढ़ना मदारिस में सालाना खत्म बुख़ारी के जल्से दस्तार वन्दी मस्जिदों पर मीनार बनाना इल्में उसूल व फिका पढ़ना ऐराब यानी जबर जेर और पेश लगे हुऐ कुरआन पढ़ना पढ़ाना और छापना।चालीस दिन मुकर्रर करके तबलीग के लिये निकलना यह सब काम भी हुज़ूर के ज़माने में न थे लिहाज़ा यह भी गुमराही हो जायेगी।खुलासा यह कि अहादीस से यह बात साबित है हर नया काम गुमराही नहीं अगर इसकी अस्ल हुज़ूर के ज़माने में हो और इसको करने में कोई दीनी भलाई या इस्लाम और मुसलमानों का नफा हो।

अब इस सिलसिले में अहादीस मुलाहेज़ा फरमाइये।

हदीस न0 1:

हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जिसने इस्लाम में कोई अच्छा तरीका निकाला तो इसको उसका अर्ज व सवाब मिलेगा और जितने लोग उस पर अमल करेंगे उन सबका सवाब भी उस को मिलेगा और उनके सवाब में कोई कमी नहीं की जायेगी और जिस ने इस्लाम में कोई बुरा तरीका निकाला तो उस पर उसका गुनाह होगा और जितने उस पर चलेंगे उन सब का गुनाह भी उस पर होगा और उन गुनाहों में भी कोई कमी नहीं की जोयगी।

मुस्लिम जिल्द 1 किताबुज्ज़कात सफहा 327

मिश्कात किताबुल इल्म सफहा 33

इस हदीस के शरह में इमाम नबवी(अलमुतवफा .676 हिजरी) फरमाते हैं।

इस हदीस से हुजूर के फरमान और हर नया काम बिदअत है और हर बिदअत गुमराही की तखसीस हो जाती है। और बेशक इस हदीस में हुजूर ने नये कामों को गुमराही फरमाया है जो बातिल हों और उन बिदअतों को जो मज़मूम और बुरी हों और बिदअत की पाँच अकसाम हैं वाजिब, मन्दूब,हराम,मकरूह,मुबाह(हाशियाये मुस्लिम सफहा 327) इससे खूब ज़ाहिर हुआ कि इमाम नववी का मसलक यही था कि बिदअत की पाँच किस्में हैं।लिहाज़ा हर बिदअत और नये काम को गुमराही नहीं कहना चाहिए।

हदीस न0 2:

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो से मरवी है कि रसूल उल्लाह सल्ललललाहो अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिसने सवाब व यकीन की नियत के साथ रमज़ान में तरावीह की नमाज़ पढ़ी उसके गुज़िश्ता गुनाह माफ कर दिये जाते हैं।इब्ने शहाब कहते हैं कि रसूल उल्लाह सल्ललललाहो अलैह वसल्लम दुनिया से तशरीफ ले गये और बात इतने ही तक रही और हज़रत अबू बक्र सिद्दीक की खिलाफत में और हज़रत उमर के शुरू दौरे खिलाफत में भी यही चलता रहा (यानी बा कायदा बा जमाअत तरावीह की नमाज़ नहीं पढ़ी जाती थी) अबदुर्रहमान कहते हैं कि मैं हज़रत उमर के साथ एक दिन रमज़ान की रात में मस्जिद में गया तो लोगो को अलग अलग नमाज़ पढ़ते देखा कोई अकेला पढ़ रहा है किसी के साथ चन्द लोग नमाज़ पढ़ रहे हैं। हज़रत उमर ने फरमाया मेरी राय में अगर मैं इन लोगों को एक इमाम के साथ जमा कर देता तो बिहतर होता।फिर इस ख्याल को अम्ली जामा पहनाया और सबको हज़रत उबई इब्ने कअ़ब की

इमामत पर जमा फरमा दिया हज़रत अबदुर्रहमान कहते हैं फिर मैं अगली रात हज़रत उमर के साथ मस्जिद में गया तो देखा सब लोग नमाज़े तरावीह एक ही इमाम के साथ बा जमाअत अदा कर रहें हैं हज़रत उमर ने देखकर फरमाया यह बिदअत (नया काम) बहुत अच्छा है।

बुखारी जिल्द 1 बाब फज़ले मन क़ामा रमज़ान सफहा 269 व मिश्कात सफहा 115

इस हदीस से खूब वाज़ेह हो गया कि हज़रत उमर के नज़दीक हर नया काम बिदअते गुमराही नहीं और यह कि बिदअत और नये काम कुछ अच्छे भी होते हैं।

हदीस न0 3:

हज़रत ज़ैद इब्ने साबित फरमाते हैं कि जंग यमामा के ज़माने मे हज़रत अबू बक्र ने मुझको बुलाया तो देखा हज़रत उमर भी पास बैठे हैं।हज़रत अबू बक्र ने मुझसे फरमाया कि यह उमर मेरे पास आये और कहा यमामा की लड़ाई में क़ुरआन के कारी बहुत तादाद में शहीद हो गये हैं और मुझको ख़तरा है कि यूँही लड़ाई में कारी शहीद होते रहे तो कुरआन का बहुत सा हिस्सा हाथ से चला जायेगा। मेरी राय है कि आप क़ुरआन को जमा करने का हुक्म दें।अबू बक्र सिद्दीक ने फरमाया कि मैंने उमर के इस कहने पर उनसे कहा कि आप वह काम कैसे करेंगे जिस को हुज़ूर सल्लललाहो अलैह वसल्लम ने न किया हो ?तो उमर ने मुझसे कहा लेकिन काम है तो अच्छा।तो उमर बार-बार यह बात मुझसे कहते रहे यहाँ तक के अल्लाह तआला ने मेरा सीना खोल दिया और मेरी राय भी अब वही है जो उमर की राय है।रावी हदीस ज़ैद बिन साबित फरमाते हैं फिर मुझसे हज़रत अबू बक्र ने फरमाया तुम जवान आदमी हो और अकलमन्द भी हो और

हमको तुम पर ऐतबार है तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैह वसल्लम के ज़माने में वही लिखते रहे तो कोशिश करके .कुरआन को जमा करो,ज़ैद कहते हैं खुदा की .क़स्म अगर वह लोग मुझको पहाड़ ढाने का हुक्म देते तो वह भी मेरे लिये इससे आसान था। मैंने कहा आप लोग वह काम कैसे करेंगे जो रसूलु . ल्लाह सल्ललल्लाहो अ़लैह वसल्लम ने न किया हो। इन लोगों ने फरमाया लेकिन काम है तो अच्छा फिर बराबर अबू बक्र मुझसे यह बात दोहराते रहे यहाँ तक के अल्लाह तआ़ला ने मेरा सीना खोल दिया जिस तरह इनका सीना इस काम के लिये खोल दिया था। फिर मैंने .कुरआन करीम को खुजूर की शाखों पत्थर के टुकड़ों और लोगों के सीनों से तलाश करके जमा करना शुरू कर दिया। यहाँ तक के सूरेह तौबा की आखिरी आयात (लकद जाअकुम रसूल) से लेकर आखिर सूरेह तक हज़रत खुज़ैमा अनसारी के पास थी और किसी के पास न थी। हज़रत ज़ैद फरमाते हैं कि यह जमा शुदा नुस्खा हज़रत अबू बक्र सिद्दीक के पास रहा फिर इनके विसाल के बाद हज़रत उमर के पास और इनके विसाल के बाद इनकी साहिब ज़ादी उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफसा के पास।

बुखारी जिल्द 2 बाब जमउल क़ुरआन सफहा 745 और मिश्कात सफहा 193

इस हदीस के शरह में शेख अब्दुल हक दिहलवी लमआत में फरमाते हैं।

यानी इस हदीस से साबित है कि वह काम यानी जमा .कुरआन बिदअते हसना यानी अच्छी बिदअत है।

हदीस न0 4:

हज़रत साइब इब्ने यज़ीद से मरवी है कि जुमे

के दिन एक अज़ान उस वक्त होती थी जब इमाम मिमबर पर तशरीफ लाते हुजूर सल्ललाहो अलैह वसल्लम के ज़माने में और हज़रत अबू बक्र रज़ि अल्लाहो अन्हुमा के दौर में तो जब हज़रत उस्मान गनी की खिलाफत का ज़माना आया और आबादी ज़्यादा हुई तो उन्होंने मुकामे ज़ौरा पर एक अज़ान का इज़ाफा फरमाया। यानी अब दो दो अज़ाने होने लगीं।

बुखारी जिल्द 1 बाबुल अज़ान यौमल जुम्अह सफा 124

इस हदीस से भी मालूम हुआ कि किसी दीनी मसलहत या ज़रूरत से अगर कोई अमल ईजाद किया जाये तो वह गुमराही नहीं जैसे हज़रत उस्मान ने अवाम की ज़्यादती के पेशे नज़र जुमाह में एक आज़ान का इज़ाफा किया।जो आज तक सारी दुनिया में होती है वरना हुजूर के ज़माने में नमाज़े जुमा में सिर्फ एक ही अज़ान होती थी।

हदीस न0 5:

हज़रत बिलाल हारिस से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्ललाहो अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिसने किसी सुन्नत को राइज किया जबकि मेरे बाद लोग उस को बिल्कुल छोड़ चुके थे तो उसको इस पर अमल करने वाले सारे लोगों का सवाब मिलेगा।और इन के सवाब में कोई कमी न की जायेगी और जिस ने ऐसी बिदअत नये काम को ईजाद किया जो गुमराही है तो इस पर अम्ल करने वाले का गुनाह होगा।और इनके गुनाह में भी कमी नहीं आयेगी।

तिरमिजी जिल्द 2 बाबुल अख्ज़ बिस्सुन्नत सफहा 92
मिश्कात किताबुल इतिसाम सफहा 30

इस हदीस शरीफ में हुजूर सल्ललाहो अलैह वसल्लम ने बिदअत के आगे ज़लालत की कैद लगाकर वाज़ह फरमाया कि हर बिदअत और नया काम गुनाह नहीं बल्कि वही जो ज़लालत यानी

गुमराही हो। गोया कि बिदअत की तकसीम और उसका अच्छा और बुरा दोनों तरह का होना खुद रसूल उल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम से मन्कूल है। इस हदीस की शरह में मुल्ला अली कारी फरमाते हैं।

यानी बिदअत के साथ ज़लालत का लफ्ज़ इस लिये लाया गया ताकि बिदअत हस्ना को शामिल न हो।

मिरकात जिल्द 1 सफहा 202

खुलासा यह कि नियाज़ फातिहा मीलाद शरीफ सलात व सलाम उर्स और मज़ारात की हाज़िरी कब्र पर आज़ान वगैराह को बिदअत व नाजायज़ कहकर रोकने वालों को इन हदीसों से सबक हासिल करना चाहिये हक यह है कि यह सब काम अच्छे हैं हाँ वह लोग गलत फहमी का शिकार हैं जो उन्हें फर्ज़ वाजिब समझते हैं और फर्ज़ व वाजिब समझ कर करते हैं। फर्ज़ तो इस्लाम में पांचों वक्त की नमाज़ रमज़ान के रोज़े हैं। माल की ज़कात निकालना है। जूये शराब लाटरी सनीमें गाने तमाशों से बचना भी फर्ज़ है। तो जो लोग नमाज़ रोज़े को छोड़ कर हराम कामों में लगे रहते हैं और नियाज़ फातिहा करते हैं और उर्स व मज़ारात की हाज़िरी को इस्लाम समझे हुये हैं यह लोग भी सख्त गलत फहमी और बड़ी भूल में हैं और जो अल्लाह के रसूल और दूसरे बुजुर्गाने दीन की शान में बेअदब होते हैं गुस्ताखियां करते हैं वह बड़े बदनसीब खुदा और रसूल के दुश्मन और जहन्नम का ईंधन हैं। खुलासा यह अल्लाह तआला की इबादत हुज़ूर के बताये हुए तरीके पर करना फर्ज़ व ज़रूरी है और यही इस्लाम है और इसके साथ अल्लाह वालों से मोहब्बत के इज़हार के लिये नियाज़ वह फातिहा होती रहे तो यह बिहतरीन बात है। इसमें कोई गुनाह नहीं है। जबकि यह उर्स व मीलाद वग़ैरह शरीअत के दायरे में हों। इनमें कोई खिलाफ़े शरअ बात न हो। जैसे नौटंकी, ढ़ोल, बाजे, गाने, तमाशे, औरतों की बेपरदगी वग़ैरह।

हुजूर सल्ललाहो अ़लैह वसल्लम की पैदाइश की खुशी मनाना और महफिले मीलादे मुनअ़क़िद करना

रसूल उल्लाह सल्ललाहो अलैह वसल्लम की पैदाइश का ज़िक्र और इस पर खुशी मनाना यानी महफिले मीलाद शरीफ का इनइकाद जबके इस में कोई खिलाफे शरअ बात न पाई जाये यकीनन जायज़ बाइसे खैरोबरकत है कुछ लोग इस को नाजायज़ हराम और बिदअत व गुमराही कहते हैं जबकि मीलाद शरीफ में अल्लाह जल्ल शानहू की हम्द उसके रसूले मकबूल सल्ललाहो अ़लैह वसल्लम की नात और आपकी विलादत का ज़िक्र नज़्म व नसर में बयान किया जाता है आखिर में बतौर ताज़ीम खड़े होकर रसूल उल्लाह सल्ललाहो अ़लैह वसल्लम पर दुरूद व सलाम पढ़ा जाता है और यह सब बाते अहादीस से साबित हैं मुलाहज़ा फरमायें।

हदीस न0 1:

हज़रत उरवा का बयान है कि सुवैबा अबूलहब की बांदी थी उन्होंने नबी करीम सल्ललाहो अ़लैह वसल्लम को दूध पिलाया था।जब अबूलहब मर गया तो इसके घर वालों ने इसको ख्वाब में बुरे हाल में देखा पूछा कैसी गुज़री इसने जवाब दिया तुम लोगों से जुदा होकर सख्त अज़ाब में हूँ सिवा इसके कि सुवैबा को आज़ाद करने के सबब इसमें मुझको पानी पिलाया जाता है।

बुखारी जिल्द न0 2 किताबुन्निकाह सफहा 764
उमदतुल कारी और फतहुल बारी में है।

यह इस वजह से कि नबी करीम सल्ललाहो अलैह वसल्लम पीर के दिन पैदा हुए और सुवैबा ने अबूलहब को हुजूर सल्ललाहो अ़लैह वसल्लम की पैदाइश की खुश ख़बरी सुनाई थी तो अबूलहब जो हुजूर का चचा था इसने भतीजे की पैदाइश की खुशी में सुवैबा को आज़ाद कर दिया था।

फतहुल बारी जिल्द 1 सफहा 118 उमदतुल कारी जिल्द 2 सफहा 95

इस हदीस से ज़ाहिर हुआ कि अबूलहब जैसे काफिर को भी हुज़ूर की पैदाइश पर खुश होने से इसके अज़ाब में आसानी की जाती है। लिहाज़ा हुज़ूर की पैदाइश की खुशी मनाना यकीनन अल्लाह जल्लेह शानहू को निहायत पसन्द है।

हदीस न0 2:

हज़रत आएशा सिद्दीका रज़ि अल्लाहो तआ़ला अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ललल्लाहो अ़लैह वसल्लम मस्जिद नबवी शरीफ में हज़रत हस्सान इब्ने साबित के लिये मिमबर रखवाते और हज़रत हस्सान इब्ने साबित इस पर खड़े होकर हुज़ूर की शान व अज़मत में नात शरीफ पढ़ते और आपके दुश्मनों की बुराई मज़म्मत फरमाते और रसूलुल्लाह सल्ललल्लाहो अ़लैह वसल्लम फरमाते बेशक अल्लाह तआ़ला रूहुल कुदुस के ज़रिये हसान की मदद फरमाता है जब तक वह रसूल उल्लाह की नात पढ़ते हैं और इनके मुखालिफीन की बुराई बयान करते हैं इस हदीस को बुखारी ने रिवायत किया।

मिश्कात बाब अलबयान वशिशअरू सफहा 410

हदीस के यह कलमात हम ने मिश्कात से नक्ल किये हैं और यह हदीस थोड़े अल्फाज़ के इखतिलाफ के साथ मुस्लिम शरीफ में भी हैं, मुस्लिम में हज़रत हस्सान के वह अशआर भी हैं जो इन्होंने मस्जिद नबवी शरीफ में मिमबर पर खड़े होकर पढ़े थे। इन इशआर की तादाद 13 है। देखिये।

सहीह मुस्लिम जिल्द 2 सफहा 301

इस हदीस में मज़कूर हुज़ूर सल्ललल्लाहो अ़लैह वसल्लम का हज़रत हस्सान शायर रज़ि अल्लाहो तआ़ला अन्हो के लिये मस्जिद शरीफ में मिमबर बिछाना और जनाब हस्सान का इस पर खड़े होकर हुज़ूर की शान में नज़्म पढ़ना और हुज़ूर का इस पर खुश होना यह सब बातें बताती हैं कि मीलाद

शरीफ की महफिल मुनअकिद करके मिमबर बिछा कर इस पर हुजूर का जिक्र नात व सलाम जायज़ है।बल्कि रसूलुल्लाह सल्लललाहो अ़लैह वसल्लम को राज़ी व खुशी करने का बिहतरीन ज़रिया है।

हदीस न0 3:

हज़रत इरबाज़ इब्ने सारिया से मरवी है कि रसूलु ल्लाह सल्लललाहो अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि मैं अल्लाह तआ़ला के नज़दीक आखिरी नबी लिखा हुआ था जबकि आदम अलैहिस्सलाम अपने खमीर में लोट रहे थे।मैं तुमको अपनी पहली हालत बताऊँ मैं इब्राहीम की दुआ हूँ और ईसा की बशारत और अपनी माँ का वह नज़ारा हूँ जो उन्होंने मेरी पैदाइश के वक्त देखा।उनके लिये ऐसा नूर ज़ाहिर हुआ जिससे उन्हें मुल्के शाम के महल चमक गये।

मिश्कात बाब फज़ाइले सय्यदिल मुरसलीन सफहा 513

इस हदीस से वाज़ेह है कि हुजूर ने खुद अपना मीलाद पढ़ा अपनी पैदाइश का जिक्र किया ।

हदीस न0 4:

हज़रत बरा से मरवी है (वह हिज़रत की हदीस बयान करते हुये फरमाते हैं) कि फिर रसूलु ल्लाह सल्लललाहो अ़लैह वसल्लम तशरीफ लाये तो मैंने मदीने वालों को इतना खुश होते किसी बात पर कभी नहीं देखा जितना खुश वह हुजूर के तशरीफ लाने पर थे यहाँ तक के छोटे बच्चों को मैंने देखा कि वह खुश होकर कहते थे यह अल्लाह के रसूल हैं जो हमारे यहाँ तशरीफ लायें हैं।

बुखारी जिल्द 1 बाब मक़द मिन्नबी इलल मदीना सफहा 558 व मिश्कात सफहा 546

यानी रसूलु ल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम की तशरीफ़

आवरी पर खुश होना और खुशी मनाना अहले ईमान का तरीका है।जब मदीने शरीफ में आने की खुशी अहले मदीना ने मनायी तो दुनिया में आपकी तशरीफ आवरी की खुशी दुनिया वालों को मनाना चाहिये।

हदीस न0 5:

हज़रत अब्बास से रिवायत है कि रसूल उल्लाह सल्ललाहो अ़लैह वसल्लम मिमबर पर जल्वा अफरोज़ हुये और फरमाया मैं कौन हूँ लोगों ने अर्ज़ किया आप अल्लाह के रसूल हैं फरमाया मैं मोहम्मद इब्ने अबदुल्लाह इब्ने अब्दुल मुत्तलिब हूँ, अल्लाह तआ़ला ने मखलूक को पैदा फरमाया तो मुझको इनमें सबसे अच्छो में बनाया फिर इन अच्छों की दो जमाअतें की तो इनमें सबसे अच्छी जमाअत में मुझको बनाया फिर इन अच्छों के कबीले किये तो सबसे अच्छे कबीले में मुझको बनाया फिर इस अच्छे कबीले के घराने किये तो सबसे अच्छे घराने में मुझे पैदा फरमाया तो मैं अपनी ज़ात के एतबार से भी सबसे अच्छा हूँ और खानदान के ऐतबार से भी सबसे अच्छा हूँ।

तिरमिज़ी जिल्द 2 बाब फी फज़लिन्नबी सल्ललाहो अलैह वसल्लम सफहा 201 और मिश्कात सफहा 513 बाब फज़ाइले सय्यदिल मुस्लिमीन

इस हदीस शरीफ से खूब ज़ाहिर हो गया कि रसूल ल्लाह सल्ललाहो अ़लैह वसल्लम ने मिमबर पर खड़े होकर खुद ही अपना मीलाद शरीफ पढ़ा और अपनी पैदाइश का ज़िक्र खुद अपनी ज़बान से फरमाया।

खुलासा यह कि हुज़ूर सल्ललाहो अ़लैह वसल्लम की तशरीफ आवरी और आपकी पैदाइश पर खुश होना खुशी का इज़हार करना मुसलमान का ईमानी तकाज़ा है।और इसके लिये महफ़िलें मुनअकिद करके सही रिवायत के साथ नज़म व नसर में आपकी विलादत का ज़िक्र करना और आपके फज़ाइल व मनाकिब बयान करना हरगिज़ कोई गैर इस्लामी काम नहीं है

और जो इसे गैर इस्लामी काम कहे वह बहुत बड़ा महरूमुल किस्मत और बदनसीब है।

हुजूर सल्ललललाहो अलैह वसल्लम की तशरीफ आवरी और आपकी पैदाइश के ज़िक्र की तो यह शान है कि वह खुद खुदायें तआला ने सबसे पहले रोज़े अज़ल में अम्बिया किराम की महफिल में फरमाया।

कुरआन करीम में इरशादे खुदा वन्दी है।

और याद करो कि जब अल्लाह ने पैगम्बरों से इनका अहद लिया जो मैं तुमको किताब और हिकमत दूँ फिर तशरीफ लायें तो मैं वह रसूल (हज़रत मोहम्मद) कि तुम्हारी किताबों की तसदीक करे तो तुम ज़रूर ज़रूर उस पर ईमान लाना और ज़रूर ज़रूर उसकी मद्द करना फरमाया क्यों तुमने इकरार किया ? और इस पर मेरा भारी ज़िम्मा लिया सबने अर्ज़ किया कि हमने इकरार किया फरमाया तो एक दूसरे के गवाह हो जाओ और मैं आप तुम्हारे साथ गवाह हूँ।

पाराह 3 सूरेह इमरान रुकूअ 9

यह आलम अरवाह की बात है जबके अल्लाह तआला ने सारे अम्बिया किराम को जमा करके उनकी महफिल में हुजूर की तशरीफ आवरी का ज़िक्र उनके सामने फरमाया और आपकी बरतरी और फज़ीलत सब पर ज़ाहिर फरमायी और सबसे आप पर ईमान लाने का वायदा लिया।

हदीस न0 6

हज़रत अबू कतादा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ललललाहो अलैह वसल्लम से पीर के दिन के रोज़े के बारे में पूछा गया तो आपने फरमाया कि इसी दिन मेरी पैदाइश हुई और इसी दिन से मेरे ऊपर नुजूल क़ुरआन की इबतिदा हुई।

सही मुस्लिम जिल्द 2 किताबुस्सियाम सफहा 367

मिश्कात बाब सियामुत्ततवुअ सफहा 179

यानी हुजूर ने अपनी विलादत के दिन के रोज़े को पसन्द

फरमाया। इससे साबित हुआ कि हुजूर की विलादत के दिन की यादगार किसी शरई तरीके से मनाना जायज़ है और उसी पर खुशी का इज़हार हुजूर को पसन्द है। बल्कि और भी खुदाये तआ़ला के मखसूस बन्दों से जो दिन मनसूब हों इनको बतौर यादगार कायम रखना जायज़ है।

हदीस न0 7:

हज़रत तारीक इब्ने शिहाब से रिवायत है कि यहूदियों में हज़रत उ़मर रज़ि अल्लाहो तआ़ला अन्हो से कहा कि आप यह जो आयत पढ़ते हैं यह आयत हम पर नाज़िल होती हम इस दिन ईद मनाया करते हज़रत उमर ने फरमाया मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि यह आयत कब नाज़िल हुई और जिस वक्त यह आयत नाज़िल हुई तो हुजूर कहाँ थे। यह आयत अराफात में नाज़िल हुई और खुदा की क़स्म वह अराफात का दिन था रावी कहते हैं कि शायद वह जुमें का दिन भी था और वह आयत (अलयौमा अक्मलतो लकुम दीनुकुम).... है।

बुखारी जिल्द 2 सफहा 662 बाब तफ्सीरे सुरते माइदह

यानी हज़रत उ़मर ने यहूदियों को यह जवाब दिया कि इस आयत के नूजूल के रोज़ हम ईद मनाते हैं जुमा भी हमारी ईद है और 9 ज़िलहिज्जा को यौमें अरफा कहते हैं इस दिन तो लाखों मुसलमान मैदान अराफात में जमा होते हैं। हज़रत उ़मर ने इन यहूदियों से यह नहीं फरमाया खुदाये तआ़ला जिस दिन कोई नेमत नाज़िल फरमाये उस दिन ईद और खुशी मनाना हमारे इस्लाम में बिदअत व गुनाह है।

हज़रात गौर कीजिये कि सूरते अलमाइदा की आयत (अलयौम अलमुलकतो लकुम) जो छठे पारे में है इसके नाज़िल होने के दिन खुशी मनाना ह़दीस से साबित है तो जिस दिन वह रसूल तशरीफ लायें हों जिन पर कुरआन नाज़िल हुआ इस दिन खुशी मनाना कैसे नाजायज़ व गुनाह हो सकता है। तफसीर की किताबों में है यानी हज़रत उमर ने बताया कि वुह दिन हमारी ईद है। (सावी सफहा 251) ❊❊❊

पैग़म्बरे इस्लाम की शान में गुस्ताख़ी इस्लाम में सबसे बड़ा जुर्म है और उसकी सज़ा क़त्ल है

फज़ाइले औलिया के बयान में आप बुखारी शरीफ की वह हदीस मुलाहज़ा फरमायेंगे जिसमें है कि अल्लाह तआ़ला ने फरमाया जो मेरे किसी वली से दुश्मनी रखे वह मेरा दुश्मन है और उसके लिये मेरी तरफ से ऐलाने जंग है इससे साफ ज़ाहिर है अपने महबूब बन्दो की शान में बेअदवी व गुस्ताखी अल्लाह तआ़ला को सबसे ज़्यादा ना पसन्द है इसलिये उलमाए किराम ने फरमाया है कि ऐसी बोली बोलने से भी बचना चाहिए जिनसे बेअदबी व गुस्ताखी का शुबा हो और ऐसे लोगों से भी दूर रहना चाहिए जिनसे बेअदबी व गुस्ताखी की बू आती हो। क्योंकि बेअदब दूसरों को भी बेअदब बना देता है।कुरआन करीम में अल्लाह जल्ल शानहू का फरमान है।

ऐ ईमान वालो नबी की आवाज़ से अपनी आवाज़ को ऊँचा न होने दो और उनसे इस तरह ज़ोर से बात चीत न करो जैसे आपस में एक दूसरे से करते हो कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे सारे आमाल खत्म कर दिये जायें और तुम को पता भी न चल सके।

पाराह न026 रुकूअ़ न013

आवाज़ से आवाज़ को ऊँचा करना कोई ज़्यादा बड़ी बात नहीं मानी जाती लेकिन अल्लाह तआ़ला को अपने महबूब की बारगाह में इतनी छोटी सी बेअदबी भी पसन्द नहीं और इस पर सज़ा सुनाई कि तुम्हारे सारे आमाल नमाज़ रोज़ा इबादत व रियाज़त सब पर पानी फिर जायेगा।इससे ज़ाहिर हुआ कि नमाज़ रोज़ा इबादत व रियाज़त तकवा और तहारत सब उसी के हैं जो बाअदब हो वरना कुरआन की इस आयत के पेशे नजर बेअदब आदमी की इबादत उसके मुँह पर मार दी

जायेगी और उसकी कोई नेकी-नेकी नहीं रहेगी।

कभी ऐसा होता है कि बाज़ बातें सही होती हैं नामुनासिब अलफाज़ के इस्तेमाल से बेअदबी व गुस्ताखी मानी जाती है जैसे मौत के लिये अमूमन अच्छे लोगों में यह नहीं कहा जाता कि फला साहब मर गये बल्कि इन्तिकाल कर गये।गुज़र गये।खुदा को प्यारे हो गये वगैराह वगैराह।

अच्छे भले माहौल में किसी के बाप दादा वगैराह अक़ारिब के लिये उसके सामने यह कह दिया जाये कि तुम्हारे बाप मर गये या कब मरे या कैसे मरे तो इसको यकीनन तकलीफ होगी इससे वह लोग सबक हासिल करें जो रसूलुल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम और बुर्जुगाने दीन के लिये मुँह भर कर कह देते हैं कि वह मर गये या मर कर मिट्टी में मिल गये।जैसा कि ''तकवियतुल ईमान'' में लिखा है यह मर गये का लफ्ज़ जब बाप दादा के लिये नहीं बोला जाता तो अम्बिया औलिया के लिये क्योंकर मुनासिब होगा।

कभी ऐसा होता है कि जिस की तौहीन करना हो उससे जो मरतबे में ज़्यादा है उसका नाम लेकर और उसके मरतबे का इज़हार करके छोटे की तौहीन की जाती है।जैसे किसी ज़िला मजिस्ट्रेट यानी कलैक्टर से यह कहा जाये कि गवरनर के सामने आपकी कोई वैल्यू और औकात नहीं है और आपकी शान वज़ीरे आला और वज़ीरे आजम के मुकाबले कुछ भी नहीं है तो यकीनन उसको तकलीफ होगी और इसी कलैक्टर से यह कहा जाये कि आप पूरे ज़िला के मालिक हैं आपके मातहत बड़े-बड़े ऑफीसर और इन्सपैक्टर इन्जीनियर हैं तो उसको यह बात अच्छी लगेगी,हांलाकि बात पहली भी दुरूस्त है लेकिन इसके सामने ज़िक्र करना बेअदबी है।

ऐसे ही कुछ लोगों ने अल्लाह तआला की शान और इसके वहदहू लाशरीक लहू जुलजिलाले वलइकराम मरतबे को अल्लाह वालो की शान घटाने और इनकी तौहीन करने का बहाना बना लिया है मस्लन

यह कहना कि अम्बिया औलिया मआज़ल्लाह अल्लाह की बारगाह में ज़लील हैं या ज़रए नाचीज़ से कमतर हैं। या इनके चाहने से कुछ नहीं होता जो अल्लाह चाहता है वह होता है वह मजबूर महज़ हैं उन्हें किसी बात का इख्तयार नहीं वह एक ज़र्रे के भी मालिक नहीं हर शय का मालिक अल्लाह ही है यह सब जुम्ले बेअदबी के हैं गुस्ताखों और बेअदब लोगों की बोलियाँ हैं। बल्कि काफिरों का तरीका है।

बल्कि इसके बजाये यह कहा जाये अल्लाह तआ़ला ने अपने महबूब बन्दों अम्बिया व औलिया को बड़े-बड़े इख्तयारात अपने करम से अता फरमाये हैं ऐसे इख्तयारात कि वह जो चाहें कर दिखायें और उन्हें मजबूर नहीं बल्कि मुखतार बनाया है वह अल्लाह की बारगाह में ज़लील व कमतर नहीं बल्कि उसके महबूब हैं उसके यहाँ अजी़म व शान वाले हैं यह अदबवालों और अहले ईमान की बोलियाँ हैं।

वहर हाल अदब और बेअदबी का फर्क जानना और बा अदब रहना हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है रसूलु ल्लाह सल्लललाहो अ़लैह वसल्लम की शान में गुस्ताखी कुर्फ व इरतिदाद है और इसकी सज़ा कत्ल है।

अब इस सिलसिले में अहादीस मुलाहज़ा फरमायें।

हदीस न01:

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहो तआ़ला अन्हो से मरवी है कि एक साहब जो नाबीना थे उनकि एक बान्दी जिससे इनके बच्चे भी थे वह रसूलु ल्लाह सल्लललाहो अ़लैह वसल्लम की शाने अकदस में गुस्ताखी करती और आपकी ऐबजोई करती थी।वह इसको मना फरमाते डांटते लेकिन वह बाज़ नहीं आती थी एक रात वह रसूल उल्लाह 'सल्लललाहो अ़लैह वसल्लम की शान में गुस्ताखी और ऐबजोई करने लगी उन्होंने एक खन्ज़र लिया और इसके पेट में भोंक कर इसको मार डाला और बच्चा इसके पैरों के दरमियान गिर

गया और वहाँ जो कुछ था वह खून में लत पत हो गया जब सुबह हुई तो यह बात रसूलुल्लाह सल्लललाहो अ़लैह वसल्लम की बारगाह में ज़िक्र की गई आपने लोगों को जमा फरमाया और फरमाया मैं क़सम देता हूँ इस शख्स को जिसने एक करनी की है इस पर मेरा हक है कि वह खड़ा हो जाये तो वह नाबीना साहब खड़े हो गये और लोगो के दरमियान चलते हुए हुजूर की खिदमत में हाज़िर हुए और वह काँप रहे थे अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह वह मैंने किया है आपको बुरा भला कहती थी ऐबजोई करती थी मना करने से मानती नहीं थी इससे मेरे दो बेटे हैं जो मोतियों की तरह खूबसूरत हैं और मुझसे प्यार करती थी गुज़िश्ता दिन इसने आपको बुरा भला कहना शुरू किया तो मैंने इसके पेट में खन्जर भोंक कर इसको मार डाला। यह सुनकर रसूलुल्लाह सल्लललाहो अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया आगाह रहो कि इसका खून माफ है (यानी इसके क़त्ल पर कोई मुआखिज़ा नहीं)

अबू दाऊद जिल्द 1 किताबुल हुदूद सफहा 599

नसई किताबुल मुहारबह जिल्द 2 सफहा 153

हदीस न0 2:

हज़रत अबी बरजह असलमी से मरवी है कि एक शख्स ने हज़रत सय्यदना अबू बक्र रज़ि अल्लाहो तआ़ला अन्हो को बुरा भला कहा (आपकी शान में सख्त अलफाज़ इस्तेमाल किये) तो मैंने अर्ज़ किया क्या मैं इसको कत्ल कर दूँ? हज़रत अबू बक्र ने और कहो मना फरमाया यह क़त्ल करने का हुक्म तो सिर्फ रसूलुल्लाह सल्लललाहो अ़लैह वसल्लम की बारगाह के गुस्ताखों के लिये है।

नसई किताबुल मुहारबह जिल्द 2 सफहा 153

अबू दाऊद जिल्द 2 किताबुल हुदूद सफहा 600

इस हदीस से कोई मआज़ल्लाह यह न समझले कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक और दूसरे सहाबा किराम और बुज़ुर्गाने दीन की शान में गुस्ताखी की इजाज़त है क्योंकि हदीस में सिर्फ क़त्ल से मना किया गया जो इस्लाम में सबसे आखिरी सज़ा है और रसूलुल्लाह सल्ललल्लाहो अलैह वसल्लम की शान में गुस्ताखी सबसे बड़ा गुनाह है।

हज़रत अबू बक्र सिद्दीक रज़ि अल्लाहो तआ़ला अन्हो की शान का तो कहना ही क्या किसी भी सहाबी रसूल बल्कि किसी भी अल्लाह के मकबूल बन्दे की बारगाह में गुस्ताखी और बेअदबी करने वाला गुमराह व बद्दीन मलऊन व मरदूद है।औलिया किराम के फज़ाइल के बयान में हम बुखारी शरीफ जिल्द 2 सफहा 963 की वह हदीस लिखेंगे जिसमें है कि अल्लाह तआ़ला फरमाता है जिसने मेरे किसी वली से दुश्मनी रखी इसके लिये मेरी तरफ से ऐलाने जंग है।

हदीस न0 3:

रसूलुल्लाह सल्ललल्लाहो अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जिसने मेरे सहाबा से मोहब्बत की तो खास मुझसे मोहब्बत की और जिसने इनकी दुश्मनी इख़्तयार की तो वह मुझसे दुश्मनी है और जिसने इनको ईज़ा दी इसने मुझको ईज़ा दी और जिसने मुझको ईज़ा दी उसने अल्लाह तआला को ईज़ा दी और जिसने अल्लाह तआ़ला को ईज़ा दी अन्करीब वह अज़ाब में गिरफ्तार होगा।

तिर्मिजी़ जिल्द 2 बाब मनसब्बा असहाबन्नबी सफहा 226

हदीस न0 4

हज़रत अनस फरमाते है कि एक ईसाई मुसलमान हुआ उसने सूरेह बक्र और सूरेह आले इमरान पढ़ली फिर वह नबी करीम अलैहिस्सलातो वत्ततस्लीम की बारगाह में वही की किताबत करने लगा इसके बाद वह ईसाई हो गया और कहता था कि मोहम्मद वही जानते

हैं जो मैंने लिख दिया है फिर अल्लाह तआला ने इसको मौत देदी और लोगों ने इसे दफ्न कर दिया अगले दिन इसकी लाश ज़मीन पर पड़ी मिली कहने लगे यह मोहम्मद और उनके साथियों ने किया होगा क्योंकि यह उनके पास से भाग कर आ गया था।इसलिये इन लोगों ने हमारे आदमी की कब्र खोद डाली दूसरे दिन इन लोगों ने इसके लिये और गहरी कब्र खोदी लेकिन वह अगले दिन ज़मीन पर पड़ा मिला कहने लगे यह मोहम्मद और इनके साथियों का काम है क्योंकि यह इनके पास से भाग आया था।तीसरे दिन इन लोगों ने इसके लिये जितनी उनके बस की बात थी,उतनी गहरी कब्र खोदी।सुबह हुई तो फिर देखा लाश बाहर पड़ी है अब वह लोग समझे कि यह इन्सानों का काम नहीं है (यानी यह सब कुछ गैब से हो रहा है) तो इसे वहीं पड़ा रहने दिया।

बुखारी जिल्द 1 बाब अलमातिन्जुबुवत सफहा 511

इस हदीस का खुलासा यह है कि गुस्ताखे रसूल को हर शय पहचानती और इससे नफरत करती है ज़मीन ने भी इस बेअदब को कुबूल न किया और बार-बार दफनाने के बावुजूद वह इसे बाहर निकाल कर फेंक देती थी।

हदीस न0 5:

हज़रत उसामा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लललाहो अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया जिसने मुझ पर वह बात थोपी जो मैंने ना कही वह अपना ठिकाना जहन्नम बना ले यह इस तरह हुआ कि आपने एक शख्स को भेजा तो इसने आप पर झूठ बान्धा तो हुजूर ने इसके लिये बद्दुआ फरमा दी तो वह मुर्दा पाया गया और इसका पेट फट गया था और ज़मीन ने इसको कुबूल न किया।

मिश्कात बाबुल मोअजिज़ात सफहा न0 543

हदीस न0 6:

हज़रत अब्दुर्रहमान इब्ने औफ रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो फरमाते हैं कि मैं जंगे बदर के दौरान सफ में खड़ा हुआ था कि मुझे अपने दायें और बायें अन्सार के दो बच्चे नज़र आये जो नौ उर्म थे मैंने तमन्ना की कि मैं इनसे बहादुरों के दरमियान होता इन दोनों में से एक ने मुझे इशारा किया और पूछा ऐ चचा क्या आप अबूजहल को पहचानते हैं मैंने कहा हाँ पहचानता हूँ लकिन तुम्हें इससे क्या काम है ऐ मेरे भतीजे, वह बोला मुझे खबर मिली है कि वह रसूलुल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम को गालियाँ देता है उसकी क़सम जिसके कब्ज़े में मेरी जान है अगर मैंने इसे देख लिया तो मेरा जिस्म उसके जिस्म से जुदा न होगा।यहाँ तक कि हम दोनों में जिसकी पहले लिखी हुई है वह मर जाये हज़रत अब्दुर्रहमान कहते हैं मुझको उसकी इस बात पर तअज्जुब हुआ फिर मुझको दूसरे ने इशारा किया और उसने भी वही बात कही इस दरमियान मेरी नज़र अबू जहल पर पड़ गई जो लोगों के दरमियान घूम रहा था तो मैंने उनसे कहा देखते नहीं हो तुम्हारा निशाना वह है जिसके बारे में तुम मुझसे पूछ रहे हो हज़रत अब्दुर्रहमान फरमाते हैं फिर वह तलवारे लेकर उसकी तरफ झपटे इसे मारा और क़त्ल कर दिया।

बुखारी जिल्द 1 किताबुल जिहाद सफहा 444
मुस्लिम जिल्द न0 2 सफहा 87मिश्कात सफहा352

हदीस न0 7

हज़रत जाबिर इब्ने अब्दुल्लाह से मरवी है रसूलुल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम ने एक बार फरमाया कअ़ब इब्ने अशरफ के लिये कौन है? इसने अल्लाह व रसूल को ईज़ा दी है हज़रत मोहम्मद इब्ने मुस्लिमह खड़े हो गये अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह क्या आप चाहते हैं मैं उसको क़त्ल कर दूँ फरमाया हाँ।

बुखारी जिल्द 2 सफहा 576

हाशिये में इमाम करमानी के हवाले से है

कअ़ब इब्ने अशरफ यहूदी बनू क़ुरैज़ा से था और यह शायर था और शायरी में रसूलुल्लाह सल्लललाहो अलैह वसल्लम की शाने अकदस में गुस्ताखी करता था।

हाशिया बुखारी सफहा 576

इसके बाद यह हदीस निहायत लम्बी है जिसमें हज़रत मोहम्मद बिन मुस्लेमह के कअ़ब बिन अशरफ गुस्ताखे रसूल को क़त्ल करने का पूरा क़िस्सा है कि उन्होंने किस तरह इसके ठिकाने पर जाकर इसे क़त्ल किया।हमारे दिये हुए हवाले से जो चाहे बुखारी शरीफ में तलाश करके पढ़े हुज़ूर सल्लललाहो अ़लैह वसल्लम की शान में बे अदबी और गुस्ताख़ी इस्लाम में सबसे बड़ा गुनाह है और इसकी सज़ा क़त्ल है इस बारे में दलाइल की इतनी बड़ी कसरत है कि उम्मते मुस्लेमह में हर दौर में इस बात पर इजमाअ़ रहा है यानी हर दौर के उलमा का इस पर इत्तेफाक रहा है। इस बारे में कुछ लोग यह भी कहते सुने गये हैं कि रसूलुल्लाह सल्लललाहो अ़लैह वसल्लम ने कई मरतबा ईज़ा देने वालों को मुआफ फरमा दिया है। लिहाज़ा हम भी ऐसा ही करें।

यह बहुत बड़ा धोका है दरअस्ल बात यह है कि वह हुजूर का अपना मामला था आपको मुआफ करने का हक था मुआफ भी फरमाया और सज़ा भी दी लेकिन दूसरों को यह हक नहीं पहुँचता कि हुजूर के गुस्ताखों को मुआफ करें इसकी मिसाल ऐसी है जैसे किसी बाप को इसके बेटों के सामने या उस्ताद को शागिर्दों के सामने या पीर को मुरीदों के सामने कोई गालियाँ दे तो वह बाप उस्ताद और पीर अगर मुआफ कर दें कुछ न कहें उन्हें हक हासिल है लेकिन औलाद शागिर्द या मुरीद अगर इस मौके पर खामोश रहेंगे। तो यकीनन इन पर लान तान की जायेगी और उन्हें बेगैरत कहा जायेगा और इनकी खामोशी को अच्छी नज़रों से नहीं देखा जायेगा और हर शख्स उन्हें बुरा भला कहेगा कि यह कैसे ज़मीर फरोश लोग हैं? कि इनके सामने इनके बाप को गालियाँ दी गयीं और उन्होंने इसका कोई जवाब न दिया।

फज़ाइले औलियाए किराम

जिस तरह हुज़ूर नबीए करीम हज़रत मोहम्मद मुस्तफा सल्ललाहो अलैह वसल्लम की शान निहायत बुलन्द व बाला और अक़्ल व इदराक से बाहर है आपके उम्मती भी सब एक जैसे और बराबर नहीं हैं इनमें खासाने खुदा बन्दिगाने स्वालेहीन बुजुर्गानेदीन इल्म व फ़ज़्ल तक़्वा व तहारत इबादत व रियाज़त वालों कामुकाम सबसे अलग थलग है और खुदाये तआला ने इनको वुह मरतबे अता फरमायें हैं कि जिनको समझना मुश्किल है,इनके खुदादाद कमालात तक आम ज़हन व फिक्र की रसाई आसान नहीं है।इस बारे में चन्द अहादीस मुलाहेज़ा फरमायें-

हदीस न0 1:

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो से मरवी है हुज़ूर सल्ललाहो अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि अल्लाह तआला का फरमान है कि जिसने मेरे किसी वली से दुश्मनी रखी उसके लिये मेरी तरफ से ऐलाने जंग है और बन्दा मेरे पसन्दीदा फराइज़ के ज़रिये मेरा क़ुर्ब हासिल नहीं करता हाँ बन्दा कसरते नवाफिल से मेरे करीब होता रहता है यहाँ तक के एक मन्ज़िल वह आती है कि मैं उस का कान हो जाता हूँ जिससे वह सुनता है उसकी आँख हो जाता हूँ जिससे वह देखता है उसका हाथ हो जाता हूँ जिससे वह पकड़ता है उसका पैर हो जाता हूँ जिससे वह चलता है और वह जो मांगता है मैं उसे देता हूँ और वह मेरी पनाह चाहे तो मैं उसको अपनी पनाह में ले लेता हूँ।

बुखारी जिल्द 2 बाबुल तवाज़ुअ सफहा 963

इस हदीस के शरह में इमाम जलालुद्दीन सयूती तौशीह में फरमाते हैं ।

खुलासा यह कि अल्लाह के वली का सुन्ना अल्लाह तआला का सुन्ना है इसका देखना खुदा तआला का देखना इसकी पकड़ खुदा की पकड़ और इसका चलना खुदाई फिअ्ल है और उसकी मुखालफत व बुराई अल्लाह तआला से जंग और लड़ाई है।

हदीस न0 2:

हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि रसूल उल्लाह सल्ललहो अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि जब अल्लाह तआला अपने किसी बन्दे को महबूब बनाता है। तो हज़रत जिवरईल अलैहिस्सलाम से फरमाता है कि मैं फला बन्दे से मोहब्बत करता हूँ तो तुम भी इससे मोहब्बत करो तो जनाब जिबरईल इससे मोहब्बत करने लगते हैं फिर हज़रत जिबरईल आसमानी दुनिया में पुकारते हैं ऐ आसमानों में रहने वाले अल्लाह तआला फला बन्दे से मोहब्बत फरमाता है तो तुम सब इससे मोहब्बत करो तो आसमान वाले इससे मोहब्बत करने लगते हैं फिर अहले ज़मीन के दिलों में इसकी मोहब्बत व मकबूलियत बिठा दी जाती है।

बुखारी जिल्द 1 बाबे ज़िकरूल मलायेका सफहा 456

हदीस न0 3:

हज़रत आएशा से मरवी है कि हज़रत निजाशी का विसाल हुआ तो हम लोगों में यह बात मशहूर थी कि उनकी कब्र पर हमेंशा नूर रहता है इस हदीस को अबू दाऊद ने रिवायत किया।

मिशकात बाबुल करामात सफहा 545

हदीस न0 4:

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो से मरवी है कि रसूल उल्लाह सल्ललहो अलैह वसल्लम ने

इरशाद फरमाया कि पिछली उम्मतों में मुहद्दस (जिन पर इल्हाम हो) हुआ करते थे और इस उम्मत में इनमें जो लोग होंगे इनमें उमर बिन खत्ताब हैं।

बुखारी जिल्द 1 किताबुल अम्बिया सफहा 493

हदीस न0 5:

हज़रत उसैर से रिवायत है कि हज़रत उमर की खिलाफत के ज़माने में जब यमन के लोग मदीने में आये तो हज़रत उमर ने उनसे पूछा क्या तुममें उवैस इब्ने आ़मिर हैं? यहां तक कि हज़रत उमर ने हज़रत उवैस से मुलाकात की और पूछा क्या तुम उवैस हो उन्होंने कहा हां मैं उवैस हूँ पूछा क्या तुम मीराद खानदान की शाख क़रन से हो? कहा हां फिर पूछा क्या तुम को सफैद दाग़ की बीमारी थी जो ठीक होकर एक रूपये भर रह गई है? कहा हां ऐसा है पूछा क्या तुम्हारी मां हैं जिनके साथ तुम्हारा सुलूक बहुत अच्छा है? कहा हां फिर हज़रत उमर ने फरमाया कि मैंने रसूलुल्लाह सल्ललाहो अलैह वसल्लम से सुना था कि यमन से आने वालों में उवैस नाम के एक साहिब तुम्हारे पास आयेंगे वह मिराद खानदान की शाख क़रन से होंगे उनको सफैद दाग की बीमारी थी जो ठीक होकर रूपये भर रह गई होगी उनके मां होगी जिसके साथ उनका सुलूक अच्छा होगा हुजूर ने फरमाया था कि उनका मरतबा यह है कि अगर वह अल्लाह तआ़ला पर किसी बात की क़सम खा जायें तो खुदाये तआ़ला उनकी बात टालता नहीं है और हुजूर ने फरमाया कि अगर तुमसे हो सके तो तुम उनसे मग़फिरत की दुआ कराना फिर हज़रत उ़मर ने उनसे मग़फिरत की दुआ कराई।फिर हज़रत उमर ने उनसे पूछा कि आप कहां रहना चाहते हैं उन्होंने कहा (कूफा) में हज़रत उ़मर ने फरमाया अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारे बारे में वहां के

हाकिम को लिख दूँ हज़रत उवैस ने कहा मुझको फकीरी की ज़िन्दगी पसन्द है।

(मुस्लिम जिल्द 2 सफहा 311)

हदीस न0 6:

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि अल्लाहो तआ़ला अन्हो से रिवायत है कि रसूल उल्लाह सल्ललल्लाहो अ़लैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि तीन लोग हैं जिन्होंने बचपन में कलाम किया एक हज़रत ईसा इब्ने मरयम और दूसरा जुरैज वाला बच्चा और जुरैज एक इबादत गुज़ार आदमी थे उन्होंने एक इबादतगाह बना ली थी एक दिन वह अपनी इबादत गाह में नमाज़ पढ़ रहे थे कि उनकी माँ आयीं और उन्होंने आवाज़ दी तो उन्होंने दिल में सोचा एक तरफ माँ है और एक तरफ नमाज़ फिर वह नमाज़ पढ़ते रहे और माँ को जवाब न दिया।इसके बाद दो बार ऐसा ही और हुआ और वह हर मरतबा नमाज़ पढ़ते रहते और माँ को जवाब ना दिया तो माँ ने कहा ऐ अल्लाह जुरैज को उस वक्त तक मौत न आये जब तक वह किसी बदकार अ़ौरत का मूँह न देख ले।

रसूल उल्लाह सल्ललल्लाहो अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया कि फिर जुरैज और इनकी इबादत का बनी इस्राईल में खूब चर्चा हो गया।

एक बदकार अ़ौरत थी जिसके हुस्न व जमाल का बड़ा चर्चा था वह बोली अगर तुम लोग चाहो तो मैं जुरैज को मुसीबत में फंसा दूँ।आखिर इसने खुद को जुरैज के सामने पेश कर दिया लेकिन उन्होंने इसकी तरफ कोई तवज्जुह न की और इसकी तरफ मूँह उठाकर न देखा।

एक चरवाहा जो जुरैज की इबादत गाह में ठहरता था इस से इस बदकार औरत ने ज़िना कराया और इससे वह हामिला हो गई जब बच्चा पैदा हुआ तो शोर मचा दिया कि यह जुरैज का बच्चा है।

लोग जुरैज के पास आये और उनको इबादतगाह से बाहर निकाल कर इबादत खाने को ढा दिया और इनको मारपीट करना शुरू कर दिया।जुरैज ने कहा मुझको क्यों मार रहे हो।लोगों ने कहा तुमने उस बदकार औरत से ज़िना किया है और इससे तुम्हारे बच्चा पैदा है।जुरैज ने कहा उस बच्चे को लाओ बच्चा लाया गया जुरैज ने इसके पेट में कूँचा मारा और कहा ऐ बच्चे तेरा बाप कौन है बच्चे ने कहा फलां चरवाहा मेरा बाप है।

यह करामात देख कर लोग जुरैज के हाथ पांव चुमने लगे और कहा हम आपके लिये सोने का इबादत खाना बनाकर देंगे जुरैज ने कहा नहीं तुम जैसा था वैसा ही बना दो तो लोगों ने वैसा ही तयार कर दिया।

हुजूर ने फरमाया तीसरा बच्चा वह है जो अपनी माँ का दूध पी रहा था।और सामने से एक इन्सान खूबसूरत तनोमन्द नौजवान घोड़े पर सवार होकर गुज़रा बच्चे की माँ ने कहा ऐ अल्लाह मेरा बेटा भी इसी तरह बने बच्चे ने यह सुनकर दूध पीना छोड़ दिया और मूँह उठाकर इस खूबसूरत नौ जवान की तरफ देखकर कहा ऐ अल्लाह तू मुझको इसकी तरह न बनाना और फिर माँ का दुध पीना शुरू कर दिया।फिर एक लड़की को लोग मारते पीटते ले जा रहे थे और कह रहे थे कि इसने ज़िना किया है और चोरी की है और वह कहती जा रही थी अल्लाह मेरे लिये काफी है और

वह सबसे अच्छा मद्दगार है। तो वह माँ बोली ऐ अल्लाह तू मेरे बेटे को इसकी तरह न बनाना,बच्चे ने फिर दूध पीना छोड़ दिया और मूँह उठा कर कहा ऐ अल्लाह तू मुझ को इस लड़की की तरह बनाना फिर माँ और बेटे में बात चीत हुई माँ बोली हाय मेरी क़िस्मत खूबसूरत सवार को देख कर मैने दुआ की ऐ अल्लाह तू मेरे बेटे को ऐसा ही बनाना तो तू कहता है ऐ अल्लाह तू मुझे इसकी तरह न बनान। और जब मार पीट खाती ज़िना और चोरी के इल्ज़ाम में फंसी एक लड़की को देख कर मैंने दुआ की मेरा बच्चा ऐसा न हो तो कहता है अल्लाह मुझे इसी की तरह बना दे।

माँ की यह बात सुनकर बच्चे ने अपनी माँ से कहा वह खूबसूरत मर्द सवार ज़ालिम व जाबिर शख़्स है इसलिये मैंने दुआ की है अल्लाह तू मुझ को इसकी तरह न बनाना और वह बान्दी जिस पर ज़िना और चोरी का इल्ज़ाम लगाकर मार रहे हैं वह ज़िना और चोरी से पाक है।लिहाज़ा मैंने दुआ की या अल्लाह तू मुझको इसी की तरह बनाना।

(यानी जालिम न बनाना मजलूम बनाना)
मुस्लिम जिल्द दो सफहा 313

इस हदीस में एक अल्लाह के वली हज़रत जुरैज का गोद के बच्चे से कलाम कराना और बच्चे का बोलना और यह बताना कि मेरा बाप जुरैज नहीं बल्कि चरवाहा है यह सब बाते बता रहीं हैं कि अल्लाह तआला ने औलिया किराम को बड़े इख्तयार अता फरमाये हैं।

पीरानेपीर सय्यदना गौसे पाक शेख अब्दुल कादिर जीलानी रहमतुल्लाह अ़लैह की मशहूर करामत कि आप बचपन में रमज़ान में दिन में अपनी माँ का दूध नहीं पीते थे।तो कुछ लोग इसको गलत कहते हैं और यह इनकी अक्ल में नहीं आता।लेकिन यह मुस्लिम शरीफ

उनकी आँखें खोल देगी जिसमें है कि क़ौमे बनी इस्राईल के बच्चे ने कलाम भी किया और यह भी जान लिया कि खूबसूरत सवार कौन है कैसा है और वह मज़लूम बान्दी कौन है और कैसी है।इस हदीस की शरह में इमाम नववी फरमाते हैं।

यानी हदीस से पता चला कि करामात औलिया किराम के इख्तयार में है यानी जब चाहे जो चाहे करामात दिखा दे।

फज़ाइले औलिया किराम की कई हदीसें "वसील" के बयान में भी आ चुकी हैं यहाँ सिर्फ एक हदीस और मुलाहेज़ा फरमायें।

हदीस न0 7

मोमिन की बातिन को देखने वाली तेज़ नज़र से बचो क्योंकि वह अल्लाह के नूर से देखता है।

तिर्मिज़ी जिल्द 2 बाब तफसीर सूरेह अलहिर्ज सफहा 140

इस हदीस से खूब वाज़ेह हो गया कि औलिया किराम रौशन ज़मीर होते हैं क्योंकि वह अल्लाह के नूर से देखते हैं इसलिये दूर व करीब की चीजों को देखना किसी के दिल में क्या है यह जान लेना यह सब औलियाए किराम के उलूम में दाखिल है।

एक गलत फहमी और उस का इज़ाला

फज़ाइले औलिया किराम के बयान में हमने जो अहादीस बयान की हैं यह उन्हीं के लिये हैं जो वाकई अल्लाह के वली हों और अल्लाह का वली वह हैं जो खुद भी अल्लाह के रास्ते पर चलते हैं और दूसरो को भी अल्लाह तआला के रासते पर चलायें वरना आजकल के बहुत से मक्कार पीर झूटे सूफी नाम के वली जो नमाज़ रोज़ा वगैराह अहकामे शरअ की पावन्दी नहीं करते खुदा व रसूल के फरामीन को कुरआन व हदीस की बातों को यह कहकर टाल देते हैं कि हम तरीक़त

वाले हैं और यह शरीअ़त की बातें हैं या हम फकीरी लाइन के हैं यह मौलवियों की बातें हैं यह लोग वली तो क्या होंगे मुसलमान तक नहीं हैं क्योंकि शरीअ़त का इनकार और उसकी मुखालफत अल्लाह जल्ल शानहू और उसके रसूल सल्लललाहो तआ़ला अ़लैह वसल्लम की मुखालफत है।क़ुरआन व हदीस की मुखालफत है।

क़ुरआन करीम में अल्लाह जल्लह शानहू ने फरमाया।

ऐ महबूब कहदो कि तुम अल्लाह से मोहब्बत करते हो तो मेरा कहना मानों जो मेरा कहना मानेगा तो वही अल्लाह तआ़ला का प्यारा होगा।

पाराह 3 रुकूअ़ 4

कुछ वह हैं जो मुरीदों से खुद को सजदे कराते हैं उनके मुरीद उनकी तसवीरों को घरों में रखते हैं और इन तस्वीरों पर हार फूल डालते हैं अगरबत्तियां और लोबान सुलगाते हैं।इनके मुरीद बकते हैं हमारा अपने पीर को देखना ही हमारी नमाज़ है ऐसे सारे पीर व मुरीद अल्लाह वाले नहीं बल्कि शैतान वाले हैं।इस सबको जानने के लिये देखिये हमारी किताब व हदीस कुरआन की रौशनी में 'अवामी गलत फहमियां' और इनकी इस्लाह दोनों हैं हिस्से।

बदमज़हब और गुमराह फिरको की पहचान

हदीस न01:

रसूल उल्लाह सल्ललाहो अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया मेरी उम्मत तेहत्तर गिरोह में बट जायेगी जिन्में से बहत्तर गिरोह जहन्नमी होंगे और सिर्फ एक जन्नती।अर्ज़ किया कि हुजूर जन्नती फिरके की पहचान क्या है फरमाया जो मेरी और मेरे सहाबा की सीरत इख्तयार करेगा वह जन्नती है।

मिश्कात सफहा 30

इस हदीस के पेशे नज़र हम चन्द अहादीस कलम बन्द करेंगे जिनको आप पढ़कर आजके दौर में गुम्राहों और बातिल फिरकों को पहचान सकें।

हदीस न02:

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ि अल्लाहो तआला अन्हुमा से रिवायत है वह खारजियों को मखलूक में सब से बुरा जानते थे कि इन लोगो ने कुरआन करीम की इन आयतो को जो कुफ्फार के बारे में है उन्हें मुसलमानों पर चस्पां कर दिया।

बुखारी जिल्द न02 बाब कितालिल खवारिज सफहा 1024

खारजी वह लोग थे जिन्होंने हज़रत अली रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो पर शिर्क का फतवा लगाया था हज़रत अली और हज़रत अमीर मआवियाह के दरमियान इखतिलाफ को दूर करने के लिये हज़रत अबू मूसा अशअरी और हज़रत अमर बिनुल्आस को हकम और फैसल बनाया गया था तो खारजियों ने यह कहा कि अल्लाह के अलावा कोई फैसला करने वाला

नहीं है और क़ुरआन करीम की आयत पढ़ी यानी अल्लाह के अलावा कोई हकम नहीं लिहाज़ा अ़ली मआ़ज़ल्लाह इन्सानों को हकम मानकर मुशरिक हो गये और जब इन लोगों को कुरआन की वह आयतें पढ़कर सुनाई गयीं जिसमें एक में है यानी जब मिया बीवी में झगड़ा हो तो दोनो की तरफ से एक-एक हकम फैसल झगड़ा निपटाने के लिये मुकर्रर कर लिया जाये।और दूसरी जगह कुरआन करीम में है यानी ऐ महबूब यह लोग उस वक़्त तक ईमान वाले नहीं हो सकते जब तक कि अपने इखतिलाफात में आपको हकम और फैसल न मान लें।पहली आयत में मिया बीवी का इखतिलाफ दूर करने के लिये ज़िम्मेदार सूझ बूझ वालों को हकम बनाने और दूसरी में रसूल सल्ललाहो अलैह वसल्लम को मुतलकन हकम मानने का हुक्म है।लेकिन उन लोगो ने इन आयतो पर कोई तवज्जुह न दी और अपनी ज़िद पर कायम रहे और हज़रत अ़ली पर शिर्क का फतवा लगाकर लशकरे इस्लाम से निकल गये और खारजी कहलाये।इन लोगों ने हकीकी और मजाज़ी, ज़ाती और अताईके फर्क को न समझा और गुमराह व बद्दीन हुये बात दरअसल यह है कि हकीकत में हुक्म अल्लाह ही के लिये है और उसकी हर सिफत ज़ाती है किसी की देन नहीं है लेकिन अल्लाह के देन से और इसकी बखशिश से उसके बन्दे भी हकम होते हैं और उसके महबूब की शान तो यह है कि उनका हुक्म अल्लाह तआ़ला का ही हुकम है इस तरह दोनो किस्म की आयतों के माइना सही हो जाते हैं।और यह कहना कि अल्लाह तआ़ला की अता से भी कोई हकम नहीं उन आयतों को झुठलाना है जिनमें मिया बीवी के झगड़े के लिये हकम बनाने और हुजूर को हकम मानने का हुक्म दिया गया है।और ऐसे ही आज वहाबियत ज़दा तमाम फिरकों ने यही तरीका बना रखा है अम्बियाए किराम,औलियाए इज़ाम से अगर कोई मोहब्बत करे उन्हें खुदाये तआ़ला की बारगाह में वसीला बनाये उन्हें मद्द के लिये पूकारे तो यह लोग वह कुरआन की आयत पढ़कर सुनाते हैं जो काफिरो मुशरिकों के हक में नाज़िल हुई थी जब के वह बुतों को माबूद जानकर उन्हें पुकारत थे और इनसे मद्द मांगते थे,काफिरो और मुसलमानों के फर्क को नहीं जानते

बुतों और अल्लाह के मुकद्दस बन्दों को एक ही सफ में लाकर खड़ा कर देते हैं।उन्हीं की पहचान हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ि अल्लाहो तआला अन्हुमा ने यह बताई कि वह लोग जो काफिरों पर उनके बुतों के बारे में नाज़िल होने वाली आयतों अहले ईमान पर चस्पां कर देते हैं।

हदीस न03:

हज़रत अली रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो से मरवी है कि रसूल उल्लाह सल्ललाहो अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया अखीर ज़माने में कुछ ऐसे लोग पैदा होंगे जो बाऐतबार उम्र कम होंगे अक़्ल से पैदल होंगे इनकी बातें सबसे बिहतर होंगी ईमान इनके हलक़ से नीचे नहीं उतरेगा दीन से ऐसे निकले हुए होंगे जैसे तीर शिकार से निकल जाता है तो तुम उन्हें जहाँ पाओगे कत्ल करो इनके कत्ल करने में हर कत्ल करने वाले को कयामत के रोज़ सवाब मिलेगा।

बुखारी जिल्द 2 कितालिल खवारिज सफहा 1024

और इसी सफहा पर इसी के बाद की हदीस में यह भी है।यानी तुम लोग अपनी नमाज़ो रोज़ो को इनके नमाज़ और रोज़ो के मुकाबिले निहायत कमतर ख्याल करोगे।

इन अहादीस को सामने रखकर आप गौर करेंगे तो देखेंगे कि वाकई आज बातिल फिरकों में यह निशानियां पाई जाती हैं।इनकी बाते बज़ाहिर बड़ी भली मालूम होती आम तौर से लोग कहते हैं कि उन्होंने बहुत अच्छी-अच्छी बातें बतायीं और हुज़ूर ने इरशाद फरमाया कि वह मखलूक में सबसे बिहतर बातें करेंगे।

नमाज़ रोज़े इस कसरत से अदा करते हैं कि आज वाकई इनकी नमाज़ों और रोज़ों के मुकाबिले में अहले हक खुद को कमतर महसूस करने लगे हैं।

और यह सारी निशानियां वहाबियों देवबंदियों और जमाअते इस्लामी और तबलीग जमाअत वालों में पूरे तरीके से पाई जाती हैं।

इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि इन्सान के ज़ाहिरी नमाज़ रोज़े और दीनदारी की वज़ह से इससे मुतास्सिर नहीं होना चाहिए क्यों यह चीज़े बातिल परस्तों में अहले हक से ज़्यादा करीने कयामत पाई जायेंगी।

और बुखारी शरीफ में ही दूसरी जगह इन लोगों की निशानियां बताते हुये हुज़ूर ने यह भी फरमाया।

हदीस न04:

आँखे धंसी हुई गालों की हड्डी उठी हुई पेशानी उभरी हुई भारी दाढ़ी सर मुंडाये हुए और तहबन्द ऊपर को चढ़ाये हुए हदीस के आंखिर में है।

रसूल सल्ललाहो अलैह वसल्लम ने इरशाद फरमाया इस नस्ल के लोग क़ुरआन करीम की तिलावत तो रो-रो करेंगे मगर इनके गलों से नहीं उतरेगा दीन से ऐसे निकले हुए होंगे जैसे शिकार से तीर हुज़ूर ने इरशाद फरमाया अगर मैं इनका ज़माना पाऊँ तो इन्हे कौम समूद की तरह हलाक व कत्ल करूँ यानी उन्हें बिल्कुल मिटा दूँ।

बुखारी जिल्द 2 किताबुल मग़ाजी सफहा 633

इस हदीस की रौशनी में ऊँचे तहबन्दों पाजामों और मुन्डे सरों से भी बद मज़हबों की पहचान की जा सकती है।

हांलाकि सर मुडांना ऊँचे पाजामें पहनना कोई गुनाह या खिलाफे शरअ़ नहीं है बल्कि सुन्नत से साबित है लेकिन मतलब यह है कि वह लोग इन बातों पर ज़्यादा ज़ोर देंगे और बिल्कुल फर्ज़ ख्याल करेंगे,यहाँ तक कि शेख मोहम्मद इब्ने अब्दुल वह्हाब नजदी के बारे में मशहूर है कि अगर कोई सर न मुंडाये तो वह उस का गला कटवा देता था।

हदीस न05:

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने उमर रज़ि अल्लाहो तआला अन्हो से मरवी है कि रसूल उल्लाह सल्ललाहो अलैह वसल्लम ने दुआ की और अर्ज़ किया ऐ अल्लाह हमारे मुल्के शाम में बरकत दे हमारे यमन में बरकत दे लोगों ने कहा या रसूल उल्लाह और हमारे नजद में?हुज़ूर ने अर्ज़ किया या अल्लाह हमारे शाम में बरकत दे हमारे यमन में बरकत दे लोगों ने अर्ज़ किया या रसूल उल्लाह हमारे नजद में?रावी कहते हैं कि मेरा ख्याल है कि तीसरी बार में आपने फरमाया कि नजद में ज़लज़ले और फितने होंगे और शैतान का सींग वहीं से निकलेगा।

(बुखारी जिल्द 2 किताबुल फितन सफहा 1051)

हज़रात यह नजद जिसके बारे में हुज़ूर ने बजाये खैरो बरकत की दुआ करने के इस इलाके को फितने की ज़मीन फरमाया कि वहां ज़लज़ले और फितने होंगे और शैतान का सींग निकलेगा।इसी ज़मीन में 1115 हि० में शेख मोहम्मद अब्दुल वहाव नजदी पैदा हुआ जिसने वहाबियत और अल्लाह के रसूल सल्ललाहो अलैह वसल्लम और बुर्ज़ुगाने दीन की शान में गुस्ताखियों की बुनियाद डाली,और यह नजदी आज भी इसी मिशन पर क़ायम है,वक़्त गुज़रने के साथ-साथ हिजाज़ मुकद्दस यानी मक्क़ा मुअज्ज़मा और मदीना मुनव्वरा पर भी यह लोग काबिज़ हो गये और इन्होने अपने ज़ेरे तसल्लुत और मकबूज़ा इलाक़े का नाम सऊदी अरब रखा हुआ है और राजधानी सूबा नजद के शहर "रियाद" को बनाया है।और नजद यानी रियाद से यह लोग सारे सऊदी अरब पर हुकूमत करते हैं।जबसे इनकी हुकूमत अरब में हुई तभी से सारी दुनिया में मुसलमान बराबर पिछड़ता जा रहा है।और आलमी सतह पर कौमे मुस्लिम निहायत कमज़ोर हो गई है।बैतुल मुकद्दस पर यहूदियों का कब्ज़ा भी उन्हीं के दौर में हुआ है अहले इस्लाम के नज़दीक सबसे मोहतरम शहर मक्का और मदीना पर हुकूमत करने के लिहाज़ से उन्हें पूरी दुनिया के मुसलमानों की नुमाइन्दगी करनी चाहिए थी इसके बजाये यह लोग अमरीका,बरतानिया और दूसरी इस्लाम दुश्मन

ताकतों के गुलाम और पिट्ठू बन गये हैं और इस्लाम व कुफ़्र की हर जंग में यह बजाये मुसलमानों का साथ देने के अमरीका और बरतानिया ही की मद्द कर रहें हैं उनकी गुलामी का हक़ अदा करते हैं ख्वाह वह अमरीका और ईराक़ की लड़ाई खाड़ी की जंग हो या अफगानिस्तान पर अमेरिकी हमला यह कभी भी मुसलमानों का साथ नहीं देते।और हदीस शरीफ में यह भी गुमराहों की पहचान बताई गई है।

हदीस न06:

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास से मरवी है कि रसूल उल्लाह सल्ललाहो अ़लैह वसल्लम ने (बातिल गिरोह की शनाख्त कराते हुये फरमाया) वह दीन से ऐसे निक्ले हुए होंगे जैसे तीर शिकार से वह मुसलमानों को कत्ल करेंगे और काफिरों को छोड़ेंगे अगर मैं इनका ज़माना पाऊँ तो उन्हे ऐसे हलाक करूँ जैसे कौमे आद हलाक हुई।

बुखारी जिल्द 1 किताबुल अम्बिया सफहा 471

हदीस न07:

हज़रत अबू सईद खुदरी से रिवायत है कि हुजूर सल्ललाहो अ़लैह वसल्लम ने फरमाया कि पूरब की जानिब से कुछ ऐसे लोग ज़ाहिर होंगे जो क़ुरआन पढ़ेंगे लेकिन वह उनके गलों से नीचे नहीं उतरेगा दीन से ऐसे निक्ले होंगे जैसे तीर शिकार से निकल जाता है और वह फिर कभी दीन में दाखिल नहीं होंगे यहाँ तक तीर अपनी जगह वापिस न लौट आये अर्ज़ किया गया हुजूर इनकी पहचान क्या है फरमाया सर मुंण्डाये रखना।

बुखारी जिल्द 2 बाब सफहा 1128

शेख मोहम्मद इब्ने अब्दुल वहाब नजदी का वतन मदीने से पूरब में वाके नजद ही था और वहाबियों के सर मुंण्डाने को ज़रूरी ख्याल करना एक आम और मशहूर बात है।

❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖